Govt. College Birohar, Jhajjar

Azadi ka Amrit Mahotsav

2022-2023

Post Graduate Department of History

Progamme Number 201 to 250

Head of Department
Dr. Amardeep
Assistant Professor in History

201. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 123rd Birth Anniversary of Great Freedom Fighter & Revolutionary Udham Singh on 26.12.2022 and delivered keynote address on "Udham Singh: An Unforgettable of Revolutionary Movement."

दैनिक भास्कर

झज्जर भास्कर 27-12-2022

ऊधम सिंह ने जनरल डायर को मारकर जलियांवाला बाग का बदला लिया था

अमृत महोत्सव शृंखला के तहत राजकीय कॉलेज बिरोहड़ में कार्यक्रम

भास्कर न्यूज | झज्जर

आजादी का अमृत महोत्सव शृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महान क्रांतिकारी एवं स्वतंत्रता सेनानी सरदार ऊधम सिंह की 123वीं जयंती के अवसर पर एक पौधरोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर डॉ. अमरदीप, जितेन्द्र, दीपक, सुरेंद्र सिंह और विद्यार्थियों द्वारा त्रिवेणी लगाई गई। वृक्षारोपण कार्यक्रम के संयोजक व इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि ऊधम सिंह ने भारतीय युवाओं की शक्ति का प्रदर्शन लन्दन में किया और भरी सभा में जनरल माइकलों' ड्वायर को मारकर पूरी ब्रिटिश हुकूमत को हिला कर रख दिया था। 26 दिसम्बर 1899 को पंजाब में जन्में ऊधम सिंह ने बचपन से ही भारत की आजादी का स्वप्न देखा था। जलियांवाला भाग नरसंहार ने उन्होंने आक्रोषित कर दिया और जलियांवाला बाग की मिट्टी हाथ में लेकर कसम खाई थी कि इस नरसंहार के जिम्मेदार जनरल डायर और तत्कालीन पंजाब के गर्वनर माइकलो' डायर को सबक सिखाकर रहूंगा। 1934 में जर्मनी होते हुए इंग्लैंड पहुंच गए और गवर्नर माइकल ओ डायर को मारने के लिए योजना बनाने लगे। 13 मार्च 1940 को रॉयल सेंट्रल एशियन सोसायटी की लंदन के काक्सटन हॉल की मीटिंग में जहां माइकलो' डायर भाषण दे रहे थे, तब ऊधम सिंह ने अपनी किताब में पिस्तौल छिपाकर अंदर ले गए और जनरल डायर को दो गोलियां मारी जिससे उसकी तुरंत मौत हो गई। ब्रिटिश सरकार ने बोखलाकर ऊधम सिंह को फांसी की सजा सुनाई थी। 31 जुलाई 1940 को ऊधम सिंह ने वंदे मातरम और भारत माता की जयकारों के साथ हंसते हंसते फांसी के फंदे को चूमा। इस अवसर पर जितेन्द्र, दीपक, सुरेन्द्र सिंह उपस्थित रहे।

दैनिक जागरण
चरखी दादरी
27.12.2022

ऊधम सिंह ने लिया था जलियांवाला नरसंहार का बदला : अमरदीप

जागरण संवाददाता, चरखी दादरी : आजादी का अमृत महोत्सव शृंखला के तहत गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में क्रांतिकारी एवं स्वतंत्रता सेनानी सरदार उधम सिंह की 123वीं जयंती के अवसर पर पौधारोपण अभियान चलाया गया। डा. अमरदीप, जितेंद्र, दीपक, सुरेंद्र सिंह व विद्यार्थियों ने त्रिवेणी लगाई। डा. अमरदीप ने कहा कि उधम सिंह ने भारतीय युवाओं की शक्ति का प्रदर्शन लंदन में किया और भरी सभा में जनरल माइकल डायर को मारकर पूरी ब्रिटिश हुकूमत को हिला दिया। यह कार्य उन्होंने जलियांवाला बाग नरसंहार का बदला लेने के लिए किया था। 26 दिसंबर 1899 को पंजाब में जन्मे उधम सिंह ने बचपन से ही भारत की आजादी का स्वप्न देखा था। जलियांवाला भाग नरसंहार ने उनको आक्रोशित कर दिया और जलियांवाला बाग की मिट्टी हाथ में लेकर कसम खाई थी कि इस नरसंहार के जिम्मेदार जनरल डायर और तत्कालीन पंजाब के गवर्नर माइकल ओज डायर को सबक सिखाएंगे। 1934 में जर्मनी होते हुए इंग्लैंड पहुंच गए। 13 मार्च 1940 को रायल सेंट्रल एशियन सोसाइटी की लंदन के काक्सटन हाल की बैठक में माइकल ओज डायर भाषण दे रहे थे तब उधम सिंह अपनी किताब में पिस्तौल छिपाकर अंदर ले गए और जनरल डायर को दो गोलियां मारकर बदला दिया।

अमर उजाला, झज्जर 27.12.2022

शहीद उधम सिंह ने लिया था बदला

साल्हावास । आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोतर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महान क्रांतिकारी एवं स्वतंत्रता सेनानी सरदार उधम सिंह की 123वीं जयंती के अवसर पर एक पौधरोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर डॉ. अमरदीप, जितेंद्र, दीपक, सुरेंद्र सिंह और विद्यार्थियों द्वारा त्रिवेणी लगाई गई। पौधरोपण कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि ऊधम सिंह ने भारतीय युवाओं की शक्ति का प्रदर्शन लंदन में किया और भरी सभा में जनरल माइकल ओ' ड्वायर को मारकर पूरी ब्रिटिश हुकूमत को हिला कर रख दिया था। 31 जुलाई 1940 को उधम सिंह ने वंदे मातरम और भारतमाता की जयकारों के साथ हंसते-हंसते फांसी के फंदे को चूमा और भारत की आजादी के संघर्ष में शहीद हो गया। इस अवसर पर जितेन्द्र, दीपक, सुरेंद्र सिंह इत्यादि उपस्थित रहे। संवाद

अमर उजाला, चरखी दादरी 27.12.2022

ऊधम सिंह जयंती पर किया पौधरोपण

चरखी दादरी। बिरोहड़ राजकीय महाविद्यालय में स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महान क्रांतिकारी एवं स्वतंत्रता सेनानी सरदार ऊधम सिंह की 123वीं जयंती मनाई गई।

इस अवसर पर पौधरोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। डॉ. अमरदीप, जितेंद्र, दीपक, सुरेंद्र सिंह और विद्यार्थियों ने महाविद्यालय प्रांगण में त्रिवेणी लगाई। कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप, जितेंद्र, दीपक व सुरेंद्र सिंह ने ऊधम सिंह को नमन किया। संवाद

202. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 191st Birth Anniversary of Great Freedom Fighter Fatima Sheikh on 09.01.2023 and delivered keynote address on "First Muslim Teacher: Fatima Sheikh- An Untold Story."

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 10.01.2023

नारी शिक्षा की अलख जगाने वाली शिक्षिका फातिमा शेख ने निभाई अद्वितीय भूमिका : डा. अमरदीप

- भारत की प्रथम मुस्लिम शिक्षिका फातिमा शेख की जयंती पर कार्यक्रम
- सामाजिक बदलाव के लिए सावित्री बाई व ज्योतिबा फुले का साथ दिया

बिरोहड़ के सरकारी कालेज मे फातिमा शेख के बारे मे बताते डा. अमरदीप। ● विज्ञप्ति

जागरण संवाददाता, चरखी दादरी : आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में सोमवार को आधुनिक भारत की प्रथम मुस्लिम शिक्षिका फातिमा शेख की 191वीं जयंती के अवसर पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम संयोजक डा. अमरदीप ने कहा कि नारी शिक्षा की अलख जगाने वाली फातिमा शेख ने सामाजिक सुधार में अद्वितीय भूमिका निभाई थी। फातिमा शेख का जन्म 9 जनवरी 1831 में पुणे में हुआ था। शुरुआत से ही क्रांतिकारी विचारों वाली फातिमा शेख ने सामाजिक बदलाव की मुहिम में सावित्री बाई फुले और ज्योतिबा फुले का साथ दिया। फातिमा शेख ने सावित्री और ज्योतिबा फुले को उस समय अपने घर में शरण दी जब उन दोनों को कट्टरपंथियों ने घर से निकाल दिया था। फातिमा शेख ने इसके साथ साथ उन्हें 1848 में लड़कियों के विद्यालय के लिए जगह भी दी और साथ ही सावित्री बाई फुले द्वारा स्थापित पांचों विद्यालय में अध्यापिका के रूप में शिक्षण कार्य भी किया। फातिमा शेख ने समाज के वंचित वर्ग, महिलाओं के उत्थान के लिए शिक्षा को एक बड़ा हथियार माना और घर घर जाकर हिंदू और मुस्लिम समाज को जगाने का कार्य किया। इस मौके पर प्रोफेसर जितेंद्र ने भी अपने विचार रखे।

अमर उजाला, चरखी दादरी 10.01.2023

भारत की पहली मुस्लिम शिक्षिका थीं फातिमा शेख : डॉ. अमरदीप

चरखी दादरी। बिरोहड़ स्थित राजकीय महाविद्यालय में भारत की प्रथम मुस्लिम शिक्षिका फातिमा शेख की 191वीं जयंती पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के संयोजक और मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप रहे।

उन्होंने कहा कि नारी शिक्षा की अलख जगाने वाली फातिमा शेख ने सामाजिक सुधार में अद्वितीय भूमिका निभाई थी। उन्होंने फातिमा शेख के जीवनी का वर्णन करते हुए कहा कि फातिमा ने सामाजिक बदलाव की मुहिम में सावित्री बाई फुले और ज्योतिबा फुले के साथ कंधे से कंधा मिलाकर बड़ी भूमिका निभाई। उन्होंने बताया कि फातिमा ने सावित्री बाई फुले द्वारा स्थापित पांचों विद्यालयों में अध्यापिका के रूप में शिक्षण कार्य भी किया। फातिमा शेख पहली ऐसी मुस्लिम शिक्षिका थीं जिसने महिलाओं के उत्थान के लिए हिंदू और मुस्लिम समाज को जगाने का कार्य किया। उन्होंने कहा कि वर्तमान में महिलाओं का योगदान हर क्षेत्र में देखने को मिलता है। संवाद

203. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 159th Birth Anniversary of Great Freedom Fighter and Social Reformer Swami Vivekananda on 12.01.2023 and delivered keynote address on "Swami Vivekananda and Youth of Modern India."

दैनिक भास्कर झज्जर भास्कर 13-01-2023

आजादी अमृत महोत्सव शृंखला के तहत राजकीय कॉलेज बिरोहड़ में हुआ कार्यक्रम

स्वामी विवेकानंद युवाओं से लक्ष्य निर्धारित करने का आह्वान करते थे

भास्कर न्यूज | झज्जर

आजादी अमृत महोत्सव शृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के यूथ रेड क्रॉस और स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के संयुक्त तत्वावधान में राष्ट्रीय युवा दिवस एवं स्वामी विवेकानंद की 159वीं जयंती के अवसर पर एक पौधरोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर डॉ. अमरदीप, डॉ. प्रदीप कुंडू, राजेश कुमार, जितेन्द्र, अजय सिंह, मिर्नाल दहिया, दीपक, पूर्ण सिंह, ओमबीर इत्यादि द्वारा वृक्षारोपण किया गया। वृक्षारोपण कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि स्वामी विवेकानंद ने युवाओं को स्वयं को जानने और जीवन का लक्ष्य निर्धारित करने का आह्वान किया था, जो आज भी उतना ही सार्थक है। स्वामी विवेकानंद ने राष्ट्रीय आन्दोलन को बहुआयामी तरीके से प्रभावित किया। उन्होंने न केवल ब्रिटिश पराधीनता की मुखालफत की बल्कि भारतीय के नैतिक और सांस्कृतिक विकास पर भी उतना ही बल दिया। उनकी दरिद्र नारायण की संकल्पना स्पष्ट करती है भारत के हर व्यक्ति की सुसंगत भागीदारी राष्ट्र के विकास एवं उन्नति के लिए आवश्यक है। स्वामी विवेकानंद युवाओं के प्रेरणा स्रोत हैं और स्वामी विवेकानंद के विचार, उनका जीवन दर्शन आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान था। उन्होंने युवाओं को आह्वान किया कि वे अपनी असीम उर्जा को पहचानते हुए सकारात्मक दृष्टि के साथ समाज और संस्कृति संस्कृति का नव निर्माण करना चाहिए। इस अवसर पर डॉ. प्रदीप कुंडू, राजेश कुमार, जितेन्द्र, अजय सिंह, मिर्नाल , ओमबीर उपस्थित रहे।

स्वामी विवेकानंद जी की जयंती पर कॉलेज में पौधारोपण करते हुए प्रोफेसर।

अमर उजाला, झज्जर 13.01.2023

विवेकानंद जयंती मनाई, युवाओं को पर्यावरण संरक्षण की दी सीख

साल्हावास। आजादी का अमृत महोत्सव कड़ी के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के यूथ रेडक्रॉस और स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के संयुक्त तत्वावधान में राष्ट्रीय युवा दिवस एवं स्वामी विवेकानंद की 159 वीं जयंती के अवसर पर एक पौधरोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया।

इस अवसर पर डॉ. अमरदीप, डॉ. प्रदीप कुंडू, राजेश कुमार, जितेंद्र, अजय सिंह, मिर्नाल दहिया, दीपक, पूर्ण सिंह, ओमबीर इत्यादि द्वारा पौधरोपण किया गया। कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डा. अमरदीप ने कहा कि स्वामी विवेकानंद ने युवाओं को स्वयं को जानने और जीवन का लक्ष्य निर्धारित करने का आह्वान किया था, जो आज भी उतना ही सार्थक है। स्वामी विवेकानंद ने राष्ट्रीय आन्दोलन को बहुआयामी तरीके से प्रभावित किया।

इस अवसर पर डॉ. प्रदीप कुंडू, राजेश कुमार, जितेन्द्र, अजय सिंह, मिर्नाल दहिया, दीपक, पूर्ण सिंह, ओमबीर इत्यादि उपस्थित रहे। संवाद

पौधरोपण करते स्टाफ सदस्य। संवाद

अमर उजाला, चरखी दादरी 13.01.2023

स्वामी विवेकानंद जयंती पर किया पौधरोपण

चरखी दादरी। बिरोहड़ राजकीय महाविद्यालय में स्वामी विवेकानंद जयंती पर पौधरोपण मुहिम चलाई गई। अभियान में यूथ रेडक्रॉस व स्नातकोत्तर इतिहास विभाग का सहयोग रहा। डॉ. अमरदीप, डॉ. प्रदीप कुंडू, राजेश कुमार, जितेंद्र, अजय सिंह, मिर्नाल दहिया, दीपक, पूर्णसिंह, ओमबीर ने पौधरोपण किया। डॉ. अमरदीप ने कहा कि स्वामी विवेकानंद ने युवाओं को स्वयं को जानने और जीवन का लक्ष्य निर्धारित करने का आह्वान किया, जो आज भी उतना ही सार्थक है। संवाद

204. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 107th Birth Anniversary of Great Freedom Fighter Yashwant Agarwadekar on 16.01.2023 and delivered keynote address on “Yashwant Agarwadekar and His Contribution in Freedom Struggle.”

व एसपी वसीम अकरम ... प्रस्तावित स्थल का नि... डीसी शक्ति सिंह ... रने के निर्देश दिए। ... दादरी तोए में जाम ... निरंतर सामने आ रही

अमर उजाला, झज्जर 17.01.2023

‘गोवा की आजादी के लिए यशवंत अग्रवाड़ेकर का योगदान महत्वपूर्ण’

राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में मनाई क्रांतिकारी यशवंत अग्रवाडेकर की 104 वीं जयंती

संवाद न्यूज एजेंसी

महान क्रांतिकारी यशवंत अग्रवाड़ेकर की 104वीं जयंती के अवसर पर कार्यक्रम में बोलते वक्ता। संवाद

साल्हावास । आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में आधुनिक भारत की महान क्रांतिकारी यशवंत अग्रवाडेकर की 104 वीं जयंती के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के संयोजक और मुख्य वक्ता डॉ अमरदीप, इतिहास विभागाध्यक्ष ने कहा कि गोवा की आजादी के आंदोलन में यशवंत अग्रवाड़ेकर ने क्रांतिकारी भूमिका निभाई थी। यशवंत अग्रवाडेकर का जन्म 15 जनवरी 1918 को गोवा के सियोलिम ग्राम में हुआ था। प्रारम्भ से ही उन्होंने आजादी की आवाज को बुलन्द करना शुरू कर दिया था। धीरे धीरे उन्होंने गोवा सरकार के कार्यों पर सवाल उठाने शुरू किये और पुर्तगाली पुलिस की दृष्टि में यशवंत अग्रवाडेकर इतने खतरनाक क्रांतिकारी थे कि उनकी गिरफ्तारी के लिए पुर्तगाल सरकार ने पांच हजार रूपए का पुरस्कार घोषित किया था। उन्होंने कई मुठभेड़ों में पुलिस को भारी जनहानि पहुंचाई थी। इसी समय पर राम मनोहर लोहिया, आजाद गोमांतक दल, राष्ट्रीय कांग्रेस और अन्य सेनानियों ने पुर्तगाली औपनिवेशिक शासन के खिलाफ आंदोलन शुरू किया था। 1955 में गोवा में पुर्तगाली शासन के खिलाफ आन्दोलन को तेजी मिलने लगी और अनेक स्वतंत्रता सेनानियों ने बलिदान दिए। यसवंत आजाद गोमांतक दल के बहुत उग्र क्रांतिकारी थे।17 दिसम्बर 1958 को अनजुना जंगल में यशवंत की मुठभेड़ गोवा पुलिस से हुई और अंत में उन्हें वीरगति प्राप्त हुई और इस प्रकार गोवा की आजादी के लिए उन्होंने अपना सर्वोच्च बलिदान दिया। यशवंत अग्रवाड़ेकर का बलिदान आज भी युवाओं के लिए प्रेरणास्रोत है। इस कार्यक्रम में डॉ नरेंद्र सिंह, जितेंद्र, मंजू कुमारी, इत्यादि उपस्थित रहे।

205. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 425th Birth Anniversary of Great King of Medieval India Maharana Pratap on 19.01.2023 and delivered keynote address on "Impact of Maharana Pratap on Freedom Struggle of India."

अमर उजाला, झज्जर 19 जनवरी 2023

कार्यक्रम

राजकीय महाविद्यालय बिरोहड में पुण्यतिथि पर हुआ विस्तृत व्याख्यान का आयोजन

महाराणा प्रताप के डर से कांपती थी ब्रिटिश हुकूमत : डॉ. अमरदीप

संवाद न्यूज एजेंसी

सालहावास । राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महाराणा प्रताप की 425 वीं पुण्यतिथि के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के संयोजक और मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप, इतिहास विभागाध्यक्ष ने कहा कि महाराणा प्रताप के जीवन संघर्ष ने भारतीय संस्कृति पर अमिट छाप छोड़ी है। अपने राज्य एवं जनता की भलाई के लिए दुश्मन से कड़ी टक्कर लेना और उसके सामने घुटने टेकने के बजाय अपने वजूद को स्वतंत्र रखने के लिए अंतिम सांस तक संघर्ष किया। महाराणा प्रताप

बिरोहड़ कॉलेज में व्याख्यान देते डॉ. अमरदीप।

की जीवटता और विराटता ने भारतीय आजादी के आंदोलन को अत्यधिक प्रभावित किया7 उनके जीवन और संघर्ष ने न केवल अहिंसावादी नेताओं को प्रभावित किया बल्कि क्रांतिकारी आंदोलन में नए प्राण डाले। इसके साथ साथ स्वाधीनता संग्राम के समय भारतीय जनमानस को महाराणा प्रताप के जीवन ने बड़ी से बड़ी ताकत का सामना खुलंद हौसलों से करना सिखाया। मेवाड़ को जीतने के लिए अकबर ने कई प्रयास किए। अकबर चाहता था कि महाराणा प्रताप अन्य राजाओं की तरह उसके कदमों में झुक जाए। महाराणा प्रताप ने भी अकबर की अधीनता को स्वीकार नहीं किया था। अजमेर को अपना केंद्र बनाकर अकबर ने प्रताप के विरुद्ध सैनिक अभियान शुरू कर दिया। महाराणा प्रताप ने कई वर्षों तक मुगलों के सम्राट अकबर की सेना के साथ संघर्ष किया। मेवाड़ की धरती को मुगलों के आतंक से बचाने के लिए महाराणा प्रताप ने वीरता और शौर्य का परिचय दिया।महाराणा प्रताप की वीरता ऐसी थी कि उनके दुश्मन भी उनके युद्ध-कौशल के कायल थे। उदारता ऐसी कि दूसरों की पकड़ी गई मुगल बेगमों को सम्मानपूर्वक उनके पास वापस भेज दिया था। इस योद्धा ने साधन सीमित होने पर भी दुश्मन के सामने सिर नहीं झुकाया और जंगल के कंद-मूल खाकर लड़ते रहे। माना जाता है कि इस योद्धा की मृत्यु पर अकबर की आंखें भी नम हो गई थीं। अकबर ने भी कहा था कि देशभक्त हो तो ऐसा हो। महाराणा प्रताप के जीवन से प्रेरित होकर भारतीयों ने ब्रिटिश सत्ता द्वारा किये जा रहे शोषण के खिलाफ आवाज उठाई और आजादी की लड़ाई में निर्णायक जीत प्राप्त की। इस अवसर पर सहायक प्रोफेसर डा. नरेंद्र सिंह, जितेंद्र और मंजू कुमारी इत्यादि उपस्थित रहे।

गलत धारणाएं हैं जो इस प्रकार के तांकि किसी रोगी को सही सम

दैनिक जागरण चरखी दादरी 19.01.23

जनमानस में वीरता का संचार किया महाराणा प्रताप ने : डा. अमरदीप

जागरण संवाददाता, चरखी दादरी : आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में बुधवार को महाराणा प्रताप की 425वीं पुण्यतिथि के अवसर पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के संयोजक डा. अमरदीप ने कहा कि महाराणा प्रताप के जीवन संघर्ष ने भारतीय संस्कृति पर अमिट छाप छोड़ी है। अपने राज्य एवं जनता की भलाई के लिए दुश्मन से कड़ी टक्कर लेना और उसके सामने घुटने टेकने के बजाय अपने वजूद को स्वतंत्र रखने और इसके लिए अंतिम सांस तक अटूट संघर्ष की भावना का संदेश हमें महाराणा प्रताप के जीवन से मिलता है। महाराणा प्रताप की जीवटता और विराटता ने भारतीय आजादी के आंदोलन को अत्यधिक प्रभावित किया। उनके जीवन और संघर्ष ने ना केवल अहिंसावादी नेताओं को प्रभावित किया बल्कि क्रांतिकारी आंदोलन में जान डाली। स्वाधीनता संग्राम के समय भारतीय जनमानस को महाराणा प्रताप के जीवन ने बड़ी से बड़ी ताकत का सामना बुलंद हौसलों से करना सिखाया। महाराणा प्रताप के जीवन से प्रेरित होकर भारतीयों ने ब्रिटिश सत्ता द्वारा किए जा रहे शोषण के खिलाफ आवाज उठाई। इस अवसर पर सहायक प्रोफेसर डा. नरेंद्र सिंह, जितेंद्र और मंजू भी उपस्थित रहीं।

गांव बिरोहड के सरकारी कालेज में महाराणा प्रताप के बारे में बताते डा. अमरदीप। • विज्ञप्ति

206. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 126th Birth Anniversary of Great Freedom Fighter Subhash Chandra Bose on 23.01.2023 and delivered keynote address on "Role of Subhash Chandra Bose in Freedom Struggle."

दैनिक भास्कर झज्जर भास्कर 24-01-2023

पूरा भारत 'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हे आजादी दूंगा" के नारों से गूंज उठा था

आजादी का अमृत महोत्सव शृंखला के तहत नेताजी सुभाषचंद्र बोस की 126वीं जयंती मनाई

भास्कर न्यूज | झज्जर

आजादी का अमृत महोत्सव शृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महाविद्यालय प्राचार्य डॉ. रणवीर सिंह आर्य के निर्देशन में भारत के महान सपूत एवं महान स्वतंत्रता सेनानी नेताजी सुभाषचंद्र बोस की 126वीं जयंती के अवसर पर एक विशेष सेमिनार का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के संयोजक और मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप, इतिहास विभागाध्यक्ष ने कहा कि दुसरे विश्व युद्ध के दौरान आजाद हिंद फौज खड़ी करके नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने भारत की आजादी के लिए विराट कार्य किया और भारतीयों में जोश पैदा करने और देश के लिए मर मिटने की भावना जगाने के लिए उन्होंने 'तुम मुझे खून दो, मै तुम्हे आजादी दूंगा" का नारा दिया। सुभाषचंद्र बोस का व्यक्तित्व इसी बात से स्पष्ट झलकता है जब वे अपने सारी सुख सुविधाएं छोड़कर भारत भूमि को स्वतंत्र करवाने के एकमात्र लक्ष्य के लिए अफगानिस्तान, रूस, जर्मनी, जापान, सिंगापुर, बर्मा इत्यादि को अपने कदमों से नाप दिया। "दिल्ली चलो और जयहिंद" का उद्घोष आज भी हर भारतीय रोमांचित कर देता है। 23 जनवरी 1897 को वर्तमान ओडिशा के कटक में जन्मे बोस बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि के स्वामी थे जिसकी बदौलत उन्होंने आईसीएस की कठिनतम परीक्षा पास की, परन्तु देश सेवा के दीवाने सुभाषचंद्र बोस ने ब्रिटिश नौकरी छोड़ दी और आज़ादी की भावना मन में लिए भारतीय राजनीति में कूद पड़े। उन्होंने 1939 में महात्मा गांधी समर्थित पट्टाभि सीतारमैया को कांग्रेस अध्यक्ष के पद के चुनाव में हरा दिया था, परन्तु बाद में महात्मा गांधी के लिए त्यागपत्र भी दे दिया। इस विशेष सेमिनार में प्रोफेसर ओमबीर, पवन कुमार, जितेन्द्र, और डॉ. प्रदीप कुमार उपस्थित रहे।

राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग में कार्यक्रम के दौरान छात्रों को जानकारी देते हुए।

अमर उजाला, झज्जर 24.01.2023

तुम मुझे खून दो, के नारे से गूंज उठा था भारत

बिरोहड़ कॉलेज में नेताजी सुभाष चंद्र बोस पर विशेष सेमिनार का आयोजन

संवाद न्यूज एजेंसी

साल्हावास। आजादी का अमृत महोत्सव के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में कार्यक्रम हुआ। महाविद्यालय प्राचार्य डॉ. रणबीर सिंह आर्य के निर्देशन में भारत के महान सपूत एवं स्वतंत्रता सेनानी नेताजी सुभाषचंद्र बोस की 126वीं जयंती पर विशेष सेमिनार का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के संयोजक और मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप, इतिहास विभागाध्यक्ष ने नेताजी के बारे में विद्यार्थियों को जानकारी दी और छात्रों को प्रेरित किया।

बिरोहड़ में सुभाषचंद्र बोस की जयंती पर व्याख्यान देते डॉ. अमरदीप सिंह। संवाद

उन्होंने कहा कि दूसरे विश्व युद्ध के दौरान आजाद हिंद फौज खड़ी करके नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने भारत की आजादी के लिए विराट कार्य किया। भारतीयों में जोश पैदा करने और देश के लिए मर मिटने की भावना जगाने के लिए उन्होंने तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा.. का नारा दिया। जिससे संपूर्ण भारत गूंज उठा। सुभाषचंद्र बोस का व्यक्तित्व इसी बात से स्पष्ट झलकता है उन्होंने अपने सारी सुख सुविधाएं छोड़कर भारत भूमि को स्वतंत्र करवाने के एकमात्र लक्ष्य के लिए अफगानिस्तान, रूस, जर्मनी, जापान, सिंगापुर, बर्मा इत्यादि को अपने कदमों से नाप दिया। दिल्ली चलो और जयहिंद का उद्घोष आज भी हर भारतीय रोमांचित कर देता है। 23 जनवरी 1897 को वर्तमान ओडिशा के कटक में जन्मे बोस बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि के स्वामी थे जिसकी बदौलत उन्होंने आईसीएस की कठिनतम परीक्षा पास की। परंतु देश सेवा के दीवाने सुभाषचंद्र बोस ने ब्रिटिश नौकरी छोड़ दी और आजादी की भावना मन में लिए भारतीय राजनीति में कूद पड़े। उनकी प्रसिद्धि का आलम था कि उन्होंने 1939 में महात्मा गांधी समर्थित पट्टाभि सीतारमैया को कांग्रेस अध्यक्ष के पद के चुनाव में हरा दिया था, परंतु बाद में महात्मा गांधी के लिए त्यागपत्र भी दे दिया। सुभाषचंद्र बोस का जीवन हर भारतीय के लिए प्रेरणास्रोत है और उनकी राष्ट्रीयता की भावना आज भी हमारा मार्गदर्शन करती है। उनके सपनों को साकार करें। सेमिनार में प्रोफेसर ओमबीर, पवन कुमार, जितेंद्र, और डॉ. प्रदीप कुमार इत्यादि उपस्थित रहे।

'करिश्माई नारों से आजादी की लड़ाई को नेताजी की ने दी थी नई ऊर्जा'

साल्हावास। गांव चडु स्थित राजकीय महाविद्यालय के इतिहास विभाग की तरफ से आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जयंती के ऊपर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य प्रवक्ता महाविद्यालय के प्रशासनिक अधिकारी डॉ. जितेंद्र कुमार भारद्वाज और संयोजक नरेंद्र कुमार रहे। उन्होंने बताया कि तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा, जय हिंद, दिल्ली चलो जैसे करिश्माई नारों से देश की आजादी की लड़ाई को नई ऊर्जा देने वाले नेताजी सुभाष चंद्र बोस की आज 126वीं जयंती है। नेताजी का जय हिंद का नारा भारत का राष्ट्रीय नारा बन गया। उन्होंने सिंगापुर के टाउन हॉल के सामने सुप्रीम कमांडर के रूप में भारत को संबोधित करते हुए दिल्ली चलो का नारा दिया। गांधी जी को राष्ट्रपिता कहकर सुभाष चंद्र बोस ने ही संबोधित किया था। चुनौतीपूर्ण सिविल सर्विसेज एग्जाम चौथी रैंक से पास करने के बावजूद वह चाहते तो आरामदायक जीवन बिता सकते थे, लेकिन देश भक्ति के जुनून और मुल्क को अंग्रेजों के चंगुल से आजाद कराने की दिली तमन्ना ने उन्हें ऐसा करने से रोक दिया। जलियांवाला बाग हत्याकांड ने उन्हें इस कदर विचलित कर दिया कि वह आजादी की लड़ाई में कूद पड़े। नेताजी सुभाष चंद्र बोस भारत के उन महान स्वतंत्रता सेनानियों में शामिल है जिनसे आज के दौर का युवा वर्ग प्रेरणा लेता है। देश के स्वाधीनता आंदोलन के नायकों में से एक नेता जी की जीवनी, उनके विचार और उनका कठोर त्याग आज के युवाओं के लिए बेहद प्रेरणादायक है। डॉक्टर सुनील कुमार ने बताया कि नेता जी ने आजादी की लड़ाई में महिलाओं की लक्ष्मीबाई नाम की ब्रिगेड भी खड़ी की थी और देश की महिलाओं को आजादी की लड़ाई में अपना योगदान देने के लिए आह्वान किया था। कार्यक्रम के संयोजक नरेंद्र कुमार ने बताया कि नेताजी के मन में कोई संदेह नहीं था कि हमारे देश की प्रमुख समस्याएं गरीबी, अशिक्षा, बीमारी, कुशल उत्पादन एवं वितरण सिर्फ समाजवादी तरीके से ही दूर किया जा सकता है। नेता जी ने कभी गलत के साथ समझौता नहीं किया और अपराध और अन्याय को नहीं सहा। भारत माता के वीर सपूत की जयंती को भारत सरकार आज पराक्रम दिवस के तौर पर मना रही है। इस अवसर पर महाविद्यालय के डॉ. मोहन कुमार, डॉ. सुखबीर सिंह, प्रो. आदित्य गोयल डॉ. रविंद्र सिंह प्रो. सुचित्रा आदि सभी स्टाफ सदस्य और विद्यार्थी गण मौजूद रहे। संवाद

207. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 74th Republic Day on 26.01.2023 and delivered keynote address on "Importance of Republic Day and Its History."

26 जनवरी 1950 को एक समतामूलक एवं आधुनिक भारत का उदय हुआ था : डॉ. अमरदीप

डॉ. अमरदीप ने चतुर्थ श्रेणी के सभी कर्मचारियों को गणतन्त्र दिवस के उपलक्ष्य पर उपहार देकर सम्मानित किया

झज्जर, 26 जनवरी (अभीतक) : वीरवार को 74 वें गणतंत्र दिवस पर राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में ध्वजारोहण का कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर इतिहास विभागाध्यक्ष एवं कार्यक्रम के संयोजक डॉ अमरदीप ने कहा कि 26 जनवरी 1950 को एक समतामूलक एवं आधुनिक भारत का उदय हुआ था जिसने हर प्रकार की गैरबराबरी और भेदभाव को सैधांतिक रूप से समाप्त करते हुए नये संविधान को लागू करके विश्व में अनूठी पहल स्थापित की थी। आजादी के आंदोलन से लेकर देश में संविधान लागू होने तक, 26 जनवरी की तारीख का अपना अलग विलक्षण महत्व रहा है। 31 दिसंबर 1929 को कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन में जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में प्रस्ताव पारित कर भारत के लिए पूर्ण स्वराज की मांग की गई थी और 26 जनवरी 1930 को पहली बार पुरे भारत में स्वतंत्रता दिवस मनाया गया। कार्यक्रम के अध्यक्ष और महाविद्यालय प्राचार्य डा. रणबीर सिंह आर्य ने युवाओं को संदेश दिया कि उन्हें राष्ट्रभक्तों और क्रांतिकारियों के सिद्धांतों एवं आदर्शों पर चलना चाहिए। महाविद्यालय की प्रशासनिक अधिकारी डा. अनीता रानी ने कहा कि भारत का गणतन्त्र दिवस उसके इतिहास को जानने के साथ वर्तमान शक्ति और शौर्य के प्रदर्शन का आयोजन भी है। इस अवसर पर डॉ. अमरदीप ने चतुर्थ श्रेणी के सभी कर्मचारियों को गणतन्त्र दिवस के उपलक्ष्य पर उपहार देकर सम्मानित किया। इस अवसर पर सभी स्टाफ

208. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 126th Birth Anniversary of Great Freedom Fighter Subhash Chandra Bose on 23.01.2023 and delivered keynote address on "Role of Subhash Chandra Bose in Freedom Struggle."

अमर उजाला, झज्जर 31.01.2023

महात्मा गांधी ने आजादी के आंदोलन को बनाया था जन आंदोलन : डॉ. अमरदीप

संवाद न्यूज एजेंसी

साल्हावास। आजादी के अमृत महोत्सव के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 75वीं पुण्यतिथि के अवसर पर एक विशेष सेमिनार का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के संयोजक और मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप, इतिहास विभागाध्यक्ष ने कहा कि महात्मा गांधी ने आजादी के आंदोलन को जन आंदोलन बनाकर नई जान फूंकी थी। महात्मा गांधी का जीवन त्याग और संघर्ष को समर्पित था।

डॉ. अमरदीप ने कहा कि गांधी जी ने सत्य और अहिंसा के मार्ग पर चलकर पूरी दुनिया को नया रास्ता दिखाया और उपनिवेशवाद, साम्राज्यवाद के खिलाफ बुनियादी लड़ाई में अविस्मरणीय भूमिका निभाई। 1920 के असहयोग आंदोलन के माध्यम से ब्रिटिश सरकार के खिलाफ मोर्चा खोलकर पहली बार अंग्रेजों को भारतीय शक्ति का परिचय करवाया।

वहीं नमक जैसी छोटी सी लगनी वाली वस्तु के माध्यम से विशालतम सविनय अवज्ञा आंदोलन खड़ा करके उन्होंने ब्रिटिश सरकार को घुटनों पर ला दिया था। जिसके कारण 5 मार्च 1931 को वायसराय लार्ड इरविन को महात्मा गांधी के साथ समझौता करना पड़ा। आजादी के लिए मर मिटने का नारा देकर अगस्त 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन चलाकर करो या मरो का नारा दिया और आजादी प्राप्त करने का शंखनाद किया जिससे अंग्रेज बौखला गये थे।

1947 में भारत आजाद हुआ। परंतु नाथूराम गोडसे और अन्य ने 30 जनवरी 1948 को महात्मा गांधी की हत्या कर दी। जिससे भारत में एक काले अध्याय के रूप में याद किया जाता है। महात्मा गांधी का सत्य और अहिंसा का मार्ग आज भी समस्त दुनिया का मार्गदर्शन कर रहा है।

गांव बिरोहड़ के कॉलेज में महात्मा गांधी पर व्याख्यान देते डॉ. अमरदीप। संवाद

भट्ठा श्रमिकों के बच्चों के साथ मनाया शहीदी दिवस

झज्जर। सामाजिक संस्था सेवा ट्रस्ट यूके इंडिया एवं इंडेप्थ विजन फाउंडेशन के ने नेहरू युवा केंद्र के सांझा तत्वावधान में शहीदी दिवस का आयोजन बेरी रोड स्थित भट्ठे की बुनियाद पाठशाला पर किया गया। जिसमें ईंट भट्ठे पर रहने वाले बच्चों को शिक्षा के महत्व से अवगत कराया गया तथा देश के शहीदों के बारे में जानकारी प्रदान की गई। जिला युवा अधिकारी बृजेश कौशिक एवं इंडेप्थ विजन फाउंडेशन से विकास कौशिक ने बताया कि प्रतिवर्ष तीस जनवरी को शहीदी दिवस मनाया जाता है। इस मौके पर सभी ने देश की महान विभूतियों एवं शहीदों के सम्मान में दो मिनट का मौन भी रखा। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की हत्या तीस जनवरी 1948 को शाम की प्रार्थना के दौरान बिड़ला हाउस में नाथूराम गोडसे द्वारा की गई थी। तीस जनवरी को बापू ने अंतिम सांस ली और शहीद हो गए। सरकार ने इस दिन को शहीद दिवस के रूप में घोषित किया। संवाद

महात्मा गांधी की पुण्यतिथि पर गांव सांखोल निवासियों को दिया स्वच्छता का संदेश

बहादुरगढ़। वैश्य बीएड कॉलेज की ओर से एनएसएस कैंप महाविद्यालय द्वारा गोद लिए हुए गांव सांखोल में आयोजित किया गया। इसका उद्देश्य स्वच्छता रखा गया। 30 जनवरी 1948 को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की नाथूराम गोडसे ने गोली मारकर हत्या की थी। सोमवार को उनकी 75वीं पुण्यतिथि थी। महात्मा गांधी ने अपने आसपास के लोगों को स्वच्छता बनाए रखने संबंधी शिक्षा प्रदान कर राष्ट्र को एक उत्कृष्ट संदेश दिया था। प्राचार्या डॉ. आशा शर्मा ने कहा कि राष्ट्रीय सेवा योजना की शुरूआत गांधी के जन्म के शताब्दी वर्ष में हुई, क्योंकि गांधी जी का कहना था कि देश की सेवा में युवाओं की भागीदारी जरूरी है। इन्हीं बातों को ध्यान में रखकर एनएसएस कैंप आयोजित किया गया। इसकी शुरूआत मां सरस्वती के समक्ष द्वीप प्रज्ज्वलित कर की गई। दो मिनट का मौन रखा गया। संवाद

दैनिक भास्कर **झज्जर भास्कर 31-01-2023**

महात्मा गांधी ने दुनिया को नया रास्ता दिखाया

झज्जर | बिरोहड़ गांव स्थित राजकीय महाविद्यालय में स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस ने महान स्वतंत्रता सेनानी महात्मा गांधी की 75वीं पुण्यतिथि पर विशेष सेमिनार की। अमृत महोत्सव श्रृंखला में आयोजित इस सेमिनार में मुख्य वक्ता इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि महात्मा गांधी ने आजादी के आंदोलन को जन आंदोलन बनाकर नई जान फूंकी थी। महात्मा गाधी का जीवन त्याग और संघर्ष को समर्पित था। उन्होंने सत्य और अहिंसा के मार्ग पर चलकर पूरी दुनिया को नया रास्ता दिखाया। इस दौरान प्राचार्य डॉ. रणवीर सिंह आर्य, उपनिवेशवाद, साम्राज्यवाद के खिलाफ बुनियादी लड़ाई में अविस्मरणीय भूमिका निभाई। इस अवसर पर प्रोफेसर पवन कुमार, अजय सिंह, ओमबीर उपस्थित रहे।

209. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 119th Birth Anniversary of Great Freedom Fighter and Social Reformer Mahashya Bhikkhu Lal on 01.02.2023 and delivered keynote address on "Role of Subhash Chandra Bose in Freedom Struggle."

अमर उजाला, झज्जर, हरियाणा 02.02.2023

सेमिनार

राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में स्वतंत्रता सेनानी महाशय भीखू लाल की 119 वीं जयंती के अवसर पर कार्यक्रम

भीखू लाल ने अंधविश्वास समाप्त करने के लिए किया आजीवन संघर्ष

संवाद न्यूज एजेंसी

साल्हावास। आजादी का अमृत महोत्सव के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में कार्यक्रम हुआ।

महाविद्यालय प्राचार्य डॉ. रणवीर सिंह आर्य के निर्देशन में महान स्वतंत्रता सेनानी और समाज सुधारक महाशय भीखू लाल की 119 वीं जयंती के अवसर के अवसर पर एक विशेष सेमिनार का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के संयोजक और मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप, इतिहास विभागाध्यक्ष ने कहा कि महाशय भीखू लाल आधुनिक समतामूलक भारत के निर्माताओं में से एक थे जिन्होंने सामाजिक समानता के लिए और धार्मिक अंधविश्वासों को समाप्त करने के लिए आजीवन संघर्ष किया। वह एक ऐसे गुमनाम योद्धा थे जिन्होंने जमीनी स्तर पर बड़े बदलाव किए और जिसका असर पूरे इलाके में दिखाई पड़ता है। 1904 में अजुहा, उत्तर प्रदेश में जन्मे महाशय भीखूलाल ने बदलाव की शुरुआत सर्वप्रथम घर से ही की और दूसरों के लिए उदाहरण प्रस्तुत किये।

उन्होंने धार्मिक अंधविश्वासों का जोरदार खंडन अपने घर से ही किया सर्वप्रथम उन्होंने तुला दान का विरोध किया और गाजी मियां की चौकी एवं मूर्ति पूजा का विरोध किया। ग्रामीण जीवन में राष्ट्रीयता के विकास और आजादी के लिए संघर्ष में गांधी पुस्तकालयों ने बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी और महाशय भीखू लाल भी निरंतर इन पुस्तकालयों में जाकर आजादी के संघर्ष में शामिल होने लगे। स्वामी अछूतानंद द्वारा 1922 में शुरू किए गए आदि हिंदू आंदोलन में बढ़-चढ़कर भाग लिया और अछूत समुदाय के सामाजिक, आर्थिक उत्थान एवं राजनीतिक अधिकारों के लिए संघर्ष किया। वर्ष 1931 की गोलमेज सम्मेलन के दौरान गांधी और आंबेडकर के अछूतों के प्रतिनिधि होने पर प्रश्न उठने पर इन्होंने गांव-गांव जाकर डॉ. आंबेडकर के पक्ष में टेलीग्राम लिखने के लिए लोगों को प्रेरित किया।

वर्ष 1966 में इनके पुत्र गुरु प्रसाद मदन ने पूरे इलाके में प्रथम स्नातक की डिग्री पूरी करने के बाद महाशय भीखू लाल ने उनसे वचन लिया कि वह कभी सरकारी नौकरी नहीं करेगा बल्कि आधुनिक भारत के समतामूलक भारत के निर्माण में अपना योगदान देगा।

इस अवसर पर प्रोफेसर जितेंद्र, पवन कुमार इत्यादि उपस्थित रहे।

राजकीय महाविद्यालय में व्याख्यान देते डॉ.अमरदीप। संवाद

अमर उजाला, चरखी दादरी हरियाणा 02.02.2023

विद्यार्थियों को दी समाज सुधारक भीखूलाल के संघर्षों की जानकारी

चरखी दादरी। गांव बिरोहड़ स्थित राजकीय महाविद्यालय में स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में समाज सुधारक महाशय भीखूलाल की 119वीं जयंती मनाई गई। इस दौरान महाविद्यालय प्रांगण में सेमिनार भी आयोजित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्राचार्य डॉ. रणवीर सिंह आर्य ने की।

वक्ता डॉ. अमरदीप ने कहा कि महाशय भीखूलाल आधुनिक समतामूलक भारत के निर्माताओं में से एक थे। उन्होंने सामाजिक समानता और अंधविश्वास समाप्त करने के लिए आजीवन संघर्ष किया। उन्होंने समाज सुधार के लिए नशा, रात बसना, बेगारी, मदिरा, मांस भक्षण जैसी कुप्रथाओं को बंद करवाने में अदम्य साहस का परिचय दिया। संवाद

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 03.02.2023

03.02.23 दैनिक जागरण, चरखी

तर्कवादी, समतामूलक समाज के लिए महाशय भीखूलाल ने किया आजीवन संघर्ष : डा. अमरदीप

जागरण संवाददाता, चरखी दादरी : गांव बिरोहड़ स्थित राजकीय महाविद्यालय में स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में प्राचार्य डा. रणवीर सिंह आर्य के निर्देशन में महान स्वतंत्रता सेनानी, समाज सुधारक महाशय भीखू लाल के 119 वीं जयंती के अवसर पर एक सेमीनार का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम के संयोजक डा. अमरदीप ने कहा कि महाशय भीखू लाल आधुनिक समतामूलक भारत के निर्माताओं में से एक थे। जिन्होंने सामाजिक समानता के लिए और धार्मिक अंधविश्वासों को समाप्त करने के लिए आजीवन संघर्ष किया। वे एक ऐसे गुमनाम योद्धा थे जिन्होंने जमीनी स्तर पर बड़े बदलाव किए। जिसका असर पूरे इलाके में दिखाई पड़ता है। 1904 में अजुहा, उत्तर प्रदेश में जन्मे महाशय भीखूलाल ने बदलाव की शुरुआत सर्वप्रथम घर से ही की और दूसरों के लिए उदाहरण प्रस्तुत किए।

बचपन से ही उन्होंने धार्मिक अंधविश्वासों का जोरदार खंडन अपने घर से ही किया। सर्वप्रथम उन्होंने तुला दान का विरोध किया और गाजी मियां की चौकी एवं मूर्ति पूजा का विरोध किया। ग्रामीण जीवन में राष्ट्रीयता के विकास और आजादी के लिए संघर्ष में गांधी पुस्तकालयों ने बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। महाशय भीखू लाल भी निरंतर इन पुस्तकालयों में जाकर आजादी के संघर्ष में शामिल होने लगे।

परिणामस्वरूप 1920 के असहयोग आंदोलन के दौरान अजूहा में और आसपास के इलाकों में महाशय भीखू लाल के नेतृत्व में धरना प्रदर्शन हुए और इन्होंने अपने गांव में ही रामस्वरूप कलार के नशा, अफीम इत्यादि को पकड़वा कर सबके सामने राष्ट्रीयता की भावना का उदाहरण प्रस्तुत किया। इतिहास प्रोफेसर जितेंद्र ने कहा कि महाशय भीखूलाल ने अपने घर में पुस्तकालय स्थापित करके शिक्षा के प्रति लोगों में जागरूकता फैलाई। इस अवसर पर प्रो. जितेंद्र, पवन कुमार इत्यादि ने भी अपने विचार रखे।

गांव बिरोहड़ के सरकारी कालेज में स्वतंत्रता सेनानी महाशय भीखू लाल के बारे में बताते डा. अमरदीप। ● विज्ञप्ति

03.02.2023

210. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 191st Martyrdom of Great Freedom Fighter Umaji Naik on 03.02.2023 and delivered keynote address on "Freedom Struggle and the Contribution of Umaji Naik."

दैनिक भास्कर झज्जर भास्कर 05-02-2023

'उमाजी नाइकने आजादी के लिए 14साल अंग्रेजों से संघर्ष किया था'

झज्जर | अंग्रेजों के विरुद्ध वर्ष 1857 के विद्रोह को स्वतंत्रता के लिए प्रथम विद्रोह के रूप में जाना जाता है, लेकिन इससे पहले भी भारत में अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई लड़ी गई थी। वह लड़ाई उमाजी नाइक ने लड़ी थी। यह बात कार्यक्रम के संयोजक और मुख्य वक्ता इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहीं। वे शनिवार को आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला में बिरोहड़ गांव के राजकीय महाविद्यालय में विशेष सेमिनार में बोल रहे थे। स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस ने महान क्रांतिकारी एवं स्वतंत्रता सेनानी उमाजी नायक के 191वें शहीदी दिवस पर यह सेमिनार की थी। इसमें कार्यक्रम के संयोजक और मुख्य वक्ता इतिहास विभागाध्यक्ष ने कहा कि उमाजी नाइक का जन्म 7 सितंबर 1791 को पुणे जिले के फोर्ट पुरंदर भिवाड़ी में हुआ था। उन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ पहला विद्रोह खड़ा किया था। उन्होंने लगभग 14 वर्षों तक अंग्रेजों से संघर्ष किया था। अंत में अंग्रेजों ने कुटिलता और षड्यंत्र से उमाजी नायक के करीबी साथियों को लालच देकर उमाजी नायक को पकड़ लिया। उमाजी नायक पर देशद्रोह का मुकदमा चला और फांसी की सजा सुनाई गई। इस महान क्रांतिकारी को 3 फरवरी वर्ष 1832 को खड़कमल के मक्लेदार कचेरी के एक कुएं में फांसी दे दी गई। उमाजी नायक ने ब्रिटिश शासन के विद्रोह का बिगुल बजाकर आजादी के आंदोलन की शुरुआत की थी। इस अवसर पर प्राचार्य डा. रणवीर सिंह आर्य, जितेन्द्र आदि मौजूद रहे।

प्रमुखो ... रना होगा। सभी
प्रज्वलि ... ो फोटो प्रति भी
बच्चों ... संवाद

अमर उजाला, झज्जर 04.02.2023

क्रांतिकारी उमाजी नाइक को किया नमन

राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में 191वां शहीदी दिवस मनाया गया

संवाद न्यूज एजेंसी

स्वतंत्रता सेनानी के 191 वें शहीदी दिवस पर व्यायखान देते वक्ता। संवाद

सालहावास। आजादी के अमृत महोत्सव के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में महान क्रांतिकारी उमाजी नाइक को याद किया गया। स्नातकोतर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महाविद्यालय प्राचार्य डॉ रणवीर सिंह आर्य के निर्देशन में उमाजी नाइक के 191 वें शहीदी दिवस के पर एक विशेष सेमिनार आयोजित हुआ।

कार्यक्रम के संयोजक और मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप, इतिहास विभागाध्यक्ष ने कहा कि अंग्रेजों के विरुद्ध 1857 के विद्रोह को स्वतंत्रता के लिए प्रथम विद्रोह के रूप में जाना जाता है। लेकिन इससे पहले भी भारत में अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई लड़ी गई थी और वह लड़ाई उमाजी नाइक ने लड़ी थी। उमाजी नाइक का जन्म 7 सितंबर 1791 को पुणे जिले के फोर्ट पुरंदर भिवाड़ी में हुआ था। उन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ पहला विद्रोह खड़ा किया था। उन्होंने लगभग 14 वर्षों तक अंग्रेजों से संघर्ष किया। पेशवा बाजीराव द्वितीय द्वारा सहायक संधि स्वीकार करने पर अंग्रेजों ने पुरंदर किले की सुरक्षा का कार्य रामोशी समुदाय से छीन लिया गया और अंग्रेजों का दमन बढ़ता गया। इस समय, छत्रपति शिवाजी महाराज को एक उदाहरण के रूप में लेते हुए, उमाजी नाइक ने फैसला किया कि वे विदेशियों को अपने देश पर शासन करने की अनुमति नहीं देंगे। उन्होंने अपने साथियों विठोजी नाइक, कृष्णा नाइक, खुशबा रामोशी, बाबू सोलस्कर के साथ मिलकर अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह शुरू कर दिया। उमाजी नाइक और उनके साथियों ने अंग्रेजों और साहूकारों जैसे अमीर लोगों को लूटना शुरू कर दिया और इसे गरीबों में बांटना प्रारम्भ किया, जिससे जनता में उनके प्रति विश्वास और समर्थन बढ़ता गया। पहली बार वर्ष 1818 में उमाजी नायक को पकड़ा गया और एक साल के कारावास की सजा सुनाई गई थी। जेल से बाहर आने के बाद उसकी गतिविधियां बढ़ गईं। 1818 से 1832 तक उमाजी नायक ने अंग्रेजो के खिलाफ विद्रोह किया।

211. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 125th Birth Anniversary of Great Freedom Fighter and Social Reformer Ramabai Ambedkar on 07.02.2023 and delivered keynote address on "The Conditions of Women and Role of Ramabai Ambedkar."

अमर उजाला, चरखी दादरी 08.02.2023

महिला शक्ति की प्रतीक रमाबाई आंबेडकर की 125वीं जयंती मनाई

बिरोहड़ स्थित राजकीय महाविद्यालय मे सहायक प्रोफेसर छात्रों को जानकारी देते हुए। संवाद

चरखी दादरी। बिरोहड़ स्थित राजकीय महाविद्यालय में स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महिला शक्ति की प्रतीक रमाबाई आंबेडकर की 125वीं जयंती पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के संयोजक एवं मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप रहे।

उन्होंने कहा कि रमाबाई के त्याग और संघर्ष शक्ति ने भीमराव को डॉ. आंबेडकर बनाया। यह बात स्वयं बाबा साहेब भीमराव आंबेडकर ने कही थी। सात फरवरी 1898 में रत्नागिरी के वणंद गांव में एक बेहद गरीब परिवार में जन्मी रमाबाई के माता-पिता बचपन में ही गुजर गए थे। 1906 में इनका विवाह डॉ. आंबेडकर से हुआ और उसके बाद रमाबाई डॉ. आंबेडकर की प्रेरणा शक्ति बन गई। हर परिस्थिति में रमाबाई बाबा साहेब का साथ देती रहीं। इस अवसर पर प्रोफेसर जितेंद्र, पवन कुमार आदि उपस्थित रहे। संवाद

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 08.02.2023

रमाबाई के त्याग और संघर्ष ने भीमा को बनाया डा. आंबेडकर

बिरोहड के सरकारी कालेज मे रमाबाई आंबेडकर के बारे मे बताते डा. अमरदीप। • विज्ञप्ति

जागरण संवाददाता, चरखी दादरी : आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत मंगलवार को गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में महिला शक्ति की प्रतीक रमाबाई आंबेडकर की 125वीं जयंती के अवसर पर कार्यक्रम आयोजित किया गया।

कार्यक्रम के संयोजक एवं मुख्य वक्ता डा. अमरदीप ने कहा कि रमाबाई के त्याग और संघर्ष शक्ति ने भीमा को डा. आंबेडकर बनाया। यह बात स्वयं डा. भीमराव आंबेडकर ने कही थी। 7 फरवरी 1898 में रत्नागिरी के वणंद गांव में गरीब परिवार में जन्मी रमाबाई के माता पिता बचपन में ही गुजर गए थे। 1906 में इनका विवाह डा. आंबेडकर से हुआ और उसके बाद रमाबाई डा. आंबेडकर की प्रेरणा शक्ति बन गई। हर परिस्थिति में रमाबाई बाबा साहेब का साथ देती रही।

बाबा साहेब डा. आंबेडकर वर्षों तक अपनी शिक्षा के लिए बाहर रहे और इस समय में लोगों की बातें सुनते हुए भी रमाबाई ने घर को संभाले रखा। जीवन की जद्दोजहद में उनके और बाबा साहेब के पांच बच्चों में से सिर्फ यशवंत ही जीवित रहे लेकिन फिर भी रमाबाई ने हिम्मत नहीं हारी बल्कि वे खुद बाबा साहेब का मनोबल बढ़ाती रहीं। इतिहास प्रोफेसर जितेंद्र व पवन कुमार ने भी अपने विचार रखे।

न्यूज डायरी

अमर उजाला, झज्जर
08.02.2023

महिला शक्ति का प्रतीक थीं रमाबाई आंबेडकर

साल्हावास। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महिला शक्ति की प्रतीक रमाबाई आंबेडकर की 125वीं जयंती के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजित किया गया। कार्यक्रम के संयोजक एवं मुख्य वक्ता डॉ अमरदीप ने कहा कि रमाबाई के त्याग और संघर्ष शक्ति ने भीमा को डॉ. आंबेडकर बनाया। यह बात स्वयं बाबा साहेब भीमराव आंबेडकर ने कही थी। उन्होंने

कहा कि सफल व्यक्तियों का गुणगान सारा विश्व करता है लेकिन हमें ऐसे सफल व्यक्तियों को सफलता के शिखर तक ले जाने वाले उन महान सहधार्मिणीयों के योगदान का वर्णन भी करना चाहिए। ऐसी ही रमाबाई आंबेडकर थीं। 7 फरवरी 1898 में रत्नागिरी के वणंदगाव में एक बेहद गरीब परिवार में जन्मी रमाबाई के माता पिता बचपन में ही गुजर गये थे। 1906 में इनका विवाह डॉ. आंबेडकर से हुआ और उसके बाद रमाबाई डॉ. आंबेडकर की प्रेरणा शक्ति बन गई। संवाद

212. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 97th Birth Anniversary of Great Freedom Fighter Bazi Rout on 09.02.2023 and delivered keynote address on “Role of Bazi Rout in Freedom Struggle.”

आरटीआ ... द्यालय
प्राचार्य सु ... वाद

अमर उजाला, झज्जर 10.02.2023

12 साल की उम्र में शहीद हुए बाजी राउत

साल्हावास। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में महान क्रांतिकारी और शहीद बाजी

राउत की 97वीं जयंती के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान आयोजित किया गया। कार्यक्रम के संयोजक एवं मुख्य वक्ता डॉ अमरदीप, इतिहास विभागाध्यक्ष ने बताया कि 1900 के उत्तरार्ध में ओडिशा के अधिकांश रियासतों में प्रजामंडल आंदोलन की तीव्रता देखी गई। इसी राज्य में एक क्रांतिकारी किशोर बाजी राउत का जन्म 1926 में नीलकंठपुर गांव में हुआ था जिसने ब्रिटिश सेना का विरोध करके एक बड़े आंदोलन को जन्म दिया था। अक्टूबर 1938 को 12 साल की उम्र में शहीद हो गए थे। इस प्रकार बाजी राउत भारत में स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में सबसे कम उम्र के शहीद थे। इस अवसर पर प्रोफेसर जितेंद्र इत्यादि उपस्थित रहे। संवाद

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 10.02.2023

12 वर्षीय बाजी राउत के बलिदान ने ओडिशा में आंदोलन को दी थी मजबूती : डा. अमरदीप

- क्रांतिकारी बाजी राउत की 97वीं जयंती के अवसर पर हुआ कार्यक्रम
- कहा- अक्टूबर 1938 को 12 साल की उम्र में बाजी राउत बलिदान हो गए

गांव बिरोहड़ के कालेज मे क्रांतिकारी बाजी राउत के बारे मे बताते डा. अमरदीप। • विज्ञप्ति

जागरण संवाददाता, चरखी दादरी : आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में क्रांतिकारी बाजी राउत की 97वीं जयंती के अवसर पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के संयोजक डा. अमरदीप ने कहा कि सन 1900 के उत्तरार्ध में ओडिशा के अधिकांश रियासतों में प्रजामंडल आंदोलन की तीव्रता देखी गई। ढेंकनाल उन राज्यों में से एक था जिसने राजा शंकर प्रताप सिंह देव के आंदोलनकारियों के अमानवीय दमन के कारण सारे राज्य में बदनाम था। इसी राज्य में एक क्रांतिकारी किशोर बाजी राउत का जन्म 1926 में नीलकंठपुर गांव में हुआ था। जिसने ब्रिटिश सेना का विरोध करके एक बड़े आंदोलन को जन्म दिया था। अक्टूबर 1938 को 12 साल की उम्र में बाजी राउत बलिदान हो गए थे जब शांतिपूर्वक अपने गांव में नदी पार करने के लिए ब्रिटिश सेना का विरोध करते हुए उन्हें नौका से वंचित कर दिया गया था। इस प्रकार बाजी राउत भारत में स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में सबसे कम उम्र के बलिदानी थे। राजा द्वारा लगाए गए कई करों के विरोध में जनता सड़कों पर आ गई। पचास हजार से अधिक लोग ढेंकनाल गढ़ में एकत्र हुए और 12 सितंबर 1938 को शाही महल को घेर लिया। हालांकि प्रजामंडल के नेताओं ने लोगों को अनुशासित तरीके से आंदोलन करने की सलाह देते हुए उन्हें वापस लौटने के लिए मना लिया था लेकिन राजा ने दूसरी ओर पड़ोसी राज्यों से 200 सशस्त्र बल और 200 यूरोपीय सैनिकों की एक टुकड़ी आंदोलन को दबाने के लिए ढेंकनाल बुला ली। जिसने माहौल को तनावपूर्ण बना दिया। जनता ने बनारा सेना नामक एक समूह बनाकर आंदोलन शुरू किया और बाजी राउत के दोनों भाई और उनका पूरा गांव इसी सेना के कार्यकर्ता बन गए थे। 12 अक्टूबर 1938 को पुलिस और ग्रामीणों के बीच हाथापाई हुई क्योंकि पुलिस और सेना ने उनसे नाव छीनने की कोशिश की।

बाजी और उसके भाई सहित लगभग एक दर्जन ग्रामीणों ने पुलिस और सेना को नदी में फेरी लगाने से मना करने के लिए नाव को रोक लिया। इसके बाद पुलिस और सेना ने उन पर गोलियां चलाई। जिसमें बाजी राउत सहित छह लोगों की मौत हो गई। बाजी की हत्या ने ओडिशा में एक मजबूत आंदोलन को जन्म दिय। इस अवसर पर प्रोफेसर जितेंद्र ने भी अपने विचार रखे।

213. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 272nd Birth Anniversary of Great Freedom Fighter Tilka Manjhi on 11.02.2023 and delivered keynote address on “First Freedom Fighter of Freedom Struggle: Tilka Manjhi.”

इस अंक ... la.com और
के अंत...

अमर उजाला, झज्जर 12.02.2023

तिलका मांझी ने बोया था स्वतंत्रता संग्राम का पहला बीज : डॉ. अमरदीप

कार्यक्रम में व्याख्यान देते डॉ. अमरदीप। संवाद

साल्हावास। आजादी का अमृत महोत्सव शृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग के तत्वावधान में महान क्रांतिकारी तिलका मांझी की 272वीं जयंती के अवसर पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के संयोजक और मुख्य वक्ता इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि तिलका मांझी ने स्वतंत्रता संग्राम का बीज बोया था और वो पहले शहीद थे।

उन्होंने बताया कि अंग्रेजी राज की बर्बरता के खिलाफ लोहा लेने वाले जबरा पहाड़िया के नाम से अभिशाप मानकर उनके खिलाफ खुला विद्रोह किया था। भारत का पहले विद्रोह के नेता तिलका मांझी का जन्म 11 फरवरी 1750 को हुआ था और उन्होंने राजमहल, झारखंड की पहाड़ियों पर अंग्रेजी हुकूमत से 13 वर्षों तक लोहा लिया।

अंग्रेजों ने भागलपुर के चौराहे पर स्थित एक विशाल वटवृक्ष पर उन्हें लटकाकर मौत के घाट उतारा था। इस अवसर पर प्रोफेसर नरेंद्र, प्रोफेसर जितेंद्र, प्रोफेसर पवन आदि मौजूद रहे। संवाद

214. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 144th Birth Anniversary of Great Freedom Fighter and women Leader Sarojini Naidu on 13.02.2023 and delivered keynote address on "Women Participation in Freedom Struggle and Role of Sarojini Naidu."

www.jagran.com

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 14.02.23

सरोजिनी नायडू ने देश की आजादी के आंदोलन को दी नई दिशा

कालेज में स्वतंत्रता सेनानी सरोजिनी नायडू के बारे में बताते डा. अमरदीप। • विज्ञप्ति।

जागरण संवाददाता, चरखी दादरी : आजादी का अमृत महोत्सव शृंखला के तहत गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में स्वतंत्रता सेनानी और भारत कोकिला सरोजिनी नायडू की 144वीं जयंती के अवसर पर सोमवार को कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम के संयोजक और मुख्य वक्ता डा. अमरदीप ने कहा कि सरोजिनी नायडू ने महिलाओं की भागेदारी से ही आजादी के संग्राम को नई दिशा दी। 13 फरवरी 1879 को हैदराबाद में जन्मी सरोजिनी नायडू बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि की थी। जिन्होंने 13 साल की आयु में 1300 लाइनों की पहली लंबी कविता लिखी थी। 1914 में महात्मा गांधी से लंदन में मिलने के बाद उनके जीवन में क्रांतिकारी बदलाव हुआ और वह भी स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़ीं। 1925 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की वे पहली भारतीय महिला थी जो अध्यक्ष चुनी गई। दांडी मार्च के दौरान महात्मा गांधी के साथ अग्रिम पंक्ति में चलने वालों में सरोजिनी नायडू भी शामिल थीं। 1930 में सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान सरोजिनी नायडू ने नेतृत्व में धारासाल सत्याग्रह हुआ। जिसके प्रत्यक्षदर्शी अमेरिकी पत्रकार वेब मिल्लर ने बताया था कि कुछ ही मिनटों में सारा क्षेत्र खून से लाल हो गया और किसी भी सत्याग्रही ने प्रतिकार में हाथ भी नहीं उठाया था। आजादी के बाद उन्हें उत्तर प्रदेश की पहली महिला राज्यपाल नियुक्त होने का गौरव प्राप्त हुआ। कार्यक्रम में जितेंद्र, पवन कुमार, डा. नरेंद्र सिंह, डा. अजय कुमार, अजय सिंह, प्रदीप कुमार इत्यादि भी उपस्थित रहे।

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 14.02.2023

सरोजिनी नायडू ने देश की आजादी के आंदोलन को दी नई दिशा

कालेज मे स्वतत्रता सेनानी सरोजिनी नायडू के बारे मे बताते डा. अमरदीप। • विज्ञप्ति।

जागरण संवाददाता, चरखी दादरी : आजादी का अमृत महोत्सव शृंखला के तहत गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में स्वतंत्रता सेनानी और भारत कोकिला सरोजिनी नायडू की 144वीं जयंती के अवसर पर सोमवार को कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम के संयोजक और मुख्य वक्ता डा. अमरदीप ने कहा कि सरोजिनी नायडू ने महिलाओं की भागेदारी से ही आजादी के संग्राम को नई दिशा दी। 13 फरवरी 1879 को हैदराबाद में जन्मी सरोजिनी नायडू बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि की थी। जिन्होंने 13 साल की आयु में 1300 लाइनों की पहली लंबी कविता लिखी थी। 1914 में महात्मा गांधी से लंदन में मिलने के बाद उनके जीवन में क्रांतिकारी बदलाव हुआ और वह भी स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़ीं। 1925 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की वे पहली भारतीय महिला थी जो अध्यक्ष चुनी गई। दांडी मार्च के दौरान महात्मा गांधी के साथ अग्रिम पंक्ति में चलने वालों में सरोजिनी नायडू भी शामिल थीं। 1930 में सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान सरोजिनी नायडू ने नेतृत्व में धारासाल सत्याग्रह हुआ। जिसके प्रत्यक्षदर्शी अमेरिकी पत्रकार वेब मिल्लर ने बताया था कि कुछ ही मिनटों में सारा क्षेत्र खून से लाल हो गया और किसी भी सत्याग्रही ने प्रतिकार में हाथ भी नहीं उठाया था। आजादी के बाद उन्हें उत्तर प्रदेश की पहली महिला राज्यपाल नियुक्त होने का गौरव प्राप्त हुआ। कार्यक्रम में जितेंद्र, पवन कुमार, डा. नरेंद्र सिंह, डा. अजय कुमार, अजय सिंह, प्रदीप कुमार इत्यादि भी उपस्थित रहे।

215. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 144th Birth Anniversary of Great Freedom Fighter and Social Reformer Santram B.A. on 14.02.2023 and delivered keynote address on "Jat Pat Todak Mandal and Role of Santram B.A."

न्यूज डायरी

अमर उजाला, चरखी दादरी
15.02.2023

स्वतंत्रता सेनानी संतराम को किया नमन

चरखी दादरी। बिरोहड़ राजकीय महाविद्यालय में महान समाज सुधारक एवं स्वतंत्रता सेनानी संतराम की 144वीं जयंती पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के संयोजक एवं मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप रहे। उन्होंने कहा कि संतराम महान समाजसुधारक थे और उन्होंने भारत में जाति और वर्ग विहीन समाज की स्थापना के लिए आजीवन संघर्ष किया। आर्य समाज के प्रभाव में आने के बाद भाई परमानंद के साथ मिलकर 1922 में जाति-पाति तोड़क मंडल की स्थापना की और इस मंडल के माध्यम से उन्होंने देश में फैली जातीय विषमता, रूढ़िवादिता, पाखंडवाद और अंधविश्वास के खिलाफ सशक्त आवाज उठाई। संवाद

216. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 91st Martyrdom of Buddhu Bhagat of Great Freedom Fighter on 16.02.2023 and delivered keynote address on "Buddhu Bhagat: A Forgotten Hero of Freedom Struggle"

अमर उजाला, झज्जर 17.02.2023

अंग्रेजों के खिलाफ लकड़ा विद्रोह के सूत्रधार थे बुधु

राजकीय कॉलेज में क्रांतिकारी बुधु भगत शहीदी दिवस पर कार्यक्रम आयोजित

संवाद न्यूज एजेंसी

साल्हावास। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महान क्रांतिकारी बुधु भगत की 191वीं शहीदी दिवस के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के संयोजक और मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप, इतिहास विभागाध्यक्ष रहे।

उन्होंने कहा कि बुधु भगत ने अंग्रेजी हुकूमत की ईंट से ईंट बजा दी थी और 1857 के विद्रोह से पूर्व एक बड़ा सशस्त्र आंदोलन लकड़ा विद्रोह छेड़ा था। 17 फरवरी 1792 में का वर्तमान झारखंड राज्य के रांची जिले के सिलागाई नामक ग्राम में जन्में बुधु भगत भगत बचपन से ही जमींदारों और अंग्रेजी सेना की क्रूरता देखते आये थे। उनकी तैयार फसल को जमींदार जबरदस्ती उठा ले जाते थे। उन्हें भयंकर गरीबी का दंश झेलना पड़ता था। इसी ने उन्हें विद्रोही बना दिया और उन्होंने आदिवासियों को एकजुट करके अंग्रेजों के विरुद्ध एक आदिवासी सेना खड़ी कर ली।

राजकीय कॉलेज बिरोहड़ में बुधु भगत की पुण्यतिथि पर व्याख्यान देते डॉ. अमरदीप। संवाद

आदिवासी इलाकों में बुधु भगत के विचारों के कारण उन्हें उनका उद्धारक एवं भगवान माना जाने लगा। 13 फरवरी 1832 को ब्रिटिश सेना सिलागई गांव पहुंची और बुधु भगत के अनुयायियों के कड़े प्रतिरोध का सामना किया। उन्होंने धनुष, तीर, कुल्हाड़ियों और तलवारों से ब्रिटिश सेना पर हमला करके अंगेजों को कड़ी टक्कर दी। परंतु इस लड़ाई में बुधु भगत के पुत्र हलधर भगत और गिरिधर भगत मारे गए। अंत में बुधु भगत को अंग्रेजों ने पकड़ लिया और उन्हें शहादत मिली। मौके पर डॉ. सुरेंद्र सिंह, प्रोफेसर जितेंद्र आदि उपस्थित रहे।

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 17.02.2023

बुधु भगत ने 1832 तक लड़ी लड़ाई अंग्रेजी हुकूमत की हिला दी थीं जड़ें

गांव बिरोहड़ के सरकारी कालेज में क्रांतिकारी बुधु भगत के बारे में बताते डा. अमरदीप। ● विज्ञप्ति

जागरण संवाददाता, चरखी दादरी : बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में बीरवार को क्रांतिकारी बुधु भगत के 191वें बलिदान दिवस पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के संयोजक डा. अमरदीप ने कहा कि बुधु भगत ने अंग्रेजी हुकूमत को हिला कर रख दिया था। 1857 के विद्रोह से पूर्व एक बड़ा सशस्त्र आंदोलन छेड़ा था। 17 फरवरी 1792 में का वर्तमान झारखंड राज्य में रांची जिले के सिलागाई नामक ग्राम में जन्मे बुधु भगत भगत बचपन से ही जमींदारों और अंग्रेजी सेना की क्रूरता देखते आए थे। 13 फरवरी 1832 को ब्रिटिश सेना के खिलाफ लरका विद्रोह शुरू किया था। अंत में बुधु भगत को अंग्रेजों ने पकड़ लिया और उन्हें शहादत मिली। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में डा. सुरेंद्र सिंह, प्रोफेसर जितेंद्र उपस्थित रहे।

217. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 129th Birth Anniversary of Great Freedom Fighter Rahi Ahmad Kidwai on 17.02.2023 and delivered keynote address on "Role of Rafi Ahmad Kidwai in Freedom Struggle"

17 फरवरी 2023

प्रेस नोट

आज 17 फरवरी 2023 को आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के सयुंक्त तत्वावधान में महान स्वतंत्रता सेनानी रफ़ी अहमद किदवई की 129 वीं जयंती के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के संयोजक और मुख्य वक्ता डा. अमरदीप ने कहा कि इतिहास विभागाध्यक्ष, ने कहा कि रफी अहमद किदवई एक भारतीय स्वतंत्रता कार्यकर्ता और एक समाजवादी थे | रफी अहमद का जन्म बारांबंकी जिले के छोटे से गांव मसौली मे 18 फरवरी 1894 मे हुआ था | रफी ने अलीगढ मुस्लिम विश्वाविघ्यालय से शिक्षा प्राप्त की थी| वे खिलाफत आन्दोलन और असहयोग आन्दोलन में सक्रिय भाग लेकरआज़ादी के आन्दोलन में कूद पड़े थे| 1926 में स्वराज पाटी के उम्मीदवार के रूप में चुनाव जीतकर केंद्रीय विधान सभा में गये और अंग्रेजी हुकुमत के शोषणकारी बिलों का पुरजोर विरोध किया | जनवरी 1930 मे रफी ने कांग्रेस के पूर्ण स्वराज संकल्प के पक्ष में केंद्रीय विधान सभा से इस्तीफा दे दिया था | उसके बाद वह सवनिय अवज्ञा आंदोलन मे भाग लिया | 1937 मे रफी ने प्रांतीय स्वायत्तता योजना के तहत आगरा और अवध के संयूक्त प्रान्त मे गोविंद बल्लभ पंत के मंत्रीमंडल के राजस्व और जेल मंत्री के रुप मे कार्य किया था | 1946 मे रफी ने यू पी के गृहमंत्री के रुप मे कार्य किया था | रफी भारत के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरु के एक प्रमूख सहयोगी थी| सन 1947 मे भारत स्वातंत्रता के बाद रफी भारत के पहले संचार मंत्री के रुप मे कार्यरीत हुए थे | इस कार्यक्रम में पवित्रा देवी और जितेन्द्र इत्यादि उपस्थित रहे|

Principal
Govt. College
Birohar (Jhajjar)

218. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 9th Martyrdom of Great Naval Officer Lieutenant Commander Kapish Singh Muwal on 27.02.2023 and delivered keynote address on "INS Sindhuratna Submrine Accident and Exemplary Contribution of Kapish Singh Muwal"

अमर उजाला, चरखी दादरी 28.02.2023

आयोजन — लेफ्टिनेंट कमांडर के नौवें शहीदी दिवस पर बिरोहड़ राजकीय महाविद्यालय में आयोजित किया गया कार्यक्रम

कपीश सिंह ने 94 नौसैनिकों की बचाई थी जान : डॉ. अमरदीप

संवाद न्यूज एजेंसी

चरखी दादरी। बिरोहड़ स्थित राजकीय महाविद्यालय में शहीद लेफ्टिनेंट कमांडर कपीश सिंह मुवाल के नौवें शहीदी दिवस पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। आयोजन स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में हुआ।

कार्यक्रम संयोजक एवं मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप ने कहा कि शहीद लेफ्टिनेंट कमांडर कपीश सिंह ने 94 नौसैनिकों की जान बचाकर देश हित के लिए सर्वोच्च बलिदान दिया था। उन्होंने बताया कि कपीश का जन्म गांव बांडाहेड़ी (मुंढाल) में हुआ था। कपीश मुवाल बचपन से ही मेधावी छात्र थे और उन्होंने एनडीए की

26 फरवरी 2014 की सुबह 5 बजे कंपार्टमेंट 3 में आग लग गई थी

परीक्षा उच्च रैंक से पास की थी। परीक्षा में टॉपर रहने पर उन्हें स्वोर्ड ऑफ ऑनर से सम्मानित किया गया था। उन्होंने बताया कि 26 फरवरी 2014 सुबह 5 बजे कंपार्टमेंट 3 में आग लग गई। इसके बाद कपिश ने सभी सैनिकों को कंपार्टमेंट से बाहर निकाल दिया और खुद मनोरंजन कुमार के साथ मिलकर आग बुझाने लगे।

जब आग ज्यादा बढ़ने लगी तो उन्होंने कंपार्टमेंट का दरवाजा बंद कर लिया और अपने प्राणों की आहुति देकर सभी सैनिकों को बचा लिया। इस दौरान इतिहास प्रोफेसर जितेंद्र, भूगोल प्रोफेसर पवन कुमार भी उपस्थित रहे।

बिरोहड़ राजकीय महाविद्यालय में विद्यार्थियों को संबोधित करते डॉ. अमरदीप। संवाद

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 28.02.2023

क़पीश सिंह ने 94 जवानों की जान बचा देशहित में दिया सर्वोच्च बलिदान

जागरण संवाददाता, चरखी दादरी: गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग, हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में बलिदानी लेफ्टिनेंट कमांडर कपीश सिंह मुवाल के नौवें बलिदानी शौर्य दिवस के अवसर पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम के संयोजक डा. अमरदीप ने कहा कि बलिदानी कपीश सिंह ने 94 नौसैनिकों की जान बचाकर देश हित में सर्वोच्च बलिदान का उदाहरण प्रस्तुत किया था। आजादी के पश्चात भारतीय प्रभुसत्ता एवं स्वतंत्रता को अक्षुण बनाए रखने में भारतीय सेनाओं की अहम भूमिका रही है। इसी कड़ी में ऐसा ही एक बहादुर योद्धा कपीश सिंह मुवाल थे, जिन्होंने अदम्य साहस, सूझबूझ से एक बहुत बड़ी दुर्घटना को ही नहीं रोका बल्कि अपने नौसैनिक कर्मियों के जीवन रक्षा हेतु अपनी जान न्योछावर करके भारतीय नौसेना का गौरव भी बढ़ाया।

गांव बांडाहेड़ी मुंढाल, हिसार से संबंध रखने वाले भारतीय नौसेना के कमांडर ईश्वर सिंह के सुपुत्र कपीश मुवाल बचपन से ही मेधावी छात्र थे। एनडीए की परीक्षा पास करने के बाद टापर रहने पर उन्हें स्वोर्ड आफ हानर से सम्मानित किया गया था। भारतीय नौसेना में लेफ्टिनेंट क़मांडर कपीश सिंह मुवाल ने 26 फरवरी 2014 को 3000 टन की आईएनएस सिंधुरत्न पनडुब्बी के कंपार्टमेंट पांच में उपविद्युत अधिकारी के रूप में कार्यरत थे। सुबह तकरीबन पांच बजे कंपार्टमेंट तीन से धुआं निकलने की खबर मिलने पर वह सबसे पहले घटनास्थल पर पहुंचे। 13 नौसैनिक कर्मियों व लेफ्टिनेंट कमांडर कपीश सिंह ने लेफ्टिनेंट कमांडर मनोरंजन कुमार के साथ मिलकर आग बुझाने का कार्य करने लगे। परंतु जब आग बुझने की बजाय बढ़ने लगी तो कपीश सिंह मुवाल ने सभी कर्मियों को बाहर जाने का आदेश दिया। इतिहास प्रोफेसर जितेंद्र ने बताया कि आग अन्य कंपार्टमेंट में ना फैले इसलिए उन्होंने कंपार्टमेंट का दरवाजा बंद कर लिया। इस प्रकार आग केवल कंपार्टमेंट तीन तक ही सीमित रह गई। आइएनएस सिंधुरत्न पनडुब्बी को डूबने से बचाया बल्कि इसके साथ ही उन्होंने पनडुब्बी में सवार 94 नौसैनिकों की जान बचाकर भारतीय नौसेना के इतिहास को भी गौरवान्वित किया। इस अवसर पर इतिहास प्रोफेसर जितेंद्र, भूगोल प्रोफेसर पवन कुमार इत्यादि उपस्थित रहे।

गांव बिरोहड़ के सरकारी कालेज में बलिदानी कपीश सिंह के बारे में बताते डा. अमरदीप। ● विज्ञप्ति

दैनिक जागरण चरखी दादरी 28.02.2023

अमर उजाला, झज्जर 28.02.2023

शहीद के शौर्य दिवस पर विशेष कार्यक्रम

साल्हावास। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में शहीद लेफ्टिनेंट कमांडर कपीश सिंह मुवाल के नौवें शहीद शौर्य दिवस के अवसर पर विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के संयोजक और मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप, इतिहास विभागाध्यक्ष ने कहा कि शहीद लेफ्टिनेंट कमांडर कपीश सिंह 94 नौसैनिकों की जान बचाकर देश हित में सर्वोच्च बलिदान का उदाहरण प्रस्तुत किया था। आजादी के पश्चात भारतीय प्रभुसत्ता एवं स्वतंत्रता को अक्षुण्ण बनाये रखने में भारतीय सेनाओं की अहम भूमिका रही है। संवाद

219. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 121st Birth Anniversary of Great Freedom Fighter Ramakrishna Khatri on 03.03.2023 and delivered keynote address on "Revolutionary Movement and Contribution of Ramakrishna Khatri"

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 04.03.2023

प्रतियोगिता की
अंजू व किरण शर्म
उज्ज्वल भविष्य की

स्थान पूजा ने,
षा और तृतीय
प्राप्त किया।

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 04.03.2023

काकोरी ट्रेन कांड में सहयोगी थे क्रांतिकारी रामकृष्ण

जागरण संवाददाता, चरखी दादरी : गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में शुक्रवार को आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत प्राचार्य डा. रणवीर सिंह आर्य की अध्यक्षता में स्वतंत्रता सेनानी रामकृष्ण खत्री की 121वीं जयंती के अवसर पर कार्यक्रम आयोजित किया गया।

कार्यक्रम के संयोजक डा. अमरदीप ने कहा कि रामकृष्ण खत्री राष्ट्रीय क्रांतिकारी आंदोलन की अहम कड़ी थे। क्रांतिकारी रामकृष्ण खत्री का जन्म तीन मार्च 1902 को वर्तमान महाराष्ट्र के जिला बुलढाना बरार के चिखली गांव में हुआ। बचपन से ही वे बाल गंगाधर तिलक से प्रभावित थे और राष्ट्रवाद का प्रसार करने के लिए उदासीन मंडल नामक संस्था बनाई। उन्होंने असहयोग आंदोलन में सक्रिय भाग लिया। 1923 में इनकी मुलाकात क्रांतिकारी चंद्रशेखर आजाद से हुई और आंदोलन में कूद पड़े। हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन के सदस्य बनने पर उन्होंने रामप्रसाद बिस्मिल के नेतृत्व में नौ अगस्त 1925 को होने वाले काकोरी ट्रेन कांड में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस कारण रामकृष्ण खत्री को पूना से गिरफ्तार कर लखनऊ जेल में लाकर मुकदमा चलाया गया और अंत में इनको दस वर्ष के लिए कठोर कारावास की सजा दी गई। 1935 में रिहा होने पर भी उन्होंने अपनी क्रांतिकारी गतिविधियों को विराम नहीं दिया और जेल में सजा काट रहे अन्य क्रांतिकारियों को रिहा करने के प्रयासों में आजादी तक लगे रहे। रामकृष्ण खत्री का नाम भारत के नामी क्रांतिकारियों में शामिल था। इस अवसर पर इतिहास प्रोफेसर जितेंद्र और पवन कुमार ने भी अपने विचार रखे।

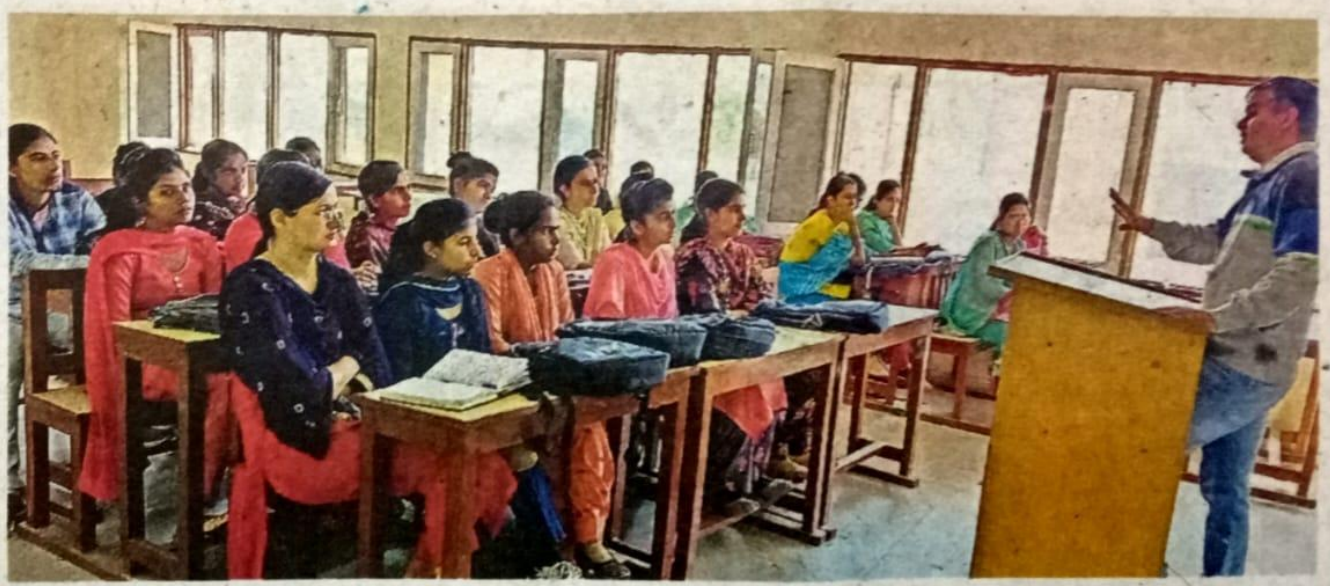

गांव बिरोहड़ के सरकारी कालेज में क्रांतिकारी रामकृष्ण खत्री के बारे में बताते डा. अमरदीप। • विज्ञप्ति

व 49
संवाद

अमर उजाला, चरखी दादरी 04.03.2023

, सतपाल,
स्थित रहे।

आजादी की लड़ाई में स्वतंत्रता सेनानी रामकृष्ण के योगदान पर डाला प्रकाश

संवाद न्यूज एजेंसी

चरखी दादरी। महान क्रांतिकारी और स्वतंत्रता सेनानी रामकृष्ण खत्री की 121वीं जयंती के अवसर पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसकी अध्यक्षता प्राचार्य डॉ. रणबीर सिंह आर्य ने की।

कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि रामकृष्ण खत्री राष्ट्रीय क्रांतिकारी आंदोलन की अहम कड़ी थे। खत्री का जन्म तीन मार्च 1902 को महाराष्ट्र के जिला बुलढ़ाना बरार के चिखली गांव में हुआ। बचपन से ही वे बाल गंगाधर तिलक से प्रभावित थे। उन्हीं से प्रभावित होकर खत्री ने राष्ट्रवाद का प्रसार करने के लिए उदासीन मंडल नामक संस्था बनाई। उन्होंने असहयोग आंदोलन में सक्रिय भाग लिया परंतु चौरी चौरा की घटना के बाद उनका महात्मा गांधी के मार्ग से मोह भंग हो गया और क्रांतिपथ पर चल पड़े। डॉ. अमरदीप ने कहा कि 1923 में उनकी मुलाकात महान क्रांतिकारी चंद्रशेखर आजाद से हुई और क्रांतिकारी आंदोलन में सक्रिय रूप से जुड़ गए। हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन के सदस्य बनने पर उन्होंने राम प्रसाद बिस्मिल के नेतृत्व में नौ अगस्त 1925 को होने वाले काकोरी ट्रेन डकैती में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस कारण रामकृष्ण खत्री को पूना से गिरफ्तार कर लखनऊ जेल में लाकर इन पर मुकदमा चलाया गया। खत्री को दस वर्ष के लिए कठोर कारावास की सजा दी गई। 1935 में रिहा होने पर भी उन्होंने अपनी क्रांतिकारी गतिविधियों को विराम नहीं दिया।

220. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 137th Birth Anniversary of Great Freedom Fighter Maharshi Bulusu Sambmurthy on 04.03.2023 and delivered keynote address on "Freedom Movement in Andhra Pradesh and Contribution of Maharshi Bulusu Sambmurthy."

दैनिक भास्कर झज्जर भास्कर 05-03-2023

बिरोहड़ के राजकीय कॉलेज में स्वतंत्रता सेनानीमहर्षि बुलुसु सांबमूर्तिकी 137वीं जयंती मनाई

महर्षि बुलुसु महान देशभक्त थे, राष्ट्र के लिए सर्वस्य बलिदान कर दिया था

झज्जर | महर्षि बुलुसु सांबमूर्ति एक महान देशभक्त थे, जिन्होंने देश के लिए अपना सब कुछ बलिदान कर दिया। उन्होंने भारत की स्वतंत्रता, आंध्रप्रदेश के अलग राज्य और विशाल आंध्र के लिए अथक प्रयास किया। यह बात कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहीं। वे महान क्रांतिकारी एवं स्वतंत्रता सेनानी महर्षि बुलुसु सांबमूर्ति की 137वीं जयंती पर विशेष कार्यक्रम में बोल रहे थे। गांव बिरोहड़ स्थित राजकीय कॉलेज में स्नातकोत्तर इतिहास विभाग और हरियाणा इतिहास कांग्रेस ने यह कार्यक्रम किया। इसमें कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष ने कहा कि 4 मार्च वर्ष 1886 को पूर्वी गोदावरी जिले के दोल्ला गांव में जन्मे बुलुसु ने मद्रास विश्वविद्यालय से स्नातक की उपाधि प्राप्त की। शिक्षा क बाद वे शीघ्र ही एक महान आपराधिक वकील के रूप

इतिहास के बारे में प्रकाश डालते हैं डॉक्टर अमरजीत सिंह।

पुलिस ने डंडों से पीटा था, पीछे नहीं हटे

कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष ने बताया कि महर्षि बुलुसु सांबमूर्ति ने वर्ष1929 में साइमन कमीशन के खिलाफ आंदोलन में भी सक्रिय भाग लिया। कई बार जेल गए। उन्होंने1930 ;के नमक सत्याग्रह में भाग लिया। उन्होंने तब तक नमक न खाने की शपथ ली,जब तक कि नमक पर से सभी कर समाप्त नहीं कर दिए जाते। ब्रिटिश शासकों के खिलाफ सविनय अवज्ञा आंदोलन के हिस्से के रूप में काकीनाडा में एक ऐतिहासिक सभा को संबोधित करते उन्हें पुलिस ने डंडों से बुरी तरह पीटा था, लेकिन वे पीछे नहीं हटे।उन्होंने हरिजनों और महिलाओं की उन्नति के लिए भी कार्य किया। समतामूलक समाज की स्थापना के अथक कार्य किया। अपने एकलौते पुत्र की मृत्यु ही उन्हें स्वाधीनता संग्राम के पथ से दूर नह कर पाई और दुगुने उत्साह से उन्होंने आंदोलन में भाग लिया। उन्होंने

कुश्ती के लिए एक लाख
लिए 31 हजार रुपये के
बराबर रहने वाले पहलव

सद्भावना का त्योहार है।
यह उत्सव फाल्गुन के अंतिम
ा दहन की शाम से शुरू होता
ले दिन सुबह लोग फूलों और

अमर उजाला, झज्जर 05.03.2023

आयोजन

राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में स्वतंत्रता सेनानी महर्षि बुलुसु सांबमूर्ति की जयंती पर कार्यक्रम आयोजित

महर्षि बुलुसु ने राष्ट्र के लिए किया सर्वस्व बलिदान

संवाद न्यूज एजेंसी

सालहावास। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महान क्रांतिकारी और स्वतंत्रता सेनानी महर्षि बुलुसु सांबमूर्ति की 137वीं जयंती पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि सांबमूर्ति एक महान देशभक्त थे। जिन्होंने देश के लिए अपना सब कुछ बलिदान कर दिया।

उन्होंने भारत की स्वतंत्रता, आंध्र प्रदेश के अलग राज्य और विशाल आंध्र के लिए अथक प्रयास किया। 4 मार्च 1886 को पूर्वी गोदावरी जिले के दोल्ला गांव में जन्मे बुलुसु ने मद्रास विश्वविद्यालय से स्नातक की उपाधि प्राप्त की। शिक्षा उपरांत वे शीघ्र ही एक महान आपराधिक वकील के रूप में प्रसिद्ध हो गए और वे काकीनाडा, पेद्दापुरम और राजमुंदरी न्यायालयों में मामलों में भाग लेते थे। 1919 में गांधी जी के आह्वान पर 33 वर्ष की आयु में उन्होंने वकालत का पेशा त्याग दिया और स्वतंत्रता आंदोलन में कूद पड़े। 1923 में नागपुर सत्याग्रह को सफल बनाने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

महर्षि बुलुसु सांबमूर्ति पर व्याख्यान देते वक्ता। संवाद

उन्होंने आंध्र प्रांतीय कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष और सचिव के रूप में सफलतापूर्वक कार्य किया। उन्होंने 1937 के आम चुनावों में मद्रास प्रांत में आंध्र में प्रांतीय विधानसभा के लिए कांग्रेस की भारी जीत में प्रकाशम के साथ एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। बाद में उन्हें प्रांतीय विधानसभा के अध्यक्ष के रूप में चुना गया।

स्वतंत्रता उपरांत जब पोट्टी श्रीराम ने आंध्र प्रदेश राज्य के गठन की मांग को लेकर मृत्युपर्यंत भूख हड़ताल पर जाने का फैसला किया, तो कोई भी अन्य आगे नहीं आने पर सांबमूर्ति ने उन्हें अपने आवास पर आश्रय दिया। देश के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर करने वाले इस महान देशभक्त का 3 फरवरी 1958 को विकट गरीबी में देहांत हो गया। इस अवसर पर प्रोफेसर जितेंद्र और प्रोफेसर पवन कुमार उपस्थित रहे।

221. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 125th Mahaparinirvana Diwas of Great Freedom Fighter and Social Reformer Savitribai Phule on 10.03.2023 and delivered keynote address on "Indian Education System and Contribution of Savitribai Phule."

अमर उजाला, चरखी दादरी 11.03.2023

काय ... विज्ञप्ति

सावित्रीबाई फुले का महापरिनिर्वाण दिवस मनाया

चरखी दादरी। आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में इतिहास विभाग के तत्वावधान में महान समाज सुधारिका एवं आधुनिक भारत की पहली महिला शिक्षिका सावित्रीबाई फुले के 125 वें महापरिनिर्वाण दिवस पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। वक्ता संदीप कुमार ने कहा कि सावित्रीबाई फुले का जन्म 1831 में महाराष्ट्र के सतारा के नायगांव में किसान परिवार में हुआ था। 19 वीं सदी में जहां एक ओर राजा राममोहन राय जैसे अनेक सुधारक सामाजिक धार्मिक आंदोलन चला रहे थे। वहीं दूसरी और ज्योतिबा फुले और उनकी पत्नी सावित्रीबाई फुले ने सामाजिक एवं शैक्षणिक क्षेत्र में ढांचागत एवं संस्थागत परिवर्तन की नींव रखी। संवाद

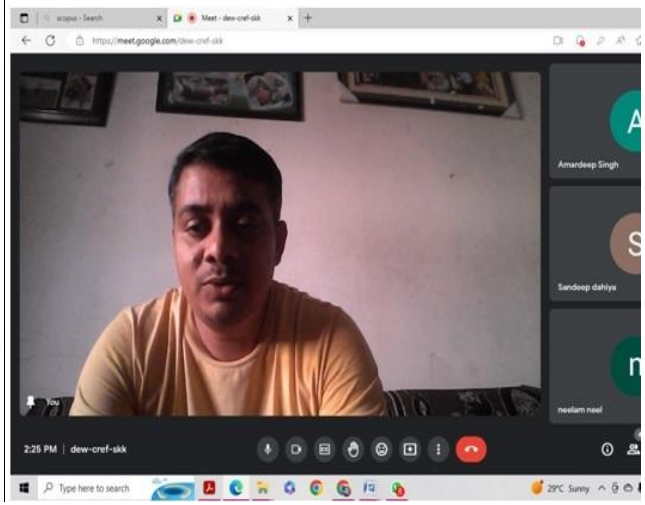

दैनिक भास्कर झज्जर भास्कर 11-03-2023

आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में हुआ कार्यक्रम

सावित्रीबाई फुले ने स्त्री के अधिकारों और शिक्षा की दिशा में अभूतपूर्व योगदान दिया

भास्कर न्यूज | झज्जर

आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग और हरियाणा इतिहास कांग्रेस के सयुंक्त तत्वावधान में महान समाज सुधारिका एवं आधुनिक भारत की पहली महिला शिक्षिका सावित्रीबाई फुले के 126वें महा परिनिर्वाण दिवस के अवसर पर एक ऑनलाइन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के संयोजक और मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप इतिहास विभागाध्यक्ष, ने कहा कि सावित्रीबाई फुले ने आधुनिक समाज में स्त्री अधिकारों और स्त्री शिक्षा की दिशा में अभूतपूर्व योगदान दिया। उन्होंने स्त्री शिक्षा की अखंड ज्योति जलाकर बदलाव की एक बड़ी लहर को जन्म दिया। सावित्रीबाई फुले का जन्म 1831 में महाराष्ट्र के सतारा के नया गांव में एक किसान परिवार में हुआ था। 9 वर्ष की आयु में उनकी शादी ज्योतिबा फुले से हुई और 17 वर्ष की आयु में अध्यापन का कार्य प्रारम्भ करके पुरातन और अंधविश्वास से भरे समाज को सुदृढता की ओर ले जाने का प्रयास किया। सावित्रीबाई ने जोर दिया कि स्त्रियों को न देवी मानने और न ही पूजने की जरूरत है बल्कि उन्हें बराबरी का सम्मान एवं अधिकार देने की आवश्यकता है। महिला शिक्षा से दो परिवार शिक्षित होते है, जबकि पुरुष शिक्षा से केवल एक। इसलिए शुरुआत में उन्होंने सर्वप्रथम लड़कियों की शिक्षा के लिए पहला विद्यालय 1848 में पुणे में खोला था। इस विद्यालय की स्थापना के लिए सावित्रीबाई और ज्योतिबा फुले को ने केवल रुढिवादी समाज का उत्पीड़न सहना पड़ा बल्कि अपना घर भी छोड़ना पड़ा। इस घटना से सावित्रीबाई का मनोबल टूटने की बजाय और अधिक मजबूत हुआ और उन्होंने फातिमा बीवी 1848 से लेकर 1852 के बीच लड़कियों के लिए 18 स्कूल खोले थे। सावित्रीबाई फुले ने अपने विद्यालयों में को अतिआधुनिक गतिविधियों जैसे पेरेंट्स टीचर मीटिंग, छात्रवृतियों की शुरुआत इत्यादि से सुसज्जित करके शिक्षा जगत में नए एवं भविष्य गामी प्रयत्न किए जो आज की लोकतांत्रिक सरकारों ने 21वीं सदी में चलाया हुआ है।1897 में पुणे में प्लेग फैला था और इसी महामारी में स्वयंसेवा करते हुए से 66 वर्ष की उम्र में सावित्रीबाई फुले का 10 मार्च 1897 को पुणे में महा परिनिर्वाण हो गया था। इस विशेष कार्यक्रम में पवन कुमार, जितेन्द्र प्रोफेसर उपस्थित रहे।

बहादुरगढ़ सावित्रीबाई की पुण्यतिथि पर किया नमन।

सावित्रीबाई की पुण्यतिथि पर किया नमन

बहादुरगढ़ | महान समाज सुधारक सावित्रीबाई फूले की पुण्यतिथि पर उनको नमन करते हुए सरिता सैनी ने कहा कि महिलाओं को शिक्षा व उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करने वाली समाज सेविका सावित्रीबाई फूले हमारे लिए हमेशा प्रेणना का स्त्रोत रहेगी। उन्होंने अपने संघर्षमय जीवन में हमेशा महिलाओं के उथान के कार्य किये। जिसमें बाल-विवाह पर रोक, सती प्रथा का विरोध, लड़कियों की शिक्षा पर जोर, घूंघट प्रथा का विरोध, पुनर्विवाह, दलित समाज की बेटिओं को पढ़ाने, अछूतों को उनके अधिकार दिलाने, आदि जैसे कार्य किये। उन्होंने शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए देश का पहला महिला विद्यालय खोला। सरिता सैनी ने कहा की महिलाओं को आत्म-निर्भर बनाने में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा। आज पूरे देश में उनके नाम से विद्यालय,पार्कों, चौराहों का नामकरण हुआ है। सैनी ने सरकार से सावित्रीबाई फूले को भारत रत्न देने की मांग करते हुए उनकी जयंती एवं पुण्यतिथि पर सरकार अवकाश करने की मांग की। वहीं सरकार से सावित्रीबाई फूले के नाम से डाक टिकट जारी करने की भी मांग रखी।

सावित्रीबाई फुले की पुण्यतिथि गुभाणा में मनाई

बादली | गुभाणा के लोकहित पुस्तकालय में ग्रामीणों और समिति सदस्यों ने नारी मुक्ति आंदोलन की प्रणेता एव देश की पहली महिला शिक्षिका महान समाज सेविका सावित्रीबाई फुले की पुण्यतिथि मनाई। इस मौके पर समिति सदस्यों व ग्रामीणों ने उनके चित्र पर पुष्प अप्रित कर उन्हें नमन किया। समिति अध्यक्ष नरेश कौशिक ने उनके जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि नारी मुक्ति आंदोलन की प्रणेता देश की पहली महिला शिक्षिका सावित्रीबाई फुले का जन्म 3 जनवरी 1831 को हुआ था। 9 साल की उम्र में उनका 13 साल के ज्योति राव फुले से विवाह हुआ। देश की पहली महिला शिक्षिका सावित्रीबाई फुले ने ऐसे दौर में शिक्षा की अलख जगाई जब लड़कियों का घर से बाहर निकलना भी मुश्किल था। उन्होंने लड़कियों की भलाई व आगे बढ़ने को लेकर कई कदम उठाए। उन्होंने लड़कियों की शिक्षा के लिए 18 स्कूल खोलें, जिनमें से पहला और 18 वां स्कूल पुणे में खोला। सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ सावित्रीबाई फुले ने आवाज उठाई। उन्होंने मजदूरों के लिए रात्रि में स्कूल खोलें ताकि दिन में काम पर जाने वाले मजदूर रात को पढ़ाई कर सकें। 1897 में पुणे में फ्लैग नामक बीमारी फैली जिसमें वह लोगों की सेवा करते हुए बीमारी की चपेट में आ गई और 10 मार्च 1897 को उनका निधन हो गया। इस अवसर पर समिति अध्यक्ष नरेश कौशिक, सूबेदार मेजर सुरेश कुमार, बिट्टू व अन्य समिति सदस्यों तथा ग्रामीणों ने उनके चित्र पर पुष्प अर्पित कर श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

अमर उजाला, झज्जर, 11.03.2023

स्त्री अधिकारों में सावित्री बाई का योगदान अभूतपूर्व : डॉ. अमरदीप

संवाद न्यूज एजेंसी

राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में ऑनलाइन कार्यक्रम आयोजित

साल्हावास। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग और हरियाणा इतिहास कांग्रेस के सयुंक्त तत्वावधान में सावित्रीबाई फुले के 126वें महापरिनिर्वाण दिवस पर ऑनलाइन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। संयोजक और मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप, इतिहास विभागाध्यक्ष, ने कहा कि सावित्रीबाई फुले ने आधुनिक समाज में स्त्री अधिकारों और स्त्री शिक्षा की दिशा में अभूतपूर्व योगदान दिया। उन्होंने स्त्री शिक्षा की अखण्ड ज्योति जलाकर बदलाव की एक बड़ी लहर को जन्म दिया।

सावित्रीबाई फुले का जन्म 1831 में महाराष्ट्र के सतारा के नायगांव में एक किसान परिवार में हुआ था। 9 वर्ष की आयु में उनकी शादी ज्योतिबा फुले से हुई और 17 वर्ष की आयु में अध्यापन का कार्य प्रारम्भ करके पुरातन और अंधविश्वास से भरे समाज को सुदृढ़ता की ओर ले जाने का प्रयास किया। सावित्रीबाई ने जोर दिया कि स्त्रियों को न देवी मानने और न ही पूजने की जरूरत है बल्कि उन्हें बराबरी का सम्मान एवं अधिकार देने की आवश्यकता है।

महिला शिक्षा से दो परिवार शिक्षित होते है, जबकि पुरुष शिक्षा से केवल एक। इसलिए शुरुआत में उन्होंने सर्वप्रथम लड़कियों की शिक्षा के लिए पहला विद्यालय 1848 में पुणे में खोला था। इस विद्यालय की स्थापना के लिए सावित्रीबाई और ज्योतिबा फुले को ने केवल रूढ़ीवादी समाज का उत्पीड़न सहना पड़ा बल्कि अपना घर भी छोड़ना पड़ा।

इस घटना से सावित्रीबाई का मनोबल टूटने की बजाय और अधिक मजबूत हुआ। उन्होंने फातिमा बीवी 1848 से लेकर 1852 के बीच लड़कियों के लिए 18 स्कूल खोले थे। इस विशेष कार्यक्रम में पवनकुमार, जितेन्द्र इत्यादि प्रोफेसर उपस्थित रहे।

222. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 64th Death Anniversary of Great Freedom Fighter Mukund Ramrao **Jayakar** (M.R. Jayakar) on 11.03.2023 and delivered keynote address on "M.R. Jayakar and Growth of Liberal Movement in India."

अमर उजाला, चरखी दादरी
12.03.2023

स्वतंत्रता सेनानी एमआर जयकर की भूमिका पर डाला प्रकाश

चरखी दादरी। बिरोहड़ राजकीय महाविद्यालय के इतिहास विभाग और हरियाणा इतिहास कांग्रेस के सयुंक्त तत्वावधान में महान स्वतंत्रता सेनानी मुकुंद रामराव जयकर की 64वीं पुण्यतिथि पर ऑनलाइन कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम के संयोजक और मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप रहे। उन्होंने कहा कि मुकुंद रामराव जयकर भारत के स्वतंत्रता सेनानी, शिक्षाशास्त्री, समाजसेवी, राजनेता, न्यायाधीश और संविधान निर्मात्री सभा के सदस्य थे। 1873 में नासिक में जन्मे मुकुंद रामराव जयकर की शिक्षा बंबई के एलफिंस्टन हाई स्कूल में हुई। बाद में 1905 में लंदन से बेरिस्टर की पढ़ाई करके मुंबई हाईकोर्ट में वकालत शुरू की। वह जिन्ना के साथ बांबे क्रॉनिकल के निदेशक भी रहे थे। एमआर जयकर 1919 में जलियांवाला बाग हत्याकांड पर बनी कांग्रेस की ओर से जांच समिति के सदस्य थे। 1930 में नमक सत्याग्रह के दौरान महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरु और कांग्रेस के अन्य सदस्य गिरफ्तार कर लिए गए थे, तो मुकुंद रामराव जयकर और तेज बहादुर सप्रू ने कांग्रेस और सरकार के बीच बातचीत कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। कार्यक्रम में पवन कुमार, जितेंद्र आदि उपस्थित रहे। संवाद

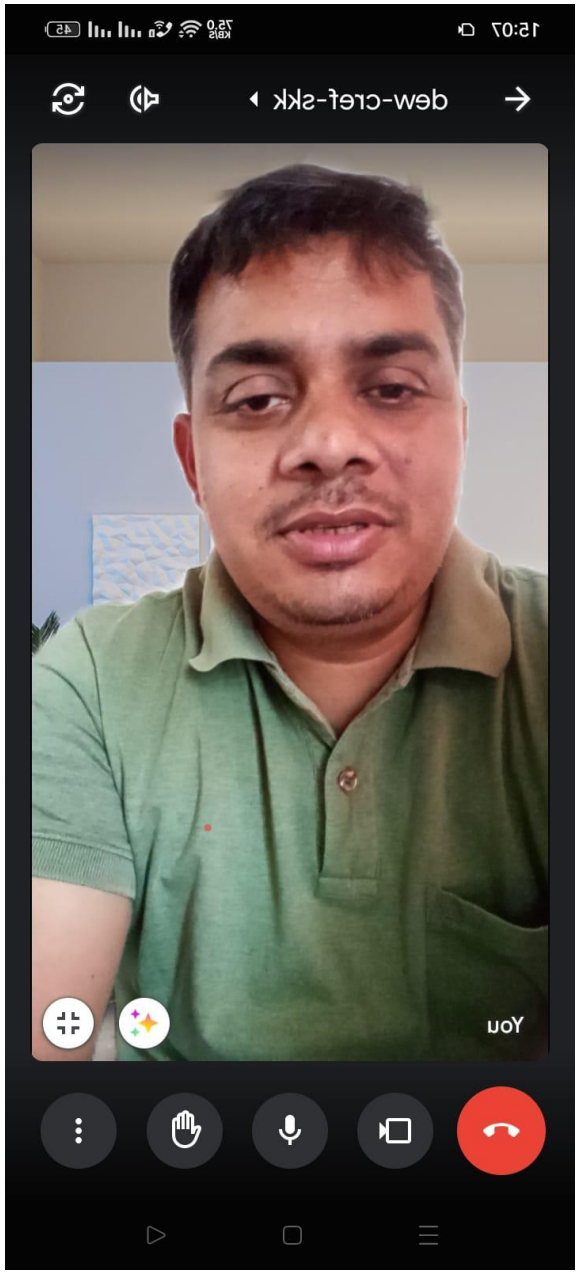

223. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 115th Birth Anniversary of Great Freedom Fighter Manmath Nath Gupta on 13.03.2023 and delivered keynote address on "Revolutionary Movement and Contribution of Manmath Nath Gupta."

अमर उजाला, झज्जर 14.03.2023

कार्यक्रम — राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में स्वतंत्रता सेनानी मन्मथनाथ गुप्त की जयंती पर कार्यक्रम आयोजित

13 साल की आयु में आंदोलन में कूदे थे मन्मथनाथ

संवाद न्यूज एजेंसी

साल्हावास। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में महान स्वतंत्रता सेनानी एवं क्रांतिकारी मन्मथनाथ गुप्त की 115वीं जयंती के अवसर पर विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। आयोजन कॉलेज के इतिहास विभाग और हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में किया गया। वक्ताओं ने बताया कि काशी विद्यापीठ में अपनी पढ़ाई के दौरान ही महात्मा गांधी के आह्वान पर मन्मथनाथ 13 साल की आयु में असहयोग आंदोलन में कूद पड़े।

कार्यक्रम को संबोधित करते वक्ता। संवाद

कार्यक्रम के संयोजक और मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप, इतिहास विभागाध्यक्ष, ने कहा कि काकोरी कांड में 16 क्रांतिकारियों को गिरफ्तार किया गया था। इसमें एक मन्मथनाथ गुप्त भी थे। जिस वक्त उन्होंने काकोरी रेल डकैती के लिए राम प्रसाद बिस्मिल का साथ देने का फैसला लिया, उनकी उम्र मात्र 17 वर्ष की थी। 1908 में संयुक्त प्रांत के बनारस में जन्मे मन्मथनाथ गुप्त की आरंभिक दो वर्ष की पढ़ाई नेपाल के विराटनगर से और आगे की पढ़ाई काशी विद्यापीठ से हुई।

1921 में ब्रिटेन के प्रिंस एडवर्ड का बहिष्कार करने के लिए गली-गली में लोगों को जागरूक करने के लिए पर्चे और पोस्टर बांटते हुए पहली बार गिरफ्तार हुए। उनका संपूर्ण जीवन भारत की आजादी के लिए समर्पित रहा और आजादी के बाद उन्होंने भारत के उत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस विशेष कार्यक्रम में डॉ. नरेंद्र सिंह, पवन कुमार, जितेंद्र इत्यादि प्रोफेसर उपस्थित रहे।

224. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 91st Martyrdom of Great Freedom Fighter and Revolutionary Leader Tirupur Kumaran on 14.03.2023 and delivered keynote address on "Revolutionary Movement and Contribution of Tirupur Kumaran."

सेटेलाइट से ... तकनीकी
होने पर स्व... ान किया
जाएगा। इस...

अमर उजाला, चरखी दादरी, 15.03.2023

क्रांतिकारी तिरुपुर कुमारन ने सीना तानकर अंग्रेजी दमनकारी नीतियों का किया सामना : डॉ. अमरदीप

संवाद न्यूज एजेंसी

चरखी दादरी। बिरोहड़ राजकीय महाविद्यालय में स्नातकोत्तर इतिहास विभाग और हरियाणा इतिहास कांग्रेस के सयुंक्त तत्वावधान में महान स्वतंत्रता सेनानी एवं क्रांतिकारी तिरुपुर कुमारन के 91वें शहादत दिवस पर कार्यक्रम आयोजित किया। कार्यक्रम के संयोजक व मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप रहे।

उन्होंने कहा कि सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान तिरुपुर कुमारन ने अंग्रेजी दमन का सीना तानकर सामना किया और राष्ट्रध्वज के लिए अपने प्राणों की आहुति दी थी। 1904 में तमिलनाडु स्थित चेन्नीमलाई में जन्मे तिरुपुर कुमारन ने परिवार की आर्थिक तंगी के कारण एक कताई मिल में एक सहायक के तौर पर काम किया। देशभक्ति की भावना होने से देशबंधु यूथ एसोसिएशन की नींव रखी। इस संगठन में पूरे तमिलनाडु के युवा शामिल हुए और सभी का एक ही लक्ष्य था अंग्रेजों से देश की आजादी। इस संगठन से कई युवा आजादी के आंदोलन के लिए प्रेरित हुए। सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान महात्मा गांधी के आह्वान पर तमिलनाडु के तिरुपुर में त्यागी पी एस सुंदरम द्वारा एक अनोखा मार्च निकाला गया।

विद्यार्थियों को तिरुपुर कुमारन के बारे में जानकारी देते डॉ. अमरदीप। विशेष

डॉ. अमरदीप ने बताया कि 11 जनवरी 1932 को जब अंग्रेजों ने प्रदर्शनकारियों पर लाठीचार्ज करना शुरू किया, तो कुमारन परिसर से बाहर नहीं निकले और अपने स्थान पर अडिग रहे। अंग्रेज पुलिसकर्मियों ने कड़ी मशक्कत की और उन्होंने सभी प्रदर्शनकारियों को पीटना शुरू कर दिया और कुमारन पर कई पुलिसकर्मी एक साथ टूट पड़े।

इसके बावजूद कुमारन ने तिरंगे को नीचे नहीं गिरने दिया और अंत में अत्यधिक चोटों के कारण उन्होंने दम तोड़ दिया कार्यक्रम में प्रोफेसर पवन कुमार व जितेंद्र भी मौजूद रहे।

225. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 89th Birth Anniversary of Great Social Reformer Saheb Kanshi Ram on 15.03.2023 and delivered keynote address on "Saheb Kanshi Ram and Social Movement in Independent India."

[redacted]

अमर उजाला, झज्जर 15.03.2023

आज के कार्यक्रम

व्याख्यान

■ **राजकीय कॉलेज** – कांशीराम की 89वीं जयंती के उपलक्ष्य पर राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ झज्जर में विशेष व्याख्यान प्रातः 11 बजे।

जयंती समारोह

■ **जाटव धर्मशाला** – शहर की जाटव धर्मशाला में बहुजन समाज पार्टी के नेता कांशीराम का जयंती समारोह 12 बजे।

दंगल

■ **लडायन** – झज्जर गांव लडायन में कुश्ती दंगल व भंडारे का आयोजन सुबह 11 बजे करवाया जाएगा।

भागवत कथा

■ **सुनारों वाली धर्मशाला** – झज्जर के पुराना तहसील मार्ग स्थित मंदिर धर्मशाला सुनार वाली में चतुर्थ श्रीमद्भागवत कथा ज्ञान यज्ञ सुबह 8 बजे।

सुंदरकांड का पाठ

■ **मंदिर** – झज्जर के बाबा कांशीगिरि मंदिर में सुबह 10 बजे संगीतमयी सुंदरकांड का पाठ किया जाएगा।

अमर उजाला, झज्जर 16.03.2023

समाज सुधारक थे कांशीराम

जयंती पर राजकीय कॉलेज में व्याख्यान का आयोजन

व्याख्यान करते डॉ. अमरदीप सिंह। संवाद

संवाद न्यूज एजेंसी

साल्हावास। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में 225 वां कार्यक्रम समाज सुधारक कांशीराम के 89वीं जयंती के उपलक्ष्य पर आयोजित किया गया।

इस विशेष कार्यक्रम के संयोजक एवम इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि कांशीराम ने भारत के लोकतंत्र की वास्तविक शक्ति से जनता को परिचित करवाया।

वे राजनीतिक जनजागरण और सामाजिक एकता के पुरोधा थे। उन्होंने आधुनिक भारत में समतामूलक समाज की स्थापना की नींव रखी।

उन्होंने कहा कि कांशीराम ने सामाजिक एकता को राष्ट्रीय एकता की दिशा में एक आवश्यक पहल मानते हुए समाज के कमजोर वर्गों को एक करके समाज की मुख्य धारा लाने के लिए एक बड़ा आंदोलन छेड़ा।

भूगोल प्रोफेसर पवन कुमार ने कहा कि कांशीराम ने भारत में आधुनिक समाज की स्थापना करने और सही अर्थों में राष्ट्र में सबकी भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए आन्दोलन छेड़े।

इतिहास प्रोफेसर जितेंद्र ने कहा कि उन्होंने सही अर्थों में भारतीय समाज के उपेक्षित वर्गों को समाज की मुख्यधारा में लाने का अनेक प्रयास किया।

उपाधीक्षक नरे ... न, देवेंद्र
अन्य कर्मचारी ... याद

अमर उजाला, चरखी दादरी 16.03.2023

कांशीराम की 89वीं जयंती पर विद्यार्थियों ने किया याद

कार्यक्रम में छात्राओं को जानकारी देते डॉ. अमरदीप। विज्ञप्ति

चरखी दादरी। बिरोहड़ स्थित राजकीय महाविद्यालय के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में समाज सुधारक कांशीराम की 89वीं जयंती मनाई गई। इस मौके पर आयोजित कार्यक्रम में विद्यार्थियों और शिक्षकों ने भाग लिया।

कार्यक्रम संयोजक डॉ. अमरदीप ने कहा कि कांशीराम ने भारत के लोकतंत्र की वास्तविक शक्ति से जनता को परिचित करवाया था। वे राजनीतिक जनजागरण और सामाजिक एकता के पुरोधा थे। उन्होंने आधुनिक भारत में समतामूलक समाज की स्थापना की नींव रखी। उन्होंने समाज के कमजोर वर्गों को एक करके समाज की मुख्य धारा लाने के लिए एक बड़े आंदोलन का शंखनाद किया था। कार्यक्रम में प्रोफेसर पवन कुमार, जितेंद्र कुमार और डॉ. राजपाल गुलिया आदि मौजूद रहे। संवाद

दैनिक भास्कर झज्जर भास्कर 16-03-2023

कांशीराम समाज सुधारक और सामाजिक एकता के पुरोधा थे

भास्कर न्यूज | झज्जर

आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में 225वां कार्यक्रम समाज सुधारक कांशीराम के 89वीं जयंती के उपलक्ष्य पर आयोजित किया गया। इस विशेष कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि मान्यवर साहब कांशीराम ने भारत के लोकतंत्र की वास्तविक शक्ति से जनता को परिचित करवाया। वे राजनीतिक जनजागरण और सामाजिक एकता के पुरोधा थे। उन्होंने आधुनिक भारत में समतामूलक समाज की स्थापना की नींव रखी। कांशीराम ने सामाजिक एकता को राष्ट्रीय एकता की दिशा में एक आवश्यक पहल मानते हुए समाज के कमजोर वर्गों को एक करके समाज की मुख्य धारा लाने के लिए एक बड़ा आन्दोलन छेड़ा। 1947 में आजादी की प्राप्ति के पश्चात जब सभी पश्चिमी देश भारत की अशिक्षित जनता के कारण भारतीय लोकतंत्र की सफलता को लेकर भय का माहौल पैदा कर रहे थे। उस भारतीय जनमानस में राजनीति को लेकर एक जनजागरण की मुहीम पैदा की और समाज के सबसे कमजोर तबके में राजनीति जागृति पैदा की। सामाजिक रूप से उन्होंने भारत में विभिन्न जातियों को एक मजबूत इकाई के रूप में सृजित करने का कार्य किया। कुमार ने कहा कि मान्यवर साहब कांशीराम ने भारत में आधुनिक समाज की स्थापना करने और सही अर्थों में राष्ट्र में सबकी भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए आन्दोलन छेड़े। इस विशेष कार्यक्रम में प्रोफेसर पवन कुमार, जितेन्द्र, डॉ. राजपाल गुलिया उपस्थित रहे।

226. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 122nd Birth Anniversary of Great Freedom Fighter Chandraprabha Saikiani on 17.03.2023 and delivered keynote address on "Chandraprabha Saikiani and Women Participation in Freedom Movement."

अमर उजाला, झज्जर 18.03.2023

चंद्रप्रभा ने साइकिल यात्रा से फैलाया था राष्ट्रीय आंदोलन

राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में स्वतंत्रता सेनानी की जयंती पर कार्यक्रम आयोजित

संवाद न्यूज एजेंसी

साल्हावास। स्वतंत्रता सेनानी चंद्रप्रभा सैकियानी की 122वीं जयंती के उपलक्ष्य पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। आयोजन राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में किया गया।

इस विशेष कार्यक्रम के संयोजक एवं इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने कहा कि असम में राष्ट्रीय आंदोलन को नई जान फूंकने में चंद्रप्रभा सैकियानी ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

उन्होंने कहा कि 16 मार्च 1901 में असम के कामरूप जिले के दोइसिंगारी गांव में जन्मीं चंद्रप्रभा सैकियानी बचपन से बड़े बदलाव कर रहीं थीं। चंद्रप्रभा और अन्य स्वतंत्रता सेनानियों ने वस्त्र यजना यानि विदेशी कपड़ों का बहिष्कार करने को लेकर मुहिम चलाई और वस्त्रों को जलाया, जिसमें बड़े पैमाने पर महिलाओं ने भी भाग लिया।

राजकीय महाविद्यालय में आयोजित कार्यक्रम में व्याख्यान देते डॉ. अमरदीप। संवाद

चंद्रप्रभा ने स्वतंत्रता आंदोलन को असम के कोने-कोने तक पहुंचाने और महिलाओं के अधिकारों के प्रति जागरूकता फैलाने के लिए पूरे राज्यभर में साइकिल से यात्रा की। ऐसा करने वालीं वे राज्य की पहली महिला मानी जाती हैं। 1930 में उन्होंने असहयोग आंदोलन में भी भाग लिया और जेल भी गईं और 1947 तक वे कांग्रेस पार्टी के कार्यकर्ता के तौर पर काम करती रहीं।

इसके साथ-साथ उन्होंने समाज सुधार के कार्यों में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए 1925 में असम के महिलाओं की पर्दा प्रथा के खिलाफ जोरदार मुहिम चलाई। इसके साथ साथ उन्होंने अपने गांव में अनुसूचित जाति के लोगों को तालाब से पानी लेने की अनुमति दिलवाने की मुहिम चलाई और सफलता पाई। कार्यक्रम में प्रोफेसर जितेंद्र आदि उपस्थित रहे।

थाना प्रभारी एसआ
लगाकर स्वागत क

पा जिलाध्यक्ष नरेश
जताया है। संवाद

अमर उजाला, चरखी दादरी18.03.2023

स्वतंत्रता सेनानी चंद्रप्रभा की जयंती मनाई

बिरोहड़ राजकीय कॉलेज में सैकियानी की 122वीं जयंती पर हुआ कार्यक्रम

संवाद न्यूज एजेंसी

चरखी दादरी। बिरोहड़ राजकीय महाविद्यालय में स्वतंत्रता सेनानी चंद्रप्रभा सैकियानी की 122वीं जयंती पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। आयोजन स्नातकोत्तर इतिहास विभाग व हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में हुआ। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. अमरदीप रहे।

बिरोहड़ राजकीय महाविद्यालय में कार्यक्रम में विचार व्यक्त करते डॉ. अमरदीप। संवाद

उन्होंने कहा कि असम में राष्ट्रीय आंदोलन में नई जान फूंकने में चंद्रप्रभा सैकियानी ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 16 मार्च 1901 में असम के कामरूप जिले के दोइसिंगारी गांव में जन्मी चंद्रप्रभा सैकियानी ने बचपन से बड़े बदलाव किए। जब वे 13 साल की थीं तो उन्होंने अपने गांव की लड़कियों के लिए प्राइमरी स्कूल खोला। वहां इस 13 साल की शिक्षिका को देखकर स्कूल इंस्पेक्टर प्रभावित हुए और उन्होंने चंद्रप्रभा सैकियानी को नौगांव मिशन स्कूल का वजीफा दिलवाया। लड़कियों के साथ शिक्षा के स्तर पर हो रहे भेदभाव के खिलाफ भी उन्होंने अपनी आवाज को नौगांव मिशन स्कूल में जोर शोर से बुलंद किया। उन्होंने असहयोग आंदोलन के दौरान किरोनमॉयी अग्रवाल की मदद से तेजपुर में महिला समिति का गठन किया। चंद्रप्रभा और अन्य स्वतंत्रता सेनानियों ने विदेशी कपड़ों का बहिष्कार करने को लेकर मुहिम चलाई।

227. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 92nd Shahidi Diwas of Great Freedom Fighter and Revolutionaries Bhagat Singh, Rajguru and Sukhdev on 22.03.2023 and delivered keynote address on "Historical Legacy of Shahidi Diwas."

Amar Ujala, Jhajjar 24.03.2023

शहीद दिवस भारतीय इतिहास का महत्वपूर्ण पड़ाव : अमरदीप

राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में शहीद दिवस पर कार्यक्रम आयोजित

संवाद न्यूज एजेंसी

महाविद्यालय में व्याख्यान देते डॉ. अमरदीप। संवाद

साल्हावास। आजादी के अमृत महोत्सव शृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में शहीद दिवस के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के संयोजक और मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप, इतिहास विभागाध्यक्ष ने कहा कि शहीदी दिवस भारतीय इतिहास का महत्वपूर्ण पड़ाव था।

उन्होंने बताया कि भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव तीनों देशभक्तों की फांसी ने अंग्रेजी हुकूमत के ताबूत में कीलें ठोकी थी। भगत सिंह अपने आप में एक आंदोलन और जागृत विचारधारा थे। भगत सिंह ने कहा था कि ब्रिटिश सरकार उन्हें मार सकती है परंतु उनकी विचारधारा को नहीं। भगत सिंह ने न केवल भारतीय आजादी की वकालत की थी, बल्कि वे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद से आजादी की बात करते थे। भगत सिंह की क्रांति केवल बम और पिस्तौल की राजनीती नहीं बल्कि संगठित विचारों और उदारवादी एवं समाजवादी विचारधारा का प्रवाह बन गई थी। इस कार्यक्रम में प्रोफेसर जितेंद्र, पवन कुमार, डॉ अजय कुमार, डॉ राजपाल गुलिया, अजय सिंह इत्यादि उपस्थित रहे।

अमर उजाला, चरखी दादरी 23.03.2023

शहीदी दिवस भारतीय इतिहास का महत्वपूर्ण पड़ाव

चरखी दादरी। आजादी के अमृत महोत्सव शृंखला के तहत बिरोहड़ राजकीय महाविद्यालय में स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में 92वें शहीदी दिवस पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के संयोजक और मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप ने कहा कि शहीदी दिवस भारतीय इतिहास का महत्वपूर्ण पड़ाव था। भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव तीनों देशभक्तों की फांसी ने अंग्रेजी हुकूमत के ताबूत में कीलें ठोकी थी। भगत सिंह अपने आप में एक आंदोलन और जागृत विचारधारा थे। कार्यक्रम में प्रोफेसर जितेंद्र, पवन कुमार, डॉ. अजय कुमार, डॉ. राजपाल गुलिया, अजय सिंह उपस्थित रहे। संवाद

228. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 143rd Birth Anniversary of Great Freedom Fighter Basanti Devi on 25.03.2023 and delivered keynote address on "Contribution of Basanti Devi in Freedom Struggle."

न्यूज डायरी

अमर उजाला, चरखी दादरी
26.03.2023

पौधरोपण कर बसंती देवी को दी श्रद्धांजलि

चरखी दादरी। बिरोहड़ स्थित राजकीय महाविद्यालय में स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसके तहत महान क्रांतिकारी एवं स्वतंत्रता सेनानी बसंती देवी की 143वीं जयंती पर पौधरोपण किया गया। कार्यक्रम में जितेंद्र, पवन कुमार, दीपक और मनजीत आदि मौजूद रहे। संवाद

229. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 176th Birth Anniversary of Great Freedom Fighter and Social Reformer Anand Mohan Bose on 27.03.2023 and delivered keynote address on "Anand Mohan Bose: Great Patriot and Educationalist."

नारेबाजी भी की। सदस्यता अभियान चलाते कार्यकर्ता। • विज्ञप्ति हिस्सा ले रहे हैं तथा आम आद

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 29.07.2023

महान राजनीतिज्ञ, शिक्षाविद व समाज सुधारक थे आनंद

जागरण संवाददाता, चरखी दादरी :आजादी के अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में आनंद मोहन बोस की 176वीं जयंती के अवसर पर कार्यक्रम का आयोजन हुआ। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता डा. अमरदीप ने कहा कि आनंद मोहन बोस ब्रिटिश भारत के दौरान एक भारतीय राजनीतिज्ञ, शिक्षाविद, समाज सुधारक और वकील थे।

उन्होंने कहा कि आनंद मोहन का जन्म 1847 में मेमन सिंह बंगाल में हुआ था। इनकी शिक्षा कलकत्ता में हुई। 1874 में वे पहले भारतीय रैंगलर बन गए। कैम्ब्रिज विवि में रैंगलर उस छात्र को कहते हैं जिसने प्रथम श्रेणी के सम्मान के साथ गणितीय ट्राइपोस के तीसरे वर्ष को पूरा किया हो। आनंद मोहन अपने छात्र काल से ही राजनीति में रुचि रखते थे। इंग्लैंड में रहते हुए उन्होंने कुछ अन्य भारतीयों के साथ इंडिया सोसाइटी की स्थापना की। वे 1884 तक इंडियन एसोसिएशन के सचिव रहे और जीवन भर इसके अध्यक्ष रहे। उन्होंने भारत के वायसराय लार्ड लिटन के वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट और भारतीय सिविल सेवा परीक्षा के लिए अधिकतम आयु में कटौती जैसे कृत्यों का जोरदार विरोध किया। बाद में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के वरिष्ठ नेता बन गए। प्रोफेसर जितेंद्र ने अपने विचार रखे।

बिरोहड़ के सरकारी कालेज में छात्राओं को संबोधित करते डा. अमरदीप। • विज्ञप्ति।

230. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 303rd Death Anniversary of Great King Chhatrapati Shivaji on 03.04.2023 and delivered keynote address on "Chhatrapati Shivaji: Inspiration of Youth During Freedom Struggle."

58325 रुप विरेंद्र व
प्रति 10 ग्रा की प्रशंसा

अमर उजाला, चरखी दादरी 04.04.2023

छत्रपति शिवाजी का जीवन संघर्ष और वीरता का प्रतीक : अमरदीप

राजकीय कॉलेज में छात्राओं को वीर शिवाजी की जानकारी देते डॉ. अमरदीप।

संवाद न्यूज एजेंसी

चरखी दादरी। बिरोहड़ राजकीय महाविद्यालय के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में छत्रपति शिवाजी की 343वीं पुण्यतिथि पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के संयोजक और मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप रहे।

उन्होंने कहा कि छत्रपति शिवाजी का जीवन संघर्ष और जीवटता का प्रतीक था। स्वराज प्राप्ति का अधिकार उनका मुख्य ध्येय था और इसके लिए उन्होंने विशाल मुगल साम्राज्य को हिलाकर रख दिया था। उन्होंने कहा कि आजादी के आंदोलन में नौजवान युवाओं को छत्रपति शिवाजी के जीवन और संघर्ष से ही प्रेरणा मिली। इसी लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए बाल गंगाधर तिलक ने 1895 में शिवाजी महोत्सव आयोजित करने प्रारंभ किए। इसी कारण युवाओं में आजादी का जज्बा पैदा हुआ। शिवाजी महोत्सव की लहर पूरे भारत में फैली और युवाओं ने क्रांतिकारी आंदोलन के जरिये ब्रिटिश गुलामी का अंत करने की ठानी।

इसके बाद महाराष्ट्र, बंगाल, पंजाब, उत्तर प्रदेश व देश के अनेक हिस्सों में असंख्य क्रांतिकारी पैदा हुए। इस मौके पर प्रोफेसर पवन कुमार व जितेंद्र भी उपस्थित रहे।

विद्यार्थियों को सु... पोस्टर मेकिंग
केंद्र पर आवश्... तियोगिता का
करनी होगी। संव...

अमर उजाला, झज्जर 04.04.2023

शिवाजी का जीवन जीवटता का प्रतीक

संवाद न्यूज एजेंसी

साल्हावास। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में छत्रपति शिवाजी की पुण्यतिथि पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। संयोजक और मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप, इतिहास विभागाध्यक्ष ने कहा कि छत्रपति शिवाजी का जीवन संघर्ष और जीवटता का प्रतीक था।

कार्यक्रम में व्याख्यान देते डॉ. अमरदीप। संवाद

उन्होंने कहा कि स्वराज प्राप्ति का अधिकार उनका मुख्य ध्येय था, जिसके लिए उन्होंने मुगल साम्राज्य को हिला कर रख दिया था। आजादी के आंदोलन में नौजवान युवाओं को छत्रपति शिवाजी के जीवन और संघर्ष से अत्यंत प्रेरणा मिली। इसी लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए बाल गंगाधर तिलक ने 1895 में शिवाजी महोत्सव आयोजित करने प्रारम्भ किये जिसके कारण युवाओं में आजादी प्राप्त करने का जज्बा पैदा हुआ। उसके बाद ही महाराष्ट्र में क्रांतिकारी आंदोलन की नींव पड़ी।

231. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 176th Birth Anniversary of Great Freedom Fighter V.V. Subrahmanyam on 06.04.2023 and delivered keynote address on "Contribution of V.V. Subrahmanyam in Freedom Struggle."

उपस्थित रहे।

दैनिक जागरण, चरखी दादरी, 07.04.2023

महान स्वतंत्रता सेनानी थे वीवी सुब्रमण्यम : डा. अमरदीप

जागरण संवाददाता, चरखी दादरी : आजादी के अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में क्रांतिकारी वीवी सुब्रमण्यम की 140वीं जयंती के अवसर पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता डा. अमरदीप ने कहा कि वीवी सुब्रमण्यम क्रांतिकारी राष्ट्रभक्त थे। उनका जन्म दो अप्रैल 1881 को मद्रास प्रदेश के तिरुचिरापल्ली जिले में हुआ था। शिक्षा पूरी करने के बाद वे अपने जिले में वकालत करने लगे। वे रंगून गए और फिर बैरिस्टर बनने के लिए इंग्लैंड पहुंचे। उन दिनों उनका संपर्क दामोदर विनायक सावरकर से भी हुआ। इंग्लैंड में कानून की शिक्षा पूरी करने के बाद जैसे ही वहां के सम्राट के प्रति निष्ठा की शपथ लेने का समय आया तो सुब्रमण्यम इसके लिए तैयार नहीं हुए और पांडिचेरी जो फ्रांस के अधिकार में होने के कारण अंग्रेजों की पुलिस की पहुंच से बाहर था वहां चले गए। 1910 में पांडिचेरी पहुंचने पर उन्होंने युवाओं को शस्त्र चलाना सिखाया और वे देश के अन्य क्रांतिकारियों के पास भी हथियार पहुंचाए। वीवी सुब्रमण्यम अय्यर 1920 तक पांडिचेरी में रहे और यहां उनकी महर्षि अरविंद से मुलाकात हुई। यहां राजद्रोह का मुकदमा चला और सजा हुई। महाविद्यालय में प्रोफेसर पवन कुमार और जितेंद्र ने भी अपने विचार रखे।

232. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 166th Birth Anniversary of Great Freedom Fighter Mangal Pandey on 08.04.2023 and delivered keynote address on "1857 Revolt and Contribution of Mangal Pandey."

अमर उजाला, झज्जर 09.04.2023

मंगल पांडे की वीरता से कांपते थे अंग्रेज : अमरदीप

संवाद न्यूज एजेंसी

स्वतंत्रता सेनानी मंगल पांडे की 166 वीं शहादत पर व्याख्यान

साल्हावास। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महान स्वतंत्रता सेनानी मंगल पांडे की 166 वीं शहादत के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया।

कार्यक्रम के संयोजक एवं मुख्य वक्ता डॉ अमरदीप ने कहा कि मंगल पांडे ने अपने शौर्य और वीरता से ब्रिटिश हुकूमत को हिला दिया था। उनकी वीरता की कहानी आज भी युवाओं में देशभक्ति का संचार करती है। 19 जुलाई 1827 को फैजाबाद के सुरुरपुर में जन्में मंगल पांडे मूल रूप से यूपी के बलिया जिले के नगवा गांव के रहने वाले थे। 1849 में 18 साल की उम्र में वह ईस्ट इंडिया कंपनी की 34वीं बंगाल नेटिव इन्फैन्ट्री में सिपाही के तौर पर भर्ती हुए।

उन्होंने कहा कि 1856 में सिपाहियों के लिए एक नई इनफील्ड राइफल लाई गई। मातादीन हेला ने मंगल पांडे को सुचना दी थी कि इस राइफल की कारतूस में गाय और सुअर की चर्बी मिली होती थी जिसे मुंह से काटकर राइफल में लोड करना होता था। यह बात जंगल में आग की तरह सारे बैरकपुर में फ़ैल गई और एक बड़े विद्रोह की रुपरेखा लिखी जाने लगी और इसका नेतृत्व मंगल पांडे ने किया। मंगल पांडे ने बंगाल के बैरकपुर छावनी में 29 मार्च 1857 को विद्रोह करके आजादी का बिगुल बजा दिया और दो अंग्रेज अफसरों पर हमला कर दिया। इस विद्रोह के कारण मंगल पांडे को 8 अप्रैल 1857 फांसी दी गई। इस घटना ने देश के आजादी के आंदोलन को एक नई दिशा दी। इस अवसर पर प्रोफेसर जितेंद्र और पवन कुमार इत्यादि उपस्थित रहे।

राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में व्याख्यान करते प्रवक्ता। संवाद

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 09.04.2023

मंगल पांडे ने हिला दी थी ब्रिटिश हुकूमत : डा. अमरदीप

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 09.04.2023

जागरण संवाददाता, चरखी दादरी : आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में स्वतंत्रता सेनानी मंगल पांडे की 166वीं पुण्यतिथि पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के संयोजक एवं मुख्य वक्ता डा. अमरदीप ने कहा कि मंगल पांडे ने अपने शौर्य और वीरता से ब्रिटिश हुकूमत को हिला दिया था। 19 जुलाई 1827 को फैजाबाद में जन्मे मंगल पांडे मूल रूप से यूपी के बलिया जिले के नगवा गांव के रहने वाले थे। 1849 में वे ईस्ट इंडिया कंपनी की 34वीं बंगाल नेटिव इन्फेंट्री में सिपाही के तौर पर भर्ती हुए। 1856 में सिपाहियों के लिए एक नई इनफील्ड राइफल लाई गई। मातादीन हेला ने मंगल पांडे को सूचना दी थी कि इस राइफल की कारतूस में गाय और सुअर की चर्बी मिली होती थी जिसे मुंह से काटकर राइफल में लोड करना होता था। यह बात बैरक में फैल गई और एक बड़े विद्रोह का नेतृत्व मंगल पांडे ने किया। मंगल पांडे ने बंगाल की बैरकपुर छावनी में 29 मार्च 1857 को विद्रोह कर आजादी का बिगुल बजा दिया और दो अंग्रेज अफसरों पर हमला कर दिया। मंगल पांडे को गिरफ्तार कर लिया गया। इस विद्रोह के कारण मंगल पांडे को आठ अप्रैल 1857 फांसी दी गई।

गांव बिरोहड़ के सरकारी कालेज में मंगल पांडे के बारे में बताते डा. अमरदीप। विज्ञप्ति

233. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 166th Birth Anniversary of Great Freedom Fighter and Social Reformer Jyotiba Phule on 11.04.2023 and delivered keynote address on "Social Reform Movement and Contribution of Jyotiba Phule."

अमर उजाला, चरखी दादरी 12.04.2023

स्त्रियों को शिक्षा का अधिकार दिलाने में बीता ज्योतिबा फुले का जीवन : अमरदीप

बिरोहड़ महाविद्यालय में ज्योतिबा फुले की जयंती पर किया गया कार्यक्रम

संवाद न्यूज एजेंसी

चरखी दादरी। बिरोहड़ स्थित राजकीय महाविद्यालय में समाज सुधारक एवं स्वतंत्रता सेनानी ज्योतिबा फुले की 166वीं जयंती पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। आयोजन स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में हुआ।

कार्यक्रम संयोजक एवं मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप ने कहा कि ज्योतिबा फुले 19वीं सदी के एक महान समाज सुधारक, समाज प्रबोधक, विचारक, समाजसेवी, लेखक, दार्शनिक तथा क्रांतिकारी कार्यकर्ता थे। उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन स्त्रियों को शिक्षा का अधिकार दिलाने व बाल विवाह को बंद कराने में लगा दिया। फुले कुप्रथा व अंधश्रद्धा के जाल से समाज को मुक्त करवाकर आधुनिक एवं समतामूलक समाज की स्थापना करना चाहते थे।

विद्यार्थियो को ज्योतिबा फुले के बारे में जानकारी देते डॉ. अमरदीप। संवाद

डॉ. अमरदीप ने बताया कि ज्योतिबा फुले का जन्म 11 अप्रैल 1827 में पुणे में हुआ था। उनका विवाह 1840 में सावित्री बाई से हुआ, जो बाद में स्वयं एक प्रसिद्ध समाजसेवी बनीं। दलित व स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में दोनों दंपती ने मिलकर काम किया। महात्मा ज्योतिबा फुले ने साल 1848 में लड़कियों के लिए देश का पहला महिला स्कूल खोला। पुणे में खोले गए स्कूल में उनकी पत्नी सावित्रीबाई पहली शिक्षिका बनीं। उन्होंने बताया कि ज्योतिबा फुले ने दलितों और वंचितों को न्याय दिलाने एवं सामाजिक परिवर्तन के आंदोलन को आगे बढ़ाने के लिए 24 सितंबर 1873 को सत्यशोधक समाज की स्थापना की। 28 नवम्बर 1890 को महान समाज सुधारक इस दुनिया को छोड़कर चले बसे। इस मौके पर इतिहास प्रोफेसर जितेंद्र, पवन कुमार व अजय सिंह आदि मौजूद रहे।

अमर उजाला, झज्जर 12.04.2023

कुप्रथा के घोर विरोधी थे ज्योतिबा फुले

राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में मनाई समाज सुधारक ज्योतिबा फुले की 166 वीं जयंती

संवाद न्यूज एजेंसी

सात्हावास। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महान समाज सुधारक ज्योतिबा फुले की 166 वीं जयंती के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

इस कार्यक्रम के संयोजक और मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप ने कहा कि ज्योतिबा फुले 19वीं सदी के एक महान समाजसुधारक, समाज प्रबोधक, विचारक, समाजसेवी, लेखक, दार्शनिक कार्यकर्ता थे। उन्होंने अपना पूरा जीवन स्त्रियों को शिक्षा का अधिकार दिलाने, बाल विवाह को बंद कराने में लगा दिया। फुले समाज की कुप्रथा से मुक्त कराया। वह समतामूलक समाज की स्थापना करना चाहते थे। ज्योतिबा फुले का जन्म

ज्योतिबा फुले की 166 वीं जयंती पर व्यायख्यान देते हुए डॉ. अमरदीप सिंह। संवाद

11अप्रैल 1827 ई. में पुणे में हुआ था। ज्योतिबा ने कुछ समय पहले तक मराठी में अध्ययन किया, बीच में पढ़ाई छूट गई और बाद में 21 वर्ष की उम्र में अंग्रेजी की सातवीं कक्षा की पढाई पूरी की। इनका विवाह 1840 में सावित्री बाई से हुआ जो बाद में स्वयं एक प्रसिद्ध समाजसेवी बनीं। दलित व स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में दोनों पति-पत्नीव ने मिलकर काम किया वह एक कर्मठ और समाजसेवी की भावना रखने वाले व्यक्ति थे। महात्मा ज्योतिबा फुले ने साल 1848 में लड़कियों के लिए देश का पहला महिला स्कूयल खोलकर एक नयी क्रांति का शंखनाद किया ज्योतिबा फुले ने दलितों और वंचितों को न्याय दिलाने एवं सामाजिक परिवर्तन के आंदोलन को आगे बढ़ाने के लिए 24 सितंबर 1873 को सत्यशोधक समाज की स्थापना की। इसका प्रमुख उद्देश्य शूद्रों-अतिशूद्रों को न्याय दिलाना, उन्हें शिक्षा के लिए प्रोत्साहित करना, उन्हें उत्पीड़न से मुक्ति दिलाना, वंचित वर्ग के युवाओं के लिए प्रशासनिक क्षेत्र में रोजगार के अवसर उपलब्ध कराना आदि शामिल था। वर्ष 1888 में मुंबई की एक सभा में महात्मा की उपाधि से नवाज गया। 28 नवम्बर 1890 को यह महान समाज सुधारक इस दुनिया को छोड़कर चले गए लेकिन अपने पीछे आधुनिक भारत एवं समतामूलक समाज की स्थापना का सशक्त आंदोलन छोड़ गए।

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 12.04.2023

'महान समाज सुधारक थे महात्मा ज्योतिबा फूले'

जागरण संवाददाता, चरखी दादरी: गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में स्वतंत्रता सेनानी ज्योतिबा फूले की 166वीं जयंती के अवसर पर कार्यक्रम आयोजित किया।

कार्यक्रम में मुख्य वक्ता डा. अमरदीप ने कहा कि ज्योतिबा फूले 19वीं सदी के एक महान समाजसुधारक, समाज प्रबोधक, विचारक, समाजसेवी, लेखक, दार्शनिक व क्रांतिकारी कार्यकर्ता थे। उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन स्त्रियों

बिरोहड़ के सरकारी कालेज में ज्योतिबाफुले के बारे में बताते डा. अमरदीप। • विज्ञप्ति

को शिक्षा का अधिकार दिलाने, बाल विवाह को बंद करवाने में लगा दिया। फुले समाज की कुप्रथा, अंधश्रद्धा की जाल से समाज को मुक्त करवा कर आधुनिक एवं समतामूलक समाज की स्थापना करना चाहते थे। उन्होंने 21 वर्ष की उम्र में अंग्रेजी की सातवीं कक्षा की पढ़ाई पूरी की। इनका विवाह 1840 में सावित्री बाई से हुआ, जो बाद में स्वयं एक प्रसिद्ध समाजसेवी बनीं। उन्होंने कहा कि ज्योतिबा फुले ने वर्ष 1848 में लड़कियों के लिए देश का पहला महिला स्कूल खोलकर एक नई क्रांति का शंखनाद किया। पुणे में खोले गए स्कूल में उनकी पत्नी सावित्रीबाई पहली शिक्षिका बनीं। उनकी समाज सेवा से प्रभावित होकर 1888 में मुंबई की एक सभा में महात्मा की उपाधि से नवाजा गया। इस अवसर पर इतिहास प्रो. जितेंद्र, पवन कुमार, अजय सिंह इत्यादि उपस्थित रहे।

234. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 104th Anniversary of Jallianwala Bagh on 12.04.2023 and delivered keynote address on "Jallianwala Bagh: An Unforgotten Event of Indian Freedom Struggle."

अमर उजाला, झज्जर 13.04.2023

जलियांवाला कांड से सहम गए थे देशवासी

राजकीय महाविद्यालय में मनाई जलियांवाला बाग नरसंहार की वर्षगांठ

संवाद न्यूज एजेंसी

साल्हावास। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में जलियांवाला बाग नरसंहार की 104 वीं वर्षगांठ के अवसर पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्रोफेसर जितेंद्र ने कहा कि जलिया वाला बाग की इस घटना ने भारत की आजादी के आंदोलन को तेज किया और आजादी की नींव मजबूत कर दी।

इस कार्यक्रम के संयोजक और मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप, इतिहास विभागाध्यक्ष ने कहा कि जलियांवाला बाग नरसंहार ने भारतीय जनमानस को हिला कर रख दिया था और ब्रिटिश हुकूमत का काला चेहरा सबके सामने उजागर कर दिया था। 1919 के रॉलेट बिल का सर्वाधिक विरोध पंजाब में हुआ और देश के अधिकांश शहरों में 30 मार्च और 6 अप्रैल को देशव्यापी हड़ताल का आह्वान किया गया। पंजाब के गवर्नर डायर ने अमृतसर के लोकप्रिय नेताओं डॉ सत्यपाल और सैफुद्दीन को अमृतसर से निर्वासित करने का फैसला किया और महात्मा गांधी को भी पंजाब में घुसने नहीं दिया गया और पलवल में गिरफ्तार करके वापस भेज दिया गया। 13 अप्रैल को शाम के साढ़े चार बजे जनरल डायर ने जलियांवाला बाग में शांतिपूर्ण सभा में बिना किसी पूर्व चेतावनी के हजारों लोगों पर गोलियां बरसाने का आदेश दे दिया। करीब दस मिनट की गोलीबारी में सैनिकों ने करीब 1650 राउंड गोलियां चलाईं। अंग्रेजी सरकार ने इस घटना पर पर्दा डालने के लिए केवल 379 लोगों को मृत माना जबकि भारतीय नेताओं में रिपोर्ट में एक हजार से ज्यादा लोगों की मृत्यु इस नरसंहार में हुई थी।

राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में व्याख्यान करते प्रवक्ता। संवाद

235. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 132nd Birth Anniversary of Great Freedom Fighter and Social Reformer & Bharat Ratna Baba Saheb Dr. B.R. Ambedkar on 13.04..2023 and delivered keynote address on "Contribution of Dr. Ambedkar in Nation Building."

अमर उजाला, झज्जर 14.04.2023

श्रद्धांजलि — विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों और ग्रामीण अंचल में वीरवार को बाबा साहेब की जयंती के उपलक्ष्य में हुए कार्यक्रम

भीमराव आंबेडकर समाज के सच्चे उद्धारक थे : डॉ. अमरदीप

संवाद न्यूज एजेंसी

साल्हावास। क्षेत्र में गुरुवार को विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों में तथा ग्रामीण अंचल में बाबा साहेब डॉ. भीमराव आंबेडकर की जयंती उपलक्ष्य में कार्यक्रम हुए।

बिरोहड़ कॉलेज में डॉक्टर अंबेडकर जयंती पर विस्तृत व्याख्यान का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप ने कहा कि भीमराव आंबेडकर समाज के सच्चे उद्धार थे। उन्होंने कहा कि डॉ आंबेडकर एक महान राष्ट्रवादी थे।

उन्होंने जोरदार आह्वान किया था कि अगर मेरे हित और देश के हित आपस में टकराते है तो अपने हितों को देश की भलाई के लिए न्योछावर कर दूंगा। डॉ. आंबेडकर महान समाज सुधारक और सामाजिक समरसता के मसीहा थे। प्रशासनिक अधिकारी डॉ. अनीता रानी ने कहा कि डॉ. भीमराव आंबेडकर एक महान अर्थशास्त्री, न्यायविद, राजनीतिज्ञ, समाज सुधारक थे और उन्होंने समाज का निर्माण स्वतंत्रता, समानता और भाईचारे के सिद्धांतों पर आधारित करने पर जोर दिया।

बिरोहड़ कॉलेज में डॉ. आंबेडकर जयंती के उपलक्ष्य पर व्याख्यान देते डॉ. अमरदीप। संवाद

जलियावाला बाग के शहीदों व बाबा साहेब को दी श्रद्धांजलि : झज्जर। राजकीय मॉडल संस्कृति विद्यालय में वीरवार को जलियांवाला बाग के शहीदों को श्रद्धांजलि दी गई।

भारत के संविधान निर्माता बाबा साहेब आंबेडकर को भी प्रार्थना सभा में श्रद्धांजलि दी गई और उनके कार्यों को याद किया गया। विद्यालय में प्रार्थना सभा में प्राचार्य जोगेन्दर सिंह के नेतृत्व में एनएसएस कार्यक्रम अधिकारी प्रवीण खुराना ने विद्यार्थियों को जलियांवाला बाग हत्याकांड की घटना से विस्तार से अवगत कराया और बाबा साहेब आंबेडकर के जीवन के संदर्भ में जानकारी दी। कार्यक्रम अधिकारी प्रवीण खुराना ने कहा कि वीरों की बदौलत थी आज हम आजादी की हवा में सांस ले रहे हैं। विद्यार्थियों को प्रवक्ता रणवीर सिंह ने भी संबोधित किया और उन्हें आदर्श विद्यार्थी बनने के लिए प्रेरित किया।

उन्होंने कहा कि हर विद्यार्थी को अपना लक्ष्य पाने के लिए निरंतर प्रयास करना पड़ता है, तभी तो लक्ष्य हासिल कर पाता है। शहीदों की याद में 1 मिनट का मौन रखकर उन्हें श्रद्धांजलि भी दी गई। इधर, राजकीय मॉडल संस्कृति विद्यालय लड़ायन में वीरवार को जलियांवाला बाग के शहीदों को श्रद्धांजलि दी गई तथा भारत के संविधान निर्माता बाबा साहेब अंबेडकर की जयंती मनाई। विद्यार्थियों को उनके पद चिह्नों पर चलने के लिए प्रेरित किया गया।

निबंध प्रतियोगिता में नेहा अव्वल

साल्हावास। राजकीय महाविद्यालय बहु में बाबा साहब पर निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में बीकॉम द्वितीय वर्ष से नेहा प्रथम स्थान पर, बीए तृतीय वर्ष से वर्षा द्वितीय स्थान पर तथा बीकॉम द्वितीय वर्ष से नेतिका ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। इतिहास विभाग के प्राध्यापक नरेंद्र कुमार ने बाबा साहेब डॉ भीमराव अंबेडकर के समग्र जीवन प्रसंग पर प्रकाश डाला। डॉ जितेंद्र कुमार भारद्वाज ने बताया कि डॉ. आंबेडकर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान रखने वाले महापुरुष है। संवाद

मातनहेल कॉलेज में बाबा साहब को किया नमन

साल्हावास। वीरवार को राजकीय महाविद्यालय मातनहेल में बैसाखी और डॉ. भीमराव आंबेडकर जयंती के उपलक्ष्य में बाबा साहेब भीमराव आंबेडकर की जयंती पर कार्यक्रम का आयोजित करवाया गया। प्राचार्य रणवीर सिंह आर्य ने बाबा साहेब के जीवन पर प्रकाश डाला और छात्रों को उनके जीवन का अनुकरण करने के लिए प्रेरित किया। डॉ. नवीन पूनिया ने भी बाबासाहेब के जीवन के सिद्धांतों के बारे में विस्तार से चर्चा की। संवाद

अमर उजाला, झज्जर 14.04.2023

डॉ. आंबेडकर संघर्ष की मिसाल : अनीता

आंबेडकर के जन्मदिवस पर बिरोहड़ राजकीय कॉलेज में कार्यक्रम हुआ

संवाद न्यूज एजेंसी

चरखी दादरी। बिरोहड़ स्थित राजकीय महाविद्यालय में बाबा साहेब डॉ. भीमराव आंबेडकर के 132वें जन्मदिवस पर सेमिनार का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता महाविद्यालय की प्रशासनिक अधिकारी डॉ. अनीता रानी ने की।

मंच संचालन डॉ. अमरदीप ने किया। डॉ. अनीता ने कहा कि डॉ. आंबेडकर एक महान अर्थशास्त्री, न्यायविद, राजनीतिज्ञ, समाज सुधारक थे। उन्होंने समाज का निर्माण स्वतंत्रता, समानता और भाईचारे के सिद्धांतों पर काम किया।

कार्यक्रम के संयोजक डॉ. अमरदीप ने कहा कि डॉ. आंबेडकर एक महान राष्ट्रवादी थे। उन्होंने आजीवन देश और समाज की बेहतरी के लिए अथक संघर्ष किया। उनका जीवन हर भारतीय को एक श्रेष्ठ भारत के निर्माण के लिए अपना समुचित योगदान देने के लिए प्रेरित करता है।

सहायक प्रोफेसर डॉ. सुरेंद्र सिंह ने कहा कि डॉ. आंबेडकर अपने समय के सबसे ज्यादा शिक्षित व्यक्ति थे, इसीलिए अमेरिका की कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय ने उन्हें ज्ञान का प्रतीक कहकर उनकी महानता को नमन किया। प्राध्यापक डॉ. अजय कुमार ने कहा कि डॉ. आंबेडकर का जीवन त्याग और संघर्ष की मिसाल है।

विद्यार्थियों को दी जलियांवाला कांड की जानकारी

झोझूकलां। आदमपुर डाढ़ी स्थित आर्यवर्त वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में वीरवार को जलियांवाला बाग कांड की 104वीं बरसी पर श्रद्धांजलि सभा आयोजित की गई। स्कूल चेयरमैन पवन वशिष्ठ, निदेशक सज्जन सिंह, सचिव सुखबीर सांगवान ने बच्चों को जलियांवाला कांड के बारे में विस्तार से बताया। विद्यार्थियों के बीच पेंटिंग और स्लोगन स्पर्धा करवाई गई। अंत में सभी प्रतिभागियों को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर प्राचार्य संदीप जैन ने प्रार्थना सभा में बच्चों को देश भक्ति व देश के प्रति वफादार रहने के प्रति प्रोत्साहित किया। संवाद

236. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 175th Birth Anniversary of Great Freedom Fighter and Social Reformer Kandukuri Veeresalingam on 17.04..2023 and delivered keynote address on “Contribution of Kandukuri Veeresalingam in Freedom Struggle.”

दैनिक जागरण, चरखी

नारी शिक्षा के पक्षधर थे कंदुकूरी वीरेशलिंगम : डा. अमरदीप

जागरण संवाददाता, चरखी दादरी: आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में समाज सुधारक कंदुकूरी वीरेशलिंगम के 175वें जन्मदिवस पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के संयोजक डा. अमरदीप ने कहा कि सनातन पंथी ब्राह्मण परिवार में 16 अप्रैल 1848 को आंध्र प्रदेश में जन्मे कंदुकूरी वीरेशलिंगम जाति पाति के कट्टर विरोधी थे। कंदुकूरी वीरेशलिंगम ने जाति विरोधी आंदोलन का सूत्रपात किया। 19वीं सदी के अंतिम चरण में संपूर्ण देश में सांस्कृतिक जागरण की लहर दौड़ रही थी और सामंती ढांचा टूट चुका था। देश में संवेदनशील मध्यम वर्ग तैयार हो गया था जो व्यापक राष्ट्रीय और सामाजिक हितों की दृष्टि से सोचने लगा था। इस वर्ग ने यह अनुभव किया कि सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक और सांस्कृतिक सभी क्षेत्रों में सुधार की आवश्यकता है। जिस तरह हिंदी साहित्य के इतिहास में भारतेंदु हरिश्चंद्र इस प्रगतिशील चेतना के प्रतिनिधि थे उसी तरह कंदुकूरी वीरेशलिंगम पंतुलु तेलुगु साहित्य के इतिहास में प्रगतिशील चेतना के प्रतिनिधि थे।

उन्होंने समाज सुधार के कार्यों, भाषणों और साहित्य के माध्यम से जागरण का संदेश दिया।स्त्री शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए उन्होंने साल 1874 में राजमंड्री के समीप धवलेश्वर्म में और 1884 में इन्निसपेटा में बालिकाओं के लिए पाठशालाओं की स्थापना की। दक्षिण भारत में समाज सुधार एवं तेलगू साहित्य के लिए विशेष योगदान देने वाले कंदुकूरी वीरेशलिंगम का निधन 1919 ई. में हुआ।

दादरी 18.04.23

237. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 64th Death Anniversary of Great Freedom Fighter and Revolutionary Barindra Kumar Ghosh on 17.04..2023 and delivered keynote address on "Revolutionary Movement and Contribution Barindra Kumar Ghosh in Freedom Struggle."

अमर उजाला, झज्जर 19.04.2023

क्रांतिकारी बारींद्र घोष की पुण्यतिथि मनाई

बारींद्र घोष ने बजाया था अंग्रेजी साम्राज्यवाद के खिलाफ बिगुल: डॉ. अमरदीप

संवाद न्यूज एजेंसी

सालहावास । आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के सयुंक्त तत्वावधान में महान क्रांतिकारी बारीन्द्र कुमार घोष की 64 वीं पुण्यतिथि के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम के संयोजक डॉ. अमरदीप ने बताया कि 5 जनवरी 1880 को लंदन में जन्में बारीन्द्र कुमार घोष ने भारत आकर अंग्रेजी साम्राज्यवाद के खिलाफ शुरू से ही बिगुल बजाया था। वे महान क्रांतिकारी अरविंद घोष के छोटे भाई थे एवं उनके क्रांतिकारी

राजकीय महाविद्यालय में कार्यक्रम का आयोजन

विचारों से काफी प्रभावित थे। उन्होंने भूपेन्द्र नाथ दत्त के साथ मिलकर 'युगांतर' नामक साप्ताहिक पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ किया और साथ ही युगांतर के नाम से एक क्रांतिकारी संगठन भी बनाया गया एवं इसने पूरे बंगाल में सर्वत्र क्रांति का बिगुल बजाया। बारीन्द्र कुमार घोष के द्वारा लिखी गई दूसरी पुस्तक 'वर्तमान रणनीति' बंगाल के क्रांतिकारियों की पाठ्यपुस्तक बन गई।

पकड़े गए क्रांतिकारियों पर 'अलीपुर बम केस' चलाया गया। बारीन्द्र घोष और अरविंद घोष 2 मई ,1908 को अन्य क्रांतिकारियों के साथ गिरफ्तार कर लिए गए। बारीन्द्र को आजीवन कारावास के रूप में उन्हें काले पानी की सजा दी गई और उन्हें अंडमान निकोबार में स्थित भयावह सेल्युलर जेल में भेज दिया गया जहां पर वह 1920 तक कैद में रहे। प्रथम विश्व युद्ध के उपरांत बारीन्द्र कुमार घोष को को रिहा कर दिया गया तत्पश्चात उन्होंने पत्रकारिता प्रारंभ की। उन्होंने अंग्रेजी और बांग्ला समाचार पत्रों के माध्यम से अपने विचारों से युवाओं को जागृत करते रहे। 18 अप्रैल 1959 को इस महान क्रांतिकारी और स्वतंत्रता सेनानी का आजाद भारत में निधन हुआ जिसके लिए उन्होंने अपना जीवन समर्पित कर दिया था। इस अवसर पर प्रोफेसर जितेंद्र इत्यादि उपस्थित रहे।

238. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 159th Birth Anniversary of Great Freedom Fighter Mahatma Hansraj on 19.04.2023 and delivered keynote address on "Role of Mahatma Hansraj in Spreading Awareness about Education in colonial period."

विश्वविद्यालय शिक्षकों के
मुख्य केंद्र होगी। कुलपति
विश्वविद्यालय के प्राध्याप
टीचिंग-लर्निंग के प्रतिमान

अमर उजाला, झज्जर 20.04.2023

दिया। डॉ पूनिया ने बताया कि प्रिंट
वातावरण, स्किल पासबुक,
बुक, साप्ताहिक आंकलन आदि के
यम से आधारभूत साक्षरता और

आयोजन

राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में शिक्षाविद महात्मा हंसराज की जयंती मनाई

शिक्षा के क्षेत्र में महात्मा हंसराज का अहम योगदान

संवाद न्यूज एजेंसी

साल्हावास। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में शिक्षाविद महात्मा हंसराज की 159 वीं जयंती के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के संयोजक डॉ अमरदीप ने कहा कि उन्नीसवीं शताब्दी के अंत में जिन महापुरुषों ने देश में शिक्षा व समाज-सुधार के क्षेत्र में काम शुरू किया, उनमें महात्मा हंसराज का नाम बहुत ऊंचा है।

कॉलेज में विशेष व्याख्यान का आयोजन किया

विद्यार्थियों को जानकारी देते डॉ अमरदीप। संवाद

उन्होंने कहा कि एक ओर जहां वह डीएवी शिक्षा संस्थाओं के संस्थापक थे। समाज सुधार के क्षेत्र में भी उनका योगदान कम नहीं था। उनका जन्म 19 अप्रैल 1864 को होशियारपुर के पास बजवाड़ा नामक स्थान पर हुआ था। 1885 में बी.ए. की परीक्षा पास की और पंजाब में उन्हें द्वितीय स्थान मिला। 1877 में आर्य समाज का प्रचार करते हुए स्वामी दयानंद सरस्वती लाहौर पहुंचे और वहां आर्य समाज की स्थापना की गई। स्वामी दयानंद की मृत्यु के पश्चात लाहौर के आर्य समाजियों ने उनकी स्मृति में दयानंद एंग्लो वैदिक, डी.ए.वी., कॉलेज व स्कूल खोलने का निश्चय किया, जहां पाश्चात्य शिक्षा के साथ-साथ पूर्वी ज्ञान और विशेषकर वेदों की शिक्षा दी जा सके। हंसराज ने इस महान कार्य के लिए अपना सम्पूर्ण जीवन न्यौछावर कर दिया और उन्होंने आर्य समाज, लाहौर, के प्रधान को चिट्ठी लिखी कि स्कूल खुलने पर वह अवैतनिक मुख्याध्यापक बनने के लिए तैयार हैं। इस पत्र ने आर्य समाज के कार्यकर्ताओं में नई जान फूंक दी। एक जून 1886 को आर्य समाज, लाहौर, के भवन में स्कूल खोल दिया गया। महात्मा हंसराजजी इसके अवैतनिक मुख्याध्यापक नियुक्त हुए। दो-तीन साल बाद ही स्कूल का नतीजा भी अन्य स्कूलों के मुकाबले अच्छा आने लगा। उन्होंने कॉलेज के आजीवन सदस्यों की योजना शुरू की।

239. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 138th Birth Anniversary of Great Freedom Fighter and Revolutionary on 20.04.2023 and delivered keynote address on "Revolutionary Movement in Bengal and Role of Ullaskar Dutta."

डाला गया
कार्यक्रम

अमर उजाला, झज्जर 21.04.2023

ा में प्रथम

बम बनाने में विशेषज्ञ थे क्रांतिकारी उल्लास्कर दत्ता : डॉ. अमरदीप

महान क्रांतिकारी उल्लास्कर दत्ता की 138वीं जयंती पर व्याख्यान देते अतिथि। संवाद

साल्हावास। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के सयुंक्त तत्वावधान में महान क्रांतिकारी और स्वतंत्रता सेनानी उल्लास्कर दत्ता की 138वीं जयंती के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम के संयोजक डॉ. अमरदीप ने कहा कि उल्लास्कर दत्ता एक राष्ट्रवादी और अनुशीलन समिति और बंगाल की जुगांतर से जुड़े क्रांतिकारी थे। उल्लास्कर का जन्म 16 अप्रैल 1885 में कलिकाचक गांव, वर्तमान बांग्लादेश, में हुआ था।

उन्होंने कहा कि भारत वापस आने पर उन्होंने क्रांतिकारी संगठन अनुशीलन समिति से जुड़ गये और बिपिन चंद्र पाल के व्यक्तित्व से बहुत प्रभावित हुए। उल्लास्कर ने विदेशी कपड़ों को त्याग दिया और पारंपरिक बंगाली पोशाक को अपनाया। इस कार्यक्रम में वाणिज्य प्रोफेसर मृणाल दहिया समेत अन्य लोग उपस्थित रहे। संवाद

240. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 173rd Birth Anniversary of Great Freedom Fighter and Social Reformer Professor Giani Ditt Singh on 21.04.2023 and delivered keynote address on "Great Educationalist and Social Reformer: Professor Giani Ditt Singh."

अमर उजाला, झज्जर 23.04.2023

ज्ञानी ने जनजागरण से मिटाया पाखंड

संवाद न्यूज एजेंसी

सालहावास। आजादी का अमृत महोत्सव शृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महान स्वतंत्रता सेनानी और समाज सुधारक ज्ञानी दित्त सिंह की 138वीं जयंती मनाई गई।

इस अवसर पर विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। वक्ताओं ने बताया ज्ञानी दित्त सिंह ने ज्ञानी ने जनजागरण से पाखंड मिटाने का काम किया।

कार्यक्रम के संयोजक डॉ. अमरदीप ने कहा कि ज्ञानी दित्त सिंह देश के प्रथम अनुसूचित जाति वर्ग से प्रोफेसर, महान दार्शनिक, महान चिंतक, सिख धर्म के आधुनिक पुनरोद्धारकों में से एक, पत्रकार, संपादक, पंजाबी भाषा के दार्शनिक व कवि थे। 38 से अधिक किताबों के धुरंधर और निर्भीक लेखक, खालसा कॉलेज अमृतसर के संस्थापक सदस्य, खालसा अखबार के जनप्रिय लेखक और संपादक भी थे।

ज्ञानी दित्त सिंह का जन्म 21 अप्रैल 1850 को पंजाब सूबे के जिला पटियाला के गांव कल्वड़ में हुआ था।

कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों को संबोधित करते वक्ता। प्रतिनि

241. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 165th Birth Anniversary of Great Social Reformer and Women Activist Pandita Ramabai on 24.04.2023 and delivered keynote address on "Rights of Women in Colonial India and Struggle of Pandita Ramabai."

अमर उजाला, चरखी दादरी 25.04.2023

सेमिनार बिरोहड़ राजकीय महाविद्यालय में मनाई गई स्वतंत्रता सेनानी पंडिता रामबाई की 165वीं जयंती

महिलाओं की स्थिति सुधारने के लिए रमाबाई ने किए प्रयास

संवाद न्यूज एजेंसी

चरखी दादरी। बिरोहड़ राजकीय महाविद्यालय में स्नातकोत्तर इतिहास एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महान क्रांतिकारी और स्वतंत्रता सेनानी पंडिता रमाबाई की 165वीं जयंती मनाई गई। इस मौके पर सेमिनार का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम के संयोजक डॉ. अमरदीप ने कहा कि पंडिता रमाबाई एक महान नारीवादी और समाज-सुधारक थीं। पंडिता रमाबाई का जन्म 23 अप्रैल 1858 को महाराष्ट्र के गनमाल गांव में हुआ था। तत्कालीन समय में समाज में लड़कियों की शिक्षा निषेध थी। उस दौर में रमाबाई को उनके पिता से संस्कृत की इतनी अच्छी शिक्षा मिली कि उन्हें 20 साल की उम्र में ही संस्कृत के लगभग 20 हजार श्लोक कंठस्थ हो गए।

साथ ही उन्हें कन्नड़, मराठी, बांग्ला और हिब्रू जैसी सात भाषाओं का ज्ञान था। अमरदीप ने बताया कि पंडिता रमाबाई ने महिलाओं की स्थिति सुधारने के लिए अनके कार्य किए। कार्यक्रम में प्रोफेसर पवन कुमार और अजय सिंह भी उपस्थित रहे।

बिरोहड़ राजकीय कॉलेज में छात्राओं को संबोधित करते हुए सहायक प्रोफेसर। संवाद

भक्तों ने मंच व ... ानित किया और उन्हें
प्रबंध किया गया थ

अमर उजाला, झज्जर, 25.04.2023

आयोजन राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में 165वीं जयंती पर प्रवक्ताओं ने दिया व्याख्यान

महान समाज सुधारक थी पंडिता रमाबाई

संवाद न्यूज एजेंसी

साल्हावास । राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के सयुंक्त तत्वावधान में महान क्रांतिकारी और स्वतंत्रता सेनानी पंडिता रमाबाई की 165 वीं जयंती मनाई गई।

इस मौके पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के संयोजक डॉ अमरदीप ने कहा कि पंडिता रमाबाई एक महान नारीवादी और समाज-सुधारक थी। पंडिता रमाबाई का जन्म 23 अप्रैल 1858 को महाराष्ट्र के गनमाल गांव में हुआ था। उनके पिता अनंत शास्त्री संस्कृत विद्वान और शिक्षक थे और अपनी आजीविका के लिए मंदिरों में पुराण आदि का पाठ सुनाया करते थे।

वह खुद भी एक समाज-सुधारक थे और लड़कियों को शिक्षा देने में रूची रखते थे। तत्कालीन समय में समाज में लड़कियों की शिक्षा निषेध थी और अपनी पत्नी लक्ष्मीबाई को संस्कृत सिखाने की वजह से समाज ने उन्हें त्याग दिया था और गांव छोड़कर जंगलों में भटकना पड़ा और वहीं जंगलों में रमाबाई का जन्म हुआ।

स्वतंत्रता सेनानी पंडिता रमाबाई की 165 वीं जयंती पर व्याख्यान देते प्रवक्ता। संवाद

रमाबाई को उनके पिता से संस्कृत आदि की इतनी अच्छी शिक्षा मिली थीं कि उन्हें 20 साल की उम्र में ही संस्कृत के लगभग 20 हजार श्लोक रटे हुए थे। पूना में उन्होंने 'आर्य महिला समाज' की स्थापना की और लड़कियों को पढ़ाना शुरू किया। यह संस्था बाल विवाह रोकने के लिए भी काम करती थी।

1882 में ब्रिटिश सरकार ने भारत में शिक्षा के लिए हंटर कमीशन गठित किया तो रमाबाई ने महिलाओं की शिक्षा के लिए अनेक सुझाव दिया।

242. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 129th Birth Anniversary of Great Freedom Fighter Ammu Swaminathan on 01.05.2023 and delivered keynote address on "Role of Ammu Swaminathan and Freedom Struggle Movement in Kerala."

सभा के सचिव
कामगार यूनियन के
मील निर्मला आदि

अमर उजाला, झज्जर 02.05.2023

ब उनसे मजदूर
संवाद

अम्मू स्वामीनाथन की जयंती पर पौधरोपण किया

राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के इतिहास विभाग ने किया आयोजन

संवाद न्यूज एजेंसी

साल्हावास। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के सयुंक्त तें वावधान में महान स्वतंत्रता सेनानी अम्मू स्वामीनाथन की 129 वीं जयंती के अवसर पर पौधरोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

इस अवसर पर डॉ. अमरदीप जितेन्द्र, पवन कुमार, दीपक इत्यादि द्वारा वृक्षारोपण किया गया। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. अमरदीप ने कहा कि अम्मू स्वामीनाथन संविधान सभा में महिलाओं के अधिकार, उनकी समानता और लैंगिक न्याय की जबरस्त पक्षधर थी। सविंधान सभा में कुल 15 महिलाएं थी जिनमे एक अम्मू स्वामीनाथन थी। अम्मू का जन्म 1894 में केरल के पलक्कड़ जिले में हुआ था।

उस जमाने में घर से दूर केवल लड़कों को पढ़ने भेजा जाता था, इसलिए अम्मू स्कूल नहीं जा पाई। बचपन में ही अम्मू के पिता ने स्वामीनाथन नाम के लड़के की प्रतिभा को देखते हुए उनकी मदद की थी। जब स्वामीनाथन उच्च शिक्षा पूरी करके वापस आया तो अम्मू के पिता की मृत्यु हो चुकी थी। फिर डॉ. स्वामीनाथन ने अम्मू से शादी का प्रस्ताव रखा तो शर्त के रूप में अम्मू ने उच्च शिक्षा प्राप्त करने की मांग रखी जो स्वीकृत तो हो गई परन्तु इस अंतरजातीय विवाह को स्वामीनाथन के परिवार और समाज ने स्वीकार नहीं किया क्योंकि उस जमाने में किसी ब्राह्मण की शादी नायर महिला से नहीं होती थी।

स्वामीनाथन संबंध जैसी प्रथा के सख्त विरोधी थे।1942 में भारत छोड़ो आंदोलन में सक्रिय भागीदार होने की वजह से उन्हें एक साल के लिए वेल्लोर जेल भी जाना पड़ा था।

अम्मू स्वामीनाथन ने भीमराव आंबेडकर के साथ मिलकर संविधान का ड्राफ्ट तैयार करने में भी अहम भूमिका निभाई।

उन्होंने संविधान में महिलाओं को पुरुषों के बराबर अधिकार देने की बात प्रमुखता से रखी। इस अवसर पर प्रोफेसर पवन कुमार, जितेन्द्र, दीपक इत्यादि उपस्थित रहे।

अम्मू स्वामीनाथन की 129 वीं जयंती के अवसर पर पौधरोपण करते शिक्षक। संवाद

243. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 127th Birth Anniversary of Great Freedom Fighter V.K. Krishanamenon on 03.05.2023 and delivered keynote address on "Role of V.K. Krishanamenon in Freedom Struggle of India."

सांसद प्रधान धर्मवीर सिंह, कोषाध्यक्ष मांगराम ने विश्वविद्यालय के कुलपति का अ

Amar Ujala, Charkhi Dadri 04.05.2023

वीके कृष्णमेनन की जयंती पर किया पौधरोपण

चरखी दादरी। बिरोहड़ राजकीय कॉलेज में स्नातकोत्तर इतिहास एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में महान स्वतंत्रता सेनानी वीके कृष्ण मेनन की 127वीं जयंती मनाई गई। इस अवसर पर पौधरोपण भी किया गया। इस दौरान डॉ. अमरदीप, पवन कुमार, दीपक, आईसीआईसीआई बैंक के मैनेजर प्रदीप कुमार ने पौधा लगाया। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. अमरदीप ने कहा कि वीके कृष्ण मेनन ने लंदन में भारत की स्वतंत्रता के लिए इंडिया लीग की स्थापना की थी। उन्होंने लंदन में इंडिया लीग बनाई थी। इंडिया लीग के सचिव के तौर पर उन्होंने ब्रिटिश संसद और आम जनमानस के मन में भारत की स्वाधीनता के आंदोलन के पक्ष में माहौल बनाने का प्रयत्न किया। 1947 में भारत को स्वतंत्रता मिलने के बाद मेनन को युनाइटेड किंगडम में भारत का उच्चायुक्त नियुक्त किया गया था। संवाद

244. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 144th Birth Anniversary of Great Freedom Fighter and Social Reformer Swami Achhutanand 'Harihar' on 01.05.2023 and delivered keynote address on "Indian Navajagaran and Role of Swami Achhutanand."

अमर उजाला, 05.05.2023
चरखी दादरी, हरियाणा

समाज सुधारक स्वामी अछूतानंद के जीवन पर डाला प्रकाश

चरखी दादरी। आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में महान स्वतंत्रता सेनानी एवं समाज सुधारक स्वामी अछूतानंद हरिहर की 144 वीं जयंती के अवसर पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के संयोजक एवं मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप रहे।

उन्होंने कहा कि स्वामी अछूतानंद हरिहर ने औपनिवेशिक काल में भारतीय नवजागरण आंदोलन को नई दिशा दी और राष्ट्रीयता का संचार करने में विशेष योगदान दिया। उन्होंने समाज के प्रत्येक वर्ग की राष्ट्र निर्माण में भूमिका को उकेरा। 1922 में आदि हिंदू आंदोलन खड़ा करके समाज में परिवर्तन की लहर को जन्म दिया। कार्यक्रम में प्रोफेसर जितेंद्र, पवन कुमार, राजेश कुमार आदि उपस्थित रहे। संवाद

जसबीर
संजीव,

अमर उजाला, 05.05.2023 झज्जर, हरियाणा

स्वामी अछूतानंद ने डाली शिक्षित भारत की नींव

साल्हावास । राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के तत्वावधान में महान स्वतंत्रता सेनानी एवं समाज सुधारक स्वामी अछुतानंद हरिहर की 144वीं जयंती के अवसर पर आयोजित किया गया। कार्यक्रम से संयोजक एवं मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप ने कहा कि स्वामी अछुतानंद हरिहर ने औपनिवेशिक काल में भारतीय नवजागरण आन्दोलन को नई दिशा दी और राष्ट्रीयता का संचार करने में विशेष योगदान दिया। 1879 में सयुंक्त प्रान्त में जन्में स्वामी अछुतानंद ने 1913 में उत्तर भारत की पहली दलित द्वारा रचित पुस्तक ''हरिहर भजन माला'' पुस्तक के माध्यम से उन्होंने समाज के प्रत्येक वर्ग की राष्ट्र निर्माण में भूमिका को उकेरा। 1922 में आदि हिन्दू आन्दोलन खड़ा करके समाज में परिवर्तन की लहर को जन्म दिया। मौके पर प्रोफेसर जितेंद्र, पवन कुमार, राजेश कुमार इत्यादि उपस्थित रहे। संवाद

245. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 77th Death Anniversary of Great Freedom Fighter Bhulabhai Desai on 08.05.2023 and delivered keynote address on "Great leader and Savior: Bhulabhai Desai."

दैनिक जागरण, चरखी दादरी 09.05.2023

सतन
के ए
सरक

उठाया

बिरोहड़ के सरकारी कालेज में स्वतंत्रता सेनानी भूलाभाई देसाई को किया याद

जागरण संवाददाता, चरखी दादरी : आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में सोमवार को स्वतंत्रता सेनानी भूलाभाई देसाई की 77वीं पुण्यतिथि पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम के संयोजक डा. अमरदीप ने कहा कि आजाद हिंद फौज के सेनापति शहनवाज, ढिल्लन तथा सहगल पर राजद्रोह के मुकदमे में सैनिकों का पक्ष समर्थन भूलाभाई देसाई ने जिस कुशलता तथा योग्यता से किया था उससे उनकी कीर्ति देश में ही नहीं बल्कि विदेश में भी फैल गई थी।

कुशाग्र बुद्धि के स्वामी भूलाभाई देसाई का जन्म 1877 में गुजरात के वलसाड़ में हुआ था। उनके पिता सरकारी वकील थे। 1895 में उन्होंने मैट्रिक की परीक्षा पास की और इस परीक्षा में उन्होंने अपने स्कूल में प्रथम स्थान हासिल किया।

गांव बिरोहड़ के सरकारी कालेज में स्वतंत्रता सेनानी भूलाभाई देसाई के बारे में बताते डा. अमरदीप। ● विज्ञप्ति।

1928 में बारडोली सत्याग्रह के बाद किसानों का पक्ष रखने के दौरान वे कांग्रेस पार्टी के संपर्क में आए और उन्होंने अपनी बुद्धिमत्ता से किसानों का पक्ष रखा और आंदोलन में सफलता प्राप्त की। 1930 में सविनय अवज्ञा आंदोलन में भाग लेकर उन्होंने लोगों को संगठित कर विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करने के लिए प्रेरित किया।

इस दौरान वे गिरफ्तार हुए लेकिन 1932 में खराब स्वास्थ्य के कारण उन्हें जेल से रिहा कर दिया गया। छह मई 1946 में इनका निधन हो गया। इस अवसर पर डा. प्रदीप कुमार और प्रो. पवन कुमार ने भी अपने विचार रखे।

246. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 166th Anniversary of Great War of Independence: 1857on 09.05.2023 and delivered keynote address on “Rise of Great War of Independence: 1857.”

अमर उजाला, झज्जर 10.05.2023

त्रिवेणी लगाकर दिया पर्यावरण संरक्षण का संदेश

राजकीय कॉलेज बिरोहड़ में स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों को किया याद

संवाद न्यूज एजेंसी

साल्हावास। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में 1857 के महान संग्राम की 166 वीं वर्षगांठ के अवसर पर त्रिवेणी लगाई। कार्यक्रम के संयोजक डॉ अमरदीप ने कहा कि वर्तमान दौर में जलवायु परिवर्तन एक गंभीर मुद्दा बना हुआ है जिसके कारण मानव जीवन को गंभीर खतरा पैदा हो गया है। त्रिवेणी लगाकर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया।

दूसरे सत्र में जिसमे मैं 1857 के महान संग्राम की 166 वीं वर्षगांठ के अवसर पर महान देशभक्तों एवं बलिदानियों को याद किया गया। उन्होंने 1857 की महान क्रांति के बारे में जानकारी दी। बताया कि हरियाणा में रेवाड़ी, झज्जर, नाहड़ इत्यादि क्षेत्रों में इस क्रांति में महत्वपूर्ण योगदान दिया। क्रांति का 20 वीं शताब्दी के भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन पर विशेष प्रभाव पड़ा और सबसे ज्यादा क्रांतिकारी आंदोलन को जोरदार तरीके से प्रभावित किया। यह महान क्रांति भारत में पहली बार के बड़े क्षेत्र पर अंग्रेजी सत्ता को समाप्त करने का प्रयास करती है।

इस क्रांति के नायकों बहादुरशाह जफर, कुंवरसिंह, नाना साहेब, तांत्या टोपे, बख्त खान, लक्ष्मीबाई, झलकारी बाई, मातादीन हेला, मंगल पांडे, उदा देवी, राव तुला राम इत्यादि के जीवन और संघर्ष ने आने वाले आजादी के आंदोलन की दिशा तय की। इस अवसर पर इतिहास के प्रोफेसर जितेंद्र, पवन कुमार सहित कॉलेज के स्टाफ इत्यादि का सहयोग रहा।

राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में त्रिवेणी लगाते शिक्षक। संवाद

महाराणा प्रताप व गोपाल कृष्ण गोखले को याद किया

बादली। गांव गुभाना में लोकहित पुस्तकालय में लोकहित समिति ने महाराणा प्रताप और गोपाल कृष्ण गोखले की जयंती पर उन्हें याद करते हुए पुष्प अर्पित किए समिति अध्यक्ष नरेश कौशिक ने महाराणा प्रताप के जीवन पर प्रकाश डालते हुए बताया कि उनका जन्म 9 मई 1540 को मेवाड़ के उदयपुर में हुआ वे सिसोदिया राजपूत वंश के राजा थे जिनका नाम इतिहास में वीरता के लिए अमर है। उन्होंने अपने जीवन काल में कभी मुगलों की अधीनता स्वीकार नहीं की। बल्कि मुगलों के साथ कई बार युद्ध करते हुए उन्हें मुंह तोड़ जवाब दिया और हराया युद्ध में हमेशा उनके साथ उनका सबसे प्रिय घोड़ा जिसका नाम चेतक था वह रहता था और हमेशा युद्ध में उनका साथ देता था। इसके साथ ही नरेश कौशिक ने गोपाल कृष्ण गोखले के जीवन पर प्रकाश डालते हुए बताया कि गोपाल कृष्ण गोखले का जन्म 9 मई 1866 को महाराष्ट्र कोल्हापुर में हुआ था। भारतीय स्वतंत्रता सेनानी थे। संवाद

अमर उजाला, चरखी दादरी 10.05.2023

त्रिवेणी लगाकर पर्यावरण संरक्षण का संकल्प लिया

चरखी दादरी। बिरोहड़ स्थित राजकीय महाविद्यालय में इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने अपने 42वें जन्मदिन और 1857 का संग्राम की 166वीं वर्षगांठ पर त्रिवेणी रोपित की। त्रिवेणी रोपण में प्रोफेसर पवन कुमार, छात्र दीपक, प्रवीण कुमार और पवन कुमार का सहयोग रहा। इस दौरान सभी से पर्यावरण संरक्षण का आह्वान किया गया। छात्रों और शिक्षकों ने अंत में पर्यावरण संरक्षण का संकल्प लिया। संवाद

247. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 109th Birth Anniversary of Great Freedom Fighter and Revolutionary Leader of Azad Hind FaujCaptain Mohan Singh on 13.05.2023 and delivered keynote address on "The Foundation of Azad Hind Fauj and Role of Captain Mohan Singh."

हरीश ढाका, जयप्र
राजस्थानी, सतबीर
मौजूद रहे।

र गर्व करना

अमर उजाला, झज्जर 14.05.2023

आजाद हिंद फौज के अग्रणी रहे मोहन सिंह

स्वतंत्रता सेनानी कैप्टन मोहन सिंह की जयंती पर कार्यक्रम का आयोजन

राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में स्वतंत्रता सेनानी कैप्टन मोहन सिंह की जयंती पर व्याख्यान देते वक्ता। संवाद

संवाद न्यूज एजेंसी

साल्हावास। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के सयुंक्त तत्वावधान में महान स्वतंत्रता सेनानी कैप्टन मोहन सिंह की 109वीं जयंती के अवसर पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम के संयोजक डॉ अमरदीप ने कहा कि दूसरे विश्व युद्ध में बंदी बनाए गए सैनिकों को एकत्र कर जापानी मदद से ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ जंग छेड़ने की योजना पंजाब के जनरल मोहन सिंह की थी।

मोहन सिंह में यह विचार गदर आंदोलन से आया था, जिसमें विदेश में रहने वाले हजारों लोग हथियार के बल पर अंग्रेजों को देश से भगाने का सपना सन 1910 में देख रहे थे। उन्होंने 15 दिसंबर 1941 को आजाद हिंद फौज की स्थापना की और बाद में 21 अक्तूबर 1943 को उन्होंने इस फौज का नेतृत्व सुभाष चंद्र बोस को सौंप दिया। आजाद हिन्द फौज के पहले प्रभाग में लगभग 16,000 पुरुष शामिल थे। रास बिहारी बोस एवं मोहन सिंह द्वारा आजाद हिन्द फौज की संयुक्त रूप से सलामी ली गयी। बाद में जापानी आजाद हिन्द फौज को अपने अधीन दर्जा देने लगा जिसका पुरजोर विरोध जनरल मोहन सिंह ने किया और बाद में उन्हें जापानी सेना द्वारा गिरफ्तार कर लिया गया। नेताजी सुभाष चंद बोस के कमान संभालने के बाद मोहन सिंह न केवल रिहा हुए, बल्कि आजाद हिन्द फौज के अग्रणी रहे। इस अवसर पर प्रोफेसर जितेन्द्र, पवन कुमार इत्यादि उपस्थित रहे।

248. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 116th Birth Anniversary of Great Freedom Fighter and Revolutionary Sukhdev Thapar on 15.05.2023 and delivered keynote address on "Forgotten Hero of Freedom Struggle: Sukhdev Thapar."

अमर उजाला, चरखी दादरी, 16.05.2023

विद्यार्थियों ने क्रांतिकारी सुखदेव को किया नमन

सुखदेव की जयंती पर बिरोहड़ राजकीय कॉलेज में आयोजित किया गया कार्यक्रम

संवाद न्यूज एजेंसी

चरखी दादरी। बिरोहड़ स्थित राजकीय महाविद्यालय में स्नातकोत्तर इतिहास विभाग व हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में क्रांतिकारी सुखदेव की 116वीं जयंती पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्राचार्य डॉ. रणवीर सिंह आर्य के निर्देशानुसार कार्यक्रम आयोजित किया गया।

क्रांतिकारी सुखदेव की 116वीं जयंती पर कार्यक्रम आयोजित

इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. अमरदीप ने बताया कि सुखदेव ने औपनिवेशिक भारत में क्रांतिकारी आंदोलन को नई दिशा दी थी। 15 मई 1907 में लुधियाना में सुखदेव का जन्म हुआ और 13 वर्ष की आयु में ही असहयोग आंदोलन से जुड़ गए। साइमन कमिशन के विरोध में लाठीचार्ज के दौरान लाला लाजपतराय की मृत्यु ने संपूर्ण भारत को झकझोर दिया था इसके बाद क्रांतिकारियों ने सांडर्स की हत्या कर लाला लाजपतराय की मृत्यु का बदला लिया। दिल्ली असेंबली बम विस्फोट घटना से अंग्रेजी सरकार बौखला गई थी और बाद में लाहौर षड्यंत्र मुकदमे में उन्हें गिरफ्तार किया गया। इसके बाद अंग्रेजी हुकूमत ने सुखदेव और उसके साथियों को 23 मार्च 1931 को फांसी दे दी। कार्यक्रम में डॉ. नरेंद्र सिंह, प्रोफेसर पवन कुमार, जितेंद्र, डॉ. राजपालगुलिया और अजय सिंह आदि मौजूद रहे।

बिरोहड़ राजकीय महाविद्यालय में विद्यार्थियों को संबोधित करते डॉ. अमरदीप। विज्ञप्ति

मोनिका, अंतिम, आंचल, आरती व स्वीटी की टीम रही प्रथम

झोझूकलां। कस्बा स्थित महिला महाविद्यालय में गणित विभाग की ओर से मॉडल बनाओ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमें मोनिका, अंतिम, आंचल, आरती व स्वीटी के ग्रुप ने प्रथम स्थान हासिल किया। प्रियंका, शुभम, रेनू व प्रियंका के ग्रुप ने द्वितीय और निकिता, प्रीती, ममता, तमन्ना व अंतिम के ग्रुप ने तृतीय स्थान हासिल किया। डॉ. मंजू सांगवान, पूनम व नीलम ने निर्णायक मंडल की भूमिका निभाई। गणित विभागाध्यक्ष डॉ. शर्मिला कुमारी ने कहा कि इन प्रतियोगिताओं से विद्यार्थियों में गणित के प्रति रूचि बढ़ेगी। प्राचार्य डॉ. अनूप सिंह सांगवान व प्रधान धर्मवीर सिंह ने विजेताओं बधाई दी। संवाद

झोझूकलां महिला महाविद्यालय में मॉडल दिखातीं छात्राएं। विज्ञप्ति

अयान सिंह ने 5 किलोमी ... सुनील कुमार, परवीन
में दूसरा स्थान, प्रदीप सां ... शिल्पा, सचित, सिद्धार्थ
दूसरा स्थान, सुरेंद्र दलाल ... तापूर्वक दौड़ पूरी की।

अमर उजाला, झज्जर, 16.05.2023

क्रांतिकारी सुखदेव को किया नमन

राजकीय कॉलेज बिरोहड़ में 116वीं जयंती पर व्याख्यान का आयोजन

संवाद न्यूज एजेंसी

साल्हावास । राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के सयुंक्त तत्वावधान में महान स्वतंत्रता एवं क्रांतिकारी सुखदेव की 116 वीं जयंती पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

इस कार्यक्रम के संयोजक एंव इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ अमरदीप ने कहा कि सुखदेव ने औपनिवेशिक भारत में क्रांतिकारी आंदोलन को नई दिशा दी। 15 मई 1907 में लुधियाना में जन्मे सुखदेव बचपन से ही आजादी के आंदोलन में कूद पड़े। 13 वर्ष की आयु में ही असहयोग आन्दोलन में भाग लिया7 जलियांवालां भाग नरसंहार की घटना ने किशोर सुखदेव के मस्तिष्क पटल पर गहरी छाप छोड़ी और अंग्रेजी दासता को बेड़ियों को तोड़ने का प्रण किया । सुखदेव, भगत सिंह और चंद्रशेखर

बिरोहड कॉलेज में व्याख्यान देते डॉ. अमरदीप सिंह। विज्ञप्ति

जलियांवाला बाग कांड के बारे में जानकारी दी

आजाद जैसे सरीखे क्रांतिकारियों सांडर्स की हत्या करके लाला लाजपत राय की मृत्यु का बदला लेकर अंग्रेजी हुकूमत को बता दिया था अब भारतीय उनके जुल्म को चुपचाप नही सहेंगे । 8 अप्रैल 1929 की दिल्ली असेंबली बम विस्फोट परिघटना में सबसे पहले सुखदेव के नाम पर विचार किया गया था। इस अवसर पर डॉ नरेंद्र सिंह, प्रोफेसर पवन कुमार, जितेन्द्र, डा. राजपाल गुलिया और अजय सिंह इत्यादि उपस्थित रहे।

249. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 93rd Shahidi Diwas of Great Freedom Fighter and Revolutioanry Hari Gopal on 16.05.2023 and delivered keynote address on “Revolutionary Hari Gopal and His Contribution in Freedom Struggle Movement in Bengal.”

की ओर स... ...ार व सरिता
संयुक्त रूप

अमर उजाला, झज्जर, 17.05.2023

14 साल की उम्र में शहीद हो गए थे हरिगोपाल : अमरदीप

संवाद न्यूज एजेंसी

साल्हावास । राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के सयुंक्त तत्वावधान में महान स्वतंत्रता एवं क्रांतिकारी हरिगोपाल का 93 वीं शहीदी दिवस मनाया गया। इसमें कार्यक्रम संयोजक एवम इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ अमरदीप ने कहा कि महान क्रांतिकारी हरिगोपाल मात्र चौदह वर्ष की आयु में शहीद हुए थे।

अविभाजित बंगाल के छत्तग्राम के धोरला गाँव के प्राणकृष्ण बाल के पुत्र हरिगोपाल बॉल का जन्म 1916 में हुआ था। प्रारंभ से ही वे क्रांतिकारियों के साथ रहते थे। हरिगोपाल तब छत्तग्राम म्युनिसिपल स्कूल में नौवीं कक्षा का छात्र था। अपने साहसी स्वभाव के लिए जाने जाने वाले, उन्हें उनके पड़ोसियों और खेलने वालों द्वारा टाइगर (बोलचाल की बोली में टेग्रा) कहा जाता था। लोकनाथ बॉल के छोटे भाई, मास्टरदा सूर्य सेन के करीबी अनुयायी, हरिगोपाल एक उत्साही के रूप में क्रांतिकारी गुप्त समूह से जुड़े थे और इसके शारीरिक व्यायाम कार्यक्रम में भी भाग लिया और लाठी और चाकू के अभ्यास की अनिवार्यता सीखी। सरकारी हथियारों की लूटपाट के बाद हरिगोपाल व् अन्य क्रांतिकारियों ने हथियारों को सुरक्षित स्थान पर छुपा दिया था।

रक्षा की अग्रिम पंक्ति पर तैनात, हरिगोपाल और अन्य क्रांतिकारियों ने करारा जवाब दिया और इसी दौरान एक एक गोली हरिगोपाल के सीने में लगी और तत्पश्चात वे वही शहीद हो गये। चटगांव के क्रांतिकारियों और ब्रिटिश हुकूमत के बीच होने वाले इस जलालाबाद युद्ध के पहले शहीद हरिगोपाल थे। मात्र 14 साल की आयु में शहादत पाने वाले हरिगोपाल तब नौंवी कक्षा के छात्र थे और उस उम्र में उनकी देशभक्ति की भावना को आज भी हमें प्रेरणा देती है। इस कार्यक्रम में प्रोफेसर जितेद्र, पवन कुमार उपस्थित रहे।

250. Dr. Amardeep worked as Convener and organised a special programme on 170th Birth Anniversary of Great Freedom Fighter and Social Reformer Behramji Merwanji Malabari on 01.05.2023 and delivered keynote address on “Behramji Merwanji Malabari: His Contribution in the Upliftment of Women during Colonial Period.”

प्रतियोगिता
लेने वाले
प्रमाणपत्रों
खिलाड़ियों
टीम में जगह मिले
की ओर से सभी
गई हैं। संवाद

प्रधान
प्रवीर
लाल,
रविंद्र
ज, कोच नवीन
शवाल और पदक
बधाई दी। संवाद

आज़ादी के अमृत महोत्सव का 250 वां कार्यक्रम

अमर उजाला, झज्जर 20.05.2023

कार्यक्रम राजकीय कॉलेज बिरोहड़ में समाज सुधारक की जयंती पर व्याख्यान का आयोजन

बाल विवाह के विरोधी थे स्वतंत्रता सेनानी बेहराम

संवाद न्यूज एजेंसी

साल्हावास। राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में महान समाज सुधारक एवं स्वतंत्रता सेनानी बेहराम मालाबारी की 170 वीं जयंती मनाई गई। इस अवसर पर व्याख्यान करते हुए डॉ अमरदीप, इतिहास विभागाध्यक्ष ने कहा कि भारत में महिलाओं के अधिकारों के लिए बेहराम मालाबारी ने उल्लेखनीय भूमिका निभाई थी। बाल विवाह के खिलाफ आंदोलन चलाया।

राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ में व्याख्यान देते डॉ. अमरदीप। संवाद

उन्होंने बताया कि बेहराम मालाबारी का जन्म गुजरात के बड़ौदा में 18 मई 1853 को हुआ था। उनकी आरंभिक शिक्षा सूरत के आयरिश प्रेस्बिटेरियन मिशन स्कूल में पूर्ण हुई। यहीं के एक केमिस्ट मेरवानजी नानाभाई मालाबारी ने बेहराम को गोद ले लिया। वे चंदन और मसालों का व्यापार भी करते थे, इस कारण इनके नाम के साथ मालाबारी जुड़ गया। उन्होंने जाति प्रथा व बाल विवाह का जमकर विरोध किया तथा विधवाओं के पुनर्विवाह की वकालत की। सभी के लिए बिना उन्होंने भेदभाव के समानता की श्रेणी एक तुल्य होने पर बल दिया।

बाल विवाह के खिलाफ जोरदार मुहिम चलाते उन्होंने वैवाहिक आयु अधिनियम, 1891 को पास करवाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस अधिनियम से पहले लड़कियों की शादी की आयु 10 वर्ष थी, लेकिन नये अधिनियम के पास होने से 12 वर्ष के नीचे के लड़की की शादी की मनाही थी और इस प्रकार शिशु विवाह व विधवा उत्पीड़न को एक शक्तिशाली दंड विधान सामने आया जिसके अंतर्गत बाल विवाह और विधवाओं पर अत्याचार को सहन नहीं किया जाएगा।

इस दिशा में उन्होंने सेवा सदन नाम संस्था की शुरुआत भी की। सेवा को समर्पित उनकी दूसरी संस्था शिमला के धर्मपुर में कंजंपटिव होम सोसायटी थी। इस विशेष कार्यक्रम में प्रोफेसर जितेंद्र, पवन कुमार, डॉ नरेंद्र सिंह इत्यादि उपस्थित रहे।

आज़ादी का अमृत महोत्सव का 250 वां कार्यक्रम

अमर उजाला, चरखी दादरी 20.05.2023

विद्यार्थियों को स्वतंत्रता सेनानी बेहराम मेरवान के बारे में बताया

राजकीय कॉलेज में मालाबारी के बारे में विद्यार्थियों को जानकारी देते डॉ. अमरदीप। विज्ञप्ति

संवाद न्यूज एजेंसी

चरखी दादरी। आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत राजकीय महाविद्यालय बिरोहड़ के स्नातकोत्तर इतिहास विभाग एवं हरियाणा इतिहास कांग्रेस के संयुक्त तत्वावधान में 250वां कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें महान समाज सुधारक एवं स्वतंत्रता सेनानी बेहराम मेरवान मालाबारी की 170वीं जयंती मनाई गई।

इस कार्यक्रम के संयोजक एवं मुख्य वक्ता डॉ. अमरदीप ने कहा कि औपनिवेशिक भारत में महिलाओं के अधिकारों के लिए बेहराम मालाबारी ने उल्लेखनीय भूमिका निभाई थी। भारत स्त्री शिक्षा की शुरुआत में अहम भूमिका निभाने वाले मेहराम मालाबारी का जन्म गुजरात के बडौदा में 18 मई 1853 को हुआ था। उन्होंने जाति प्रथा तथा बाल विवाह का जमकर विरोध किया तथा विधवाओं के पुनर्विवाह की वकालत की।

आज़ादी के अमृत महोत्सव का 250 वां कार्यक्रम
दैनिक जागरण, चरखी दादरी 20.05.2023

बाल विवाह के खिलाफ सशक्त आंदोलन चलाया बेहराम मालाबारी ने : डा. अमरदीप

जागरण संवाददाता, चरखी दादरी: आजादी का अमृत महोत्सव श्रृंखला के तहत गांव बिरोहड़ के राजकीय महाविद्यालय में स्वतंत्रता सेनानी बेहराम मेरवान मालाबारी की 170 वीं जयंती के अवसर पर एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

इस कार्यक्रम के संयोजक, मुख्य वक्ता डा. अमरदीप, इतिहास विभागाध्यक्ष ने कहा कि औपनिवेशिक भारत में महिलाओं के अधिकारों के लिए बेहराम मालाबारी ने उल्लेखनीय भूमिका निभाई थी। भारत स्त्री शिक्षा की शुरुआत में अहम भूमिका निभाने वाले मेहराम मालाबारी का जन्म गुजरात के बडौदा में 18 मई 1853 को हुआ था।

उनकी आरंभिक शिक्षा सूरत के

गांव बिरोहड़ के सरकारी [illegible] वक्ता डा. अमरदीप। • [illegible]

आयरिश प्रेस्बिटेरियन [illegible] में पूरी हुई। यहीं के एक [illegible] मेरवान नानाभाई [illegible] निसंतान होने के [illegible] गोद ले लिया।

ये चंदन और मसालों [illegible] भी करते थे, इस कारण इनके [illegible] के साथ मालाबारी जुड़ गया। [illegible]

[illegible]